विक्रम संवत् 2081 ▪ कार्तिक मास/अगहन (मार्गशीर्ष)(09) ▪ 01 नवम्बर 2024 ▪ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

# चैतेति

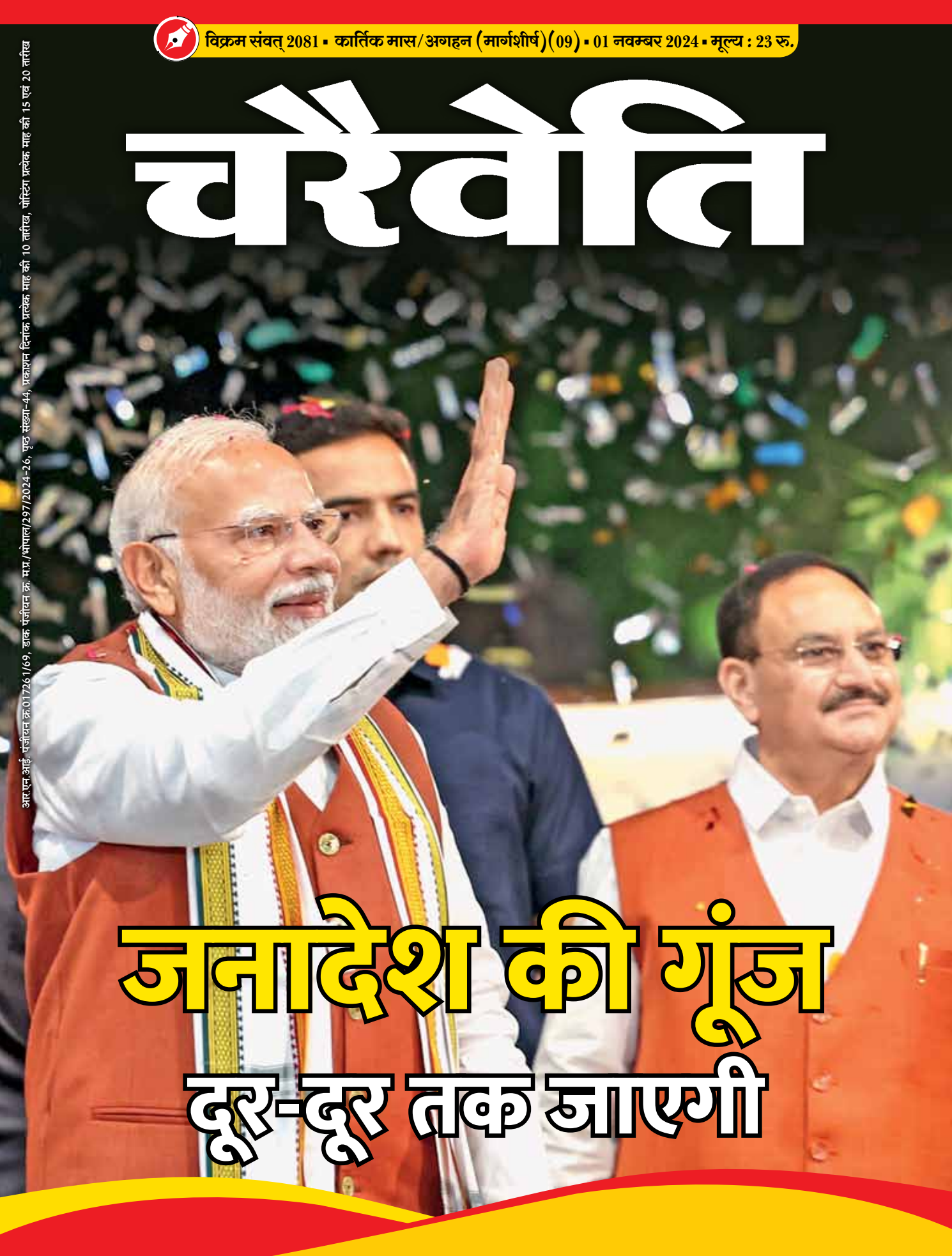

# जनादेश की गूंज दूर-दूर तक जाएगी

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गांधी जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हरियाणा सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सक्रिय सदस्यता अभियान की शुरुआत की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान में भाग लिया।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लाल किले में विजयादशमी समारोह में शामिल हुए।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाओस में रामायण के क्षेत्रीय रूपांतरण को देखा।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता देने के उत्सव में भाग लिया।

# अनुक्रमणिका


**संपादकीय** • संजय गोविन्द खोचे 04

- जनादेश की गूंज

**कवर स्टोरी** • 05

- जनादेश की गूंज दूर-दूर तक जाएगी- पीएम मोदी

- **सदस्यता-अभियान** 09
  - मप्र में डेढ़ करोड़ सदस्यता का लक्ष्य पार - विष्णुदत्त शर्मा...
- **विकास की राह पर भारत** 11
  - मजबूत आर्थिक बुनियाद से तेज विकास की राह पर भारत ...
- **सदस्यता अभियान** 14
  - संगठन के साथ मिलकर भाजपा सरकार जनहितैषी कार्य कर...
- **दीपावली उत्सव** 15
  - हम दुश्मन की बातों पर नहीं, हमारी सेनाओं के संकल्पों...
- **सशक्त महिला शक्ति** 18
  - प्रधानमंत्री जी सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए कार्य कर...
- **राष्ट्रीय एकता दिवस** 19
  - व्यवहार में यथार्थवादी और ध्येय में राष्ट्रवादी थे सरदार पटेल
- **आई एम बीजेपी फ्यूचर फोर्स** 23
  - विकसित भारत के निर्माण में उद्यमी, प्रोफेशनल्स बने...
- **विजयादशमी उत्सव** 24
  - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अपने कार्य के 100वें वर्ष में प्रवेश...
- **आलेख: डॉ. मोहन यादव** 29
  - विकसित मध्यप्रदेश और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के...
- **आलेख: हितानंद शर्मा** 31
  - आजादी के अमृतकाल में रानी दुर्गावती के विचारों...
- **मन की बात** 32
  - भारत के बारे में और अधिक जानने को उत्सुक हैं...
- **जयंती** 37-38
  - बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक...
  - प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री रानी लक्ष्मीबाई...
- **पुण्यतिथि** 39-40
  - लाला लाजपत राय, जिनका बलिदान, ब्रिटिश शासक...
  - सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले ...
- **विचार प्रवाह : पं. दीनदयाल उपाध्याय** 41
  - कांग्रेस बनाम जनसंघ


## • मुख्य व्रत-त्यौहार

1. स्नान दान श्राद्ध अमावस्या 2. अन्नकूट, गोवर्धन पूजा 3. चन्द्रदर्शन, भाई दोज 5. अं. विनायकी चतुर्थी व्रत, तीन दिनी सूर्य षष्ठी व्रतारम्भ 6. पांडव पंचमी 7. डाला छठ, सूर्य षष्ठी व्रत 9. गोपाष्टमी 10. अक्षय (आंवला) नवमी 12. देवउठनी (प्रबोधिनी) ग्यारस 13. प्रदोष व्रत,चातुर्मास स. 14. बैकुण्ठ चतुर्दशी 15. स्नानदान व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, त्रिपुरारी पूर्णिमा 19. अं. गणेश चतुर्थी व्रत 23. काल भैरवाष्टमी 26. उत्पन्ना एकादशी व्रत 28. प्रदोष व्रत 29. शिव चतुर्दशी व्रत 30. श्राद्ध अमावस्या

## • मुख्य जयंती-दिवस

2. वीर निर्वाण संवत् 2551 प्रारम्भ 8. संत जलाराम वापा जयंती 12. कवि कालिदास ज., पंढरपुर यात्रा 14. बाल दिवस 15. भ. बिरसा मुंडा, म. सुदर्शन जयंती, राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस, माँ नर्मदा परिक्रमा 22. वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि 26. डॉ. हरिसिंह गौर जयंती

वर्ष-56, अंक : 09, भोपाल, नवम्बर 2024

**हमारे प्रेरणास्रोत**

पं. दीनदयाल उपाध्याय

### ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

**- पं. दीनदयाल उपाध्याय**


•

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

**संजय गोविंद खोचे***

•

सहायक सम्पादक

**पं. सलिल मालवीय**

•

व्यवस्थापक

**योगेन्द्रनाथ बरतरिया**

मोबा. नं. 09425303801

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

# जनादेश की गूंज

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने हरियाणा की ऐतिहासिक जीत व जम्मू-कश्मीर में भाजपा के जबरदस्त प्रदर्शन पर बिल्कुल ठीक ही कहा है ''जनादेश की गूंज दूर-दूर तक जावेगी''। जनादेश मतदाताओं के द्वारा लिया गया निर्णय होता है। लोकतंत्र में मतदाताओं का आदेश अंतिम होता है। 1966 में हरियाणा के गठन के बाद से आज तक राज्य में 13 बार विधानसभा के चुनाव हुए हैं। 10 बार राज्य सरकार को बदलने का जनादेश पारित हुआ है। पर इस बार का जनादेश तो आश्चर्यजनक रहा, ऐतिहासिक रहा, लगातार दो बार की सरकार चुनाव में गई। पर इस सरकार को तीसरी बार सरकार बनाने का जनादेश मिला। भाजपा को लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का जनादेश राज्य, केंद्र सरकार व भाजपा संगठन के प्रति जनता के विश्वास की मजबूती का परिचायक है।

इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया है कि- भाजपा जो कहती है, वह करती है, और जो नहीं कहती है वह भी करती है। जनता का भाजपा पर भरोसा बरकरार है। भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल ही नहीं- भाजपा मतदाताओं के दिलों पर राज करती है। भाजपा की कथनी व करनी में कोई अंतर नहीं है। भाजपा को मिला जन समर्थन इस बात को भी दिखाता है कि जनता कांग्रेस से कितना ऊब चुकी है। जनता ने कांग्रेस से किनारा कर लिया है। जनता कांग्रेस से मुंह मोड़ चुकी है। जनता को विकल्प की तलाश थी- जो बहुत मजबूत हो, जिसके हाथों में देश और भावी पीढ़ियों का भविष्य सुनिश्चित हो, देश की सीमाएं सुरक्षित हों व भारत विश्व का नेतृत्व करे। जैसे ही जनता को इच्छा अनुसार विकल्प की तलाश पूरी हुई- श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश सुरक्षित नजर आया, जनता ने कांग्रेस को जड़ से उखाड़ फेंकने में तनिक भी देरी नहीं की। यह राजनीतिक दलों के लिए इशारा भी है। राजनीतिक दलों को जनता को सर्वोपरि मानकर ही रीति-नीति बनानी चाहिए। यह श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व की बीजेपी सरकार है जिसके कारण इस बार जम्मू कश्मीर की सरकार को भारत के संविधान की शपथ लेनी पड़ गई। 70 वर्षों बाद पहली बार ऐसा हुआ है की जम्मू कश्मीर के चुनाव में उन नागरिकों को भी वोट डालने को मिला जिन्हें वोट से वंचित रखा गया था। अब भारत का संविधान जम्मू कश्मीर में पूरी तरह लागू हो गया है। भारत सरकार के सभी योजनाओं का लाभ जम्मू कश्मीर के हर नागरिक को मिल रहा है।

कांग्रेस मुक्त भारत का जनता ने निर्णय ले लिया है। पिछले 13 वर्षों में एक बार के असम चुनाव को छोड़ दें तो कांग्रेस की कोई भी सरकार को जनता ने पुनः सत्ता सौंपने का निर्णय नहीं लिया। जबकि भाजपा की मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, असम, त्रिपुरा, उत्तराखंड व हरियाणा में भाजपा बार-बार सत्ता का जनादेश पाती है। कई राज्य तो ऐसे हो गए हैं जहां कांग्रेस कभी 60 वर्षों पूर्व सत्ता में थी, कहीं 50 वर्षों पूर्व राज्य सरकार में थी, 40 वर्षों पूर्व राज्य सरकार में थी, मतलब बहुत साफ है कांग्रेस के शासन से जनता इतनी तंग आ चुकी है कि एक बार बाहर किया तो दोबारा फिर विचार हेतु भी नहीं लिया। जबकि यह वहीं कांग्रेस है जो सत्ता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती थी। अब कांग्रेस के पास कुचक्रों के अलावा और कोई चारा ही नहीं बचा है।

भाजपा संगठन आधारित राजनीतिक दल है। जिसमें सबको बराबर मौका मिलता है। भाजपा सदस्यता अभियान चलाकर जन-जन को पार्टी से जोड़ने का प्रयास करती है। भाजपा की जीत का आधार बूथ स्तर तक बना मजबूत संगठन है। इस बार सदस्यता अभियान के माध्यम से नए लोगों को भाजपा से जोड़कर संगठन को नई मजबूती, नई ऊर्जा देने का प्रयास किया गया है। मध्य प्रदेश भाजपा ने सदस्यता अभियान में एक करोड़ 50 लाख 28 हजार सदस्य बना कर नया इतिहास रच दिया है। मध्य प्रदेश भाजपा ने जितने सदस्य बनाए हैं- कई देशों की तो इतनी कुल जनसंख्या भी नहीं है। कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम व संगठन के कारण ही मध्य प्रदेश भाजपा ने डेढ़ करोड़ के लक्ष्य को पार किया है। कार्यकर्ताओं व संगठन के प्रयास निश्चित ही स्वागत योग्य हैं। आज के प्रयास भविष्य के भारत को गढ़ने में नींव का पत्थर साबित होंगे। सदस्यता अभियान के माध्यम से नए भारत- सक्षम भारत- आत्मनिर्भर भारत- सुरक्षित भारत- विकसित भारत के लिए बुनियादी ढांचा तैयार हो रहा है। इसी से विश्वगुरु भारत पुनः स्थापित होगा।

भारत अब उठ खड़ा हुआ है, अब भारत ना तो छोटा सोचता है, ना छोटी योजना बनाता है, स्पीड व स्केल के नए आयाम भारत ने खुद निर्धारित कर रखे हैं। भारत 10 वर्षों की तपस्या के कारण विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। विश्व का सबसे युवा देश है। रिफॉर्म-परफॉर्म व ट्रांसफार्म के मंत्र को जनता ने इतना पसंद किया की 60 वर्षों बाद लगातार तीसरी बार किसी राजनीतिक दल को सरकार बनाने का मौका मिला है। जनता का यह भरोसा भाजपा की सबसे बड़ी पूंजी है। पिछले 10 वर्षों की मेहनत का ही परिणाम है की विदेशी निवेशकों के लिए भारत सबसे फेवरेट देश है। बढ़ता इन्वेस्टमेंट सरकार की नीतियों में परिवर्तन व मजबूत नेतृत्व का ही परिणाम है। भारत अपनी अर्थव्यवस्था को दिन प्रतिदिन ऊपर उठा रहा है। साथ ही साथ सरकार के प्रयास हैं कि केवल ऊंचा स्तर ही नहीं छूना है, ऊंचे स्तर पर स्थाई रूप से रहकर स्तर को और ऊंचा उठाना है।

देश की आधी आबादी घरों तक सीमित थी। भाजपा के सरकारों ने अब उनके लिए संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। महिलाओं को संसद व विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण के कारण 2028 के विधानसभा चुनाव व 2029 के लोकसभा चुनाव में महिलाओं की भागीदारी कम से कम 33 प्रतिशत या उससे अधिक ही होगी।

धारा 370 का दफन और दफन भी ऐसा कि अब दुनिया की कोई भी ताकत अब फिर 370 वापस नहीं ला सकती। राष्ट्रीय एकता दिवस पर एक भारत श्रेष्ठ भारत के संकल्प को और मजबूत करती है। मध्य प्रदेश भाजपा के सदस्यता अभियान में इस बार प्रोफेशनल्स, उद्योगपति, स्वरोजगार, स्टार्टअप्स, रिटायर्ड अधिकारी व समाज की प्रमुख हस्तियों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण करी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ने स्वयं इस का नेतृत्व किया। इस कारण भाजपा रचनात्मक सोच के साथ विकसित भारत के विजन पर और तेजी से काम करने में सक्षम होगी। जातिवाद, परिवारवाद समूल नष्ट होगा। अनुभवी, व प्रभावशील व्यक्तित्व का देश व समाज को लाभ मिलेगा।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री जी प्रदेश में उद्योग स्थापित करने के लिए विशेष प्रयासरत है। उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, सागर व रीवा में इंडस्ट्री कांक्लेव का आयोजन, हैदराबाद, कोयंबटूर व मुंबई में रोड शो, प्रदेश के औद्योगिक विकास में निश्चित ही क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगा। ▪

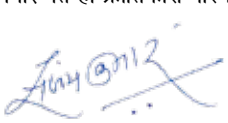

**(संजय गोविन्द खोचे)**
सम्पादक

# जनादेश की गूंज दूर-दूर तक जाएगी

- भाजपा न केवल दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है बल्कि यह सबसे ज्यादा दिलों में भी बसी हुई है।
- कांग्रेस का लक्ष्य लोगों के बीच मतभेद पैदा करके भारत को कमजोर करना है।
- कुछ लोगों ने कहा था कि अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद कश्मीर जलेगा, लेकिन यह और खिल गया है।
- हरियाणा समृद्ध होगा और जम्मू-कश्मीर फलेगा-फूलेगा।
- हम सबने सुना है, जहां दूध-दही का खाना, वैसा है अपना हरियाणा। हरियाणा के लोगों ने फिर कमाल कर दिया है और कमल-कमल कर दिया है।

**हरियाणा की ये जीत कार्यकर्ताओं के अथाह परिश्रम का परिणाम है। हरियाणा की ये जीत नड्डा जी और हरियाणा की टीम के प्रयासों की जीत है।**

हरियाणा की ये जीत अतिशय नम्र-विनम्र ऐसे हमारे मुख्यमंत्री जी के कर्तव्यों की भी जीत है।

गीता की धरती पर सत्य की जीत हुई है। गीता की धरती पर विकास की जीत हुई है। गीता की धरती पर सुशासन की जीत हुई है। हर जाति, हर वर्ग के लोगों ने हमें वोट दिया है।

जम्मू-कश्मीर में दशकों के इंतजार के बाद आखिरकार शांतिपूर्वक चुनाव हुए। वोटों की गिनती हुई, नतीजे आए, ये भारत के संविधान की जीत है, भारत के लोकतंत्र की जीत है। जम्मू-कश्मीर के लोगों ने नेशनल कॉन्फ्रेंस और उनके गठबंधन को ज्यादा सीटें दी हैं। वोट प्रतिशत के हिसाब से देखें तो जम्मू-कश्मीर में जितनी भी पार्टियां चुनाव लड़ रही थीं उसमें वोट शेयर के हिसाब से भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

हरियाणा की ये जीत कार्यकर्ताओं के अथाह परिश्रम का परिणाम है। हरियाणा की ये जीत नड्डा जी और हरियाणा की टीम के प्रयासों की जीत है। हरियाणा की ये जीत अतिशय नम्र-विनम्र ऐसे हमारे मुख्यमंत्री जी के कर्तव्यों की भी जीत है।

आज हरियाणा में झूठ की घुट्टी पर विकास की गारंटी भारी पड़ी है। हरियाणा की जनता ने

नया इतिहास रच दिया है। हरियाणा का गठन 1966 में हुआ था। इतने वर्षों में बड़े-बड़े दिग्गजों ने इस राज्य का नेतृत्व किया। शायद हिंदुस्तान में बहुत कम राज्य के नेता ऐसे होते हैं, जिनको पूरा हिंदुस्तान जानता है। एक जमाना था, हरियाणा के इन दिग्गज नेताओं का नाम पूरे देश में चर्चा में रहता था। हरियाणा में अब तक 13 चुनाव हुए। 13 चुनावों में से 10 चुनावों में हरियाणा के लोगों ने हर पांच साल के बाद सरकार बदली है। लेकिन इस बार हरियाणा के लोगों ने जो किया है, वो अभूतपूर्व है। वो पहले कभी नहीं हुआ। पहली बार ऐसा हुआ है, जब दो कार्यकाल पूरा करने वाली किसी सरकार को हरियाणा में फिर से मौका मिला हो। भारतीय जनता पार्टी को तीसरी बार मौका मिला है। यहां के लोगों ने सिर्फ तीसरी बार हमारी सरकार नहीं बनाई, बल्कि हमें सीटें भी ज्यादा दी हैं और वोट शेयर भी ज्यादा दिया है। ऐसा लगता है कि हरियाणा के लोगों ने छप्पर फाड़कर वोट दिया है। इस जनादेश की गूंज दूर-दूर तक जाएगी।

भाजपा दुनिया का सिर्फ सबसे बड़ा दल ही नहीं है। भाजपा सबसे ज्यादा दिलों में भी बसी हुई है। हरियाणा में जनता ने विकास के मुद्दे पर भाजपा की हैट्रिक लगवाई। भाजपा ने कांग्रेस के कुशासन से मुक्ति दिलाई। इसलिए गुजरात और मध्य प्रदेश की जनता, दो दशक से वहां अपना आशीर्वाद बनाए हुए है। अरुणाचल प्रदेश और गोवा में तीसरी बार भाजपा ने सरकार बनाई है। यूपी और बिहार में कानून का राज स्थापित करने वाली भाजपा-एनडीए की सरकार को लोग बार-बार मौका दे रहे हैं। असम, त्रिपुरा और उत्तराखंड में लगातार दो टर्म से भाजपा की सरकार है। जहां-जहां भाजपा सरकार बनाती है, वहां की जनता लंबे समय तक भाजपा को समर्थन देती है। और दूसरी तरफ कांग्रेस की हालत कैसी है? पिछली बार कब कांग्रेस की किसी सरकार की वापसी हुई है? यानि जो सरकार में थे कितने साल पहले वो दोबारा आए थे। करीब 13 साल पहले, 2011 में असम में उनकी सरकार फिर से लौटी थी। उसके बाद जितने भी चुनाव हुए, लोगों ने कहीं भी कांग्रेस को सेकंड टर्म नहीं दिया। देश में कितने ही राज्य हैं जहां कांग्रेस कभी 60 साल पहले वहां पर थी, कहीं पर 50 साल पहले, कहीं पर 40 साल पहले थी। 50-50, 60 साल से वो सत्ता में आई ही नहीं। एक बार लोगों ने निकाल दिया, कांग्रेस को घुसने नहीं दिया। देश के ज्यादातर राज्य के लोगों ने कांग्रेस के लिए नो-एंट्री का बोर्ड लगा दिया है। पहले कांग्रेस सोचती थी कि वो चाहे काम करे या ना करे, लोग तो उसको वोट देंगे ही। लेकिन अब कांग्रेस की पोल खुल चुकी है। उसका डिब्बा गोल हो चुका है।

**जम्मू-कश्मीर में इस बार हुआ चुनाव कई मायनों में ऐतिहासिक रहा है। वहां भारत का संविधान पूरी तरह से लागू होने के बाद ये पहला चुनाव था। आजादी के सात दशक बाद भी अनेक लोगों को वोट डालने का हक नहीं था।**

उन्होंने भी पहली बार इस चुनाव में अपना वोट डाला है। कुछ लोग कहते थे कि आर्टिकल-370 हटा तो कश्मीर जल जाएगा! लेकिन, कश्मीर जला नहीं, कश्मीर और खूबसूरती से खिला है, खिलखिलाया है।

कांग्रेस, सत्ता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती है। सरकार में ना रहने पर कांग्रेस की हालत जल बिन मछली जैसी हो जाती है। इसलिए, वो सरकार में आने के लिए देश को, समाज को भी दांव पर लगाने से नहीं हिचकती। आज पूरा देश देख रहा है कि कैसे कांग्रेस हमारे समाज में जाति का जहर फैलाने पर उतर आई है। जो लोग, चांदी नहीं, सोने का चम्मच मुंह में लेकर पैदा हुए, जो लोग, पीढ़ी दर पीढ़ी फाइव स्टार लाइफ जीते आ रहे हैं, वो गरीब को जाति के नाम पर लड़वाना चाहते हैं। हमारे दलित-पिछड़े-आदिवासी समाज को भूलना नहीं है। ये कांग्रेस है जिसने दलितों, पिछड़ों पर सबसे ज्यादा अत्याचार किया है। ये कांग्रेस है जिसने उन्हें इतने दशकों तक रोटी, पानी, मकान से वंचित रखा। ये वो लोग हैं, जो 100 साल बाद भी सत्ता मिलने पर कभी किसी दलित, पिछड़े, आदिवासी को प्रधानमंत्री नहीं बनने देंगे। सच्चाई ये है कि कांग्रेस का परिवार, दलितों-पिछड़ों-आदिवासियों से नफरत करता है, उनसे चिढ़ता है। इसलिए आज जब दलित, पिछड़े, आदिवासी शीर्ष स्थान पर जा रहे हैं, तो इनके पेट में चूहे दौड़ने लग जा रहे हैं। हरियाणा में भी इन्होंने दलितों को, ओबीसी को भागीदारी देने से साफ इनकार कर दिया था। इन्होंने दलितों और पिछड़ों को भी अपमानित किया। कांग्रेस के शाही परिवार ने तो डंके की चोट पर कहा कि वो आरक्षण खत्म कर देंगे। दलितों और पिछड़ों का आरक्षण छीनकर कांग्रेस अपने वोट बैंक में देना चाहती थी। हरियाणा में भी वो यही करने जा रही थी।

कांग्रेस भारत के समाज को कमजोर करके, भारत में अराजकता फैलाकर देश को कमजोर करना चाहती है। इसलिए वो अलग-अलग वर्गों को भड़का रही है। लगातार आग लगाने की कोशिश कर रहे हैं। देश ने देखा कि कैसे किसानों को भड़काने के प्रयास हुए। लेकिन हरियाणा के किसानों ने उन्हें करारा जवाब दिया कि वो देश के साथ हैं, वो भाजपा के साथ

हैं। हमारे दलित-ओबीसी साथियों को भड़काने की कितनी ही कोशिशें हुईं, क्या-क्या प्रपंच नहीं किए गए, लेकिन इस समाज ने भी इस षडयंत्र को पहचाना और कहा कि वो देश के साथ है, भाजपा के साथ है। इन लोगों ने हमारी सेना को लेकर भी अपप्रचार किए, हमारे नौजवानों को भड़काया। इस साजिश को भी हरियाणा के नौजवानों ने नाकाम कर दिया। आज हरियाणा ने कांग्रेस को दो टूक संदेश दे दिया है। ये देश विरोधी पॉलिटिक्स नहीं चलेगी। हरियाणा की हर बिरादरी, हर परिवार ने एकजुट होकर वोट दिया, देशभक्ति से ओतप्रोत होकर वोट दिया। देशभक्तों को बांटने की साजिश को हरियाणा ने फेल कर दिया है।

बीते कुछ समय से भारत के विरुद्ध भांति-भांति के षडयंत्र चल रहे हैं। भारत के लोकतंत्र को, भारत के अर्थतंत्र को, भारत के सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करने के लिए भांति-भांति की साजिशें हो रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय साजिशें हो रही हैं। कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी और उनके चट्टे-बट्टे इस खेल में शामिल हैं। देशभक्त हरियाणा ने ऐसी हर साजिश को भी मुंहतोड़ जवाब दिया है। भारत और हर भारतीय को संकल्प लेना है कि हम ऐसी किसी साजिश को सफल नहीं होने देंगे। भारत, विकास के रास्ते से नहीं भटकेगा।

चुनाव नतीजों ने एक और बात स्पष्ट की है। कांग्रेस, पूरी तरह परजीवी पार्टी बन गई है। यहां हरियाणा में कांग्रेस परजीवी बनकर किसी के साथ नहीं थी, अकेली थी, तो उसे करारी हार मिली। जम्मू-कश्मीर में उसकी सहयोगी पार्टी डर के मारे पहले से कह रही थी कि कांग्रेस की वजह से उसे नुकसान हो रहा है। और नतीजों में भी वही दिखा है। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने भी यही देखा था। लोकसभा में कांग्रेस जितनी सीटें जीतीं, उनमें आधी से ज्यादा सीटें वो अपने सहयोगियों की वजह से जीती। इसके अलावा, जहां सहयोगियों ने कांग्रेस पर भरोसा किया, वहां उन सहयोगियों की ही नैया डूब गई। कई राज्यों में कांग्रेस के खराब प्रदर्शन का खामियाजा उसकी सहयोगी पार्टियों को उठाना पड़ा। कांग्रेस, ऐसी परजीवी पार्टी है, जो अपने सहयोगियों को ही निगल जाती है।

कांग्रेस एक ऐसा देश बनाना चाहती है, जहां लोग अपनी ही विरासत से नफरत करते हों, अपनी राष्ट्रीय संस्थाओं पर शंका करते हों, जिस जिस पर देशवासी गर्व करते हैं, कांग्रेस, हर उस चीज की छवि को धूमिल करना चाहती है। देश का चुनाव आयोग हो, देश की सेना हो, हमारी पुलिस हो, देश की न्यायपालिका हो, कांग्रेस हर संस्था पर दाग लगाना चाहती है। लोकसभा चुनाव का परिणाम आने के पहले इन्होंने किस तरह का कोहराम मचाया था। चुनाव के दौरान भी ये लोग, इनके सहयोगी दल, इनके अर्बन नक्सल साथी कितनी बार कोर्ट गए। सुप्रीम कोर्ट तक गये और किसलिए गए? ताकि ये लोग चुनाव आयोग की संवैधानिक निष्पक्षता पर बट्टा लगा सकें। आज भी इन्होंने ऐसा ही काम किया है। आज भी कांग्रेस ने देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश की है। कांग्रेस हर बार यही कोशिश करती है कि हमारी संस्थाओं की निष्पक्षता पर सवाल उठाए। उसकी प्रतिष्ठा पर आघात करे। कांग्रेस की यही आदत रही है। कांग्रेस बड़ी बेशर्मी से ऐसी करतूतें करती आ रही है।

जम्मू-कश्मीर में इस बार हुआ चुनाव कई मायनों में ऐतिहासिक रहा है। वहां भारत का संविधान पूरी तरह से लागू होने के बाद ये पहला चुनाव था। आजादी के सात दशक बाद भी अनेक लोगों को वोट डालने का हक नहीं था। उन्होंने भी पहली बार इस चुनाव में अपना वोट डाला है। कुछ लोग कहते थे कि आर्टिकल-370 हटा तो कश्मीर जल जाएगा! लेकिन, कश्मीर जला नहीं, कश्मीर और खूबसूरती से खिला है, खिलखिलाया है। जिस तरह लोगों ने बाहर आकर रिकॉर्ड नंबर्स में वोट डाले वो हर हिंदुस्तानी के दिल को खुश करने वाला है।

हमारा जम्मू-कश्मीर, कर्फ्यू और अलगाववाद के कालखंड से बाहर निकल रहा है। 1947 के बाद पहली बार हमारी सरकार ने जम्मू कश्मीर में बीडीसी के चुनाव कराए। आज पहली बार प्रशासन के हर स्तर पर, फिर चाहे वो विधायक हों, बीडीसी हों, डीडीसी हों, हर स्तर पर अब जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि काम करेंगे। हमने जम्मू-कश्मीर में संविधान की स्पिरिट और उसकी मर्यादा की पुर्न - प्रतिष्ठा की है। बाबा साहब आंबेडकर को इससे बड़ी श्रद्धांजलि क्या होगी?

मैंने विकसित भारत के लिए चार स्तंभों की बार-बार चर्चा की है। ये चार स्तंभ, किसान, युवा, महिलाएं और गरीब हैं। जम्मू-कश्मीर हो या हरियाणा, हम विकास को इन्हीं चार स्तंभों के बलबूते पर देश को विकसित भारत बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इनको सशक्त करना ही भाजपा सरकार की प्राथमिकता है। हरियाणा के गरीब तो पिछले 10 साल से डबल इंजन की सरकार का काम देख रहे हैं। मुफ्त इलाज की सुविधा से लेकर नल से जल और पक्के घर तक, हरियाणा के गरीब परिवारों को अनेक सुविधाएं मिली हैं। अब हरियाणा की भाजपा सरकार, गरीब कल्याण के काम को और अधिक गति देगी।

हरियाणा तो कृषि के मामले में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है। हरियाणा की इस ताकत को भाजपा और मजबूती देने वाली है। हमारा

लक्ष्य एकदम साफ है। भाजपा सरकार, हरियाणा के किसानों की उपज को दुनिया के बाजारों तक पहुंचाना चाहती है। बाजरा जैसा यहां का मोटा अनाज, श्री अन्न के रूप में दुनिया-भर के डायनिंग टेबल पर पहुंचे, ये हमारी प्रतिबद्धता है। हरियाणा खाने के तेल में आत्मनिर्भरता के मिशन को भी शक्ति देने वाला है। इससे हरियाणा के तिलहन किसानों को भी ज्यादा लाभ होगा।

हरियाणा के युवाओं ने दुनिया-भर में अपना लोहा मनवाया है। चाहे मानेसर में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर हो, गुरुग्राम के स्टार्टअप्स हों या फिर खेल की दुनिया, हरियाणा के छोरा-छोरी खूब धूम मचा रहे हैं। भाजपा सरकार, इन सभी क्षेत्रों में और अधिक निवेश को बढ़ावा देने वाली है। आने वाले समय में भारत दुनिया में खेलों की एक महाशक्ति बनने जा रही है। इसमें हरियाणा के नौजवानों की भूमिका बहुत बड़ी रहने वाली है। इसलिए, हरियाणा में स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने के लिए एक आधुनिक रोडमैप भाजपा ने रखा है।

जब महिलाओं की बात आती है, तो women led development आज देश का मिजाज बनता जा रहा है। हमारी माताओं-बहनों-बेटियों के सशक्तिकरण से जुड़े हर पहलू पर भाजपा का फोकस है। हरियाणा वो राज्य है जिसने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के रूप में देश को नेतृत्व दिया है। हम हरियाणा में हजारों लखपति दीदी और ड्रोन दीदी बनाने वाले हैं। लाडो लक्ष्मी योजना से भी हरियाणा की बहनों को बहुत लाभ होगा। जब माताएं-बहनें आर्थिक रूप से समर्थ होंगी, तो इसका लाभ पूरे परिवार को होगा। परिवार समर्थ होगा, तो हरियाणा समर्थ होगा, देश समर्थ होगा।

भाजपा की सरकार, राष्ट्र को सर्वोपरि रखती है, नेशन फर्स्ट। भाजपा की सरकार, गरीबों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्र हो या फिर हरियाणा, इन दस सालों में भाजपा की सरकार पर भ्रष्टाचार का एक दाग नहीं लगा। केंद्र सरकार पर जैसे दाग नहीं लगा है, वैसे ही हरियाणा सरकार 10 साल चलाई हमने, भ्रष्टाचार का कोई दाग नहीं है। हमने सिर्फ समर्पण भाव से जनता के विकास के लिए काम किया। और मैं इसके लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी जी और पूर्व सीएम मनोहर लाल जी की भरपूर तारीफ करता हूं, भरपूर प्रशंसा करता हूं। उन्होंने हरियाणा के विकास के लिए बहुत मेहनत की है।

जब जनता, ऐसे काम को प्रोत्साहित करती है, नेक नीयत और अच्छी नीति को सराहती है, तब काम करने की ऊर्जा भी दोगुनी हो जाती है। हरियाणा ने भाजपा सरकार को प्रोत्साहित किया है। जम्मू-कश्मीर ने भी भाजपा को प्रोत्साहित किया है। ये आशीर्वाद हमें और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करते हैं। मैं इसके लिए जम्मू-कश्मीर और हरियाणा की जनता को भी फिर एक बार हृदय से बहुत-बहुत साधुवाद करता हूं। जनादेश से भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक ताकत बनाने का संकल्प और मजबूत हुआ है।

इस जनादेश ने भारत को दुनिया की स्किल कैपिटल बनाने के संकल्प को भी मजबूती दी है। आपने हर उस प्रण, हर उस प्रेरणा को सशक्त किया है, जिसका मकसद करोड़ों लोगों को गरीबी से बाहर निकालना है। ये जनादेश, भारत को और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए कठिन से कठिन फैसले लेने के लिए भी नया हौसला देगा। पूरे देश को, फिर ये भरोसा देता हूं कि आने वाले 5 साल और तेज विकास के होंगे। हरियाणा विकसित होगा, जम्मू-कश्मीर विकसित होगा, भारत विकसित होगा और ये हम करके दिखाएंगे।

देश के कोने-कोने में आज भारतीय जनता पार्टी जो कुछ भी है, हर संघर्ष को पार करते हुए भारतीय जनता पार्टी ने जनता के दिलों में जो जगह बनाई है उसके मूल में भाजपा के कार्यकर्ता हैं। भाजपा के कार्यकर्ताओं का परिश्रम है, भाजपा के कार्यकर्ताओं का त्याग और तपस्या है। और इसीलिए विजय के इस उत्सव में मुझे बार-बार मेरे कार्यकर्ताओं की याद आना स्वाभाविक है। उनके प्रति अहोभाव व्यक्त करने का मेरा स्वाभाविक मन करता है। और इसलिए टीम स्पिरिट के साथ कंधे से कंधा मिलाकर, कदम से कदम मिलाकर, लक्ष्य की ओर बढ़ते जाने वाले भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता न रुकने वाले हैं, न थकने वाले हैं और झुकने का तो सवाल ही नहीं उठता। ▪

# अयोध्या की तरह चित्रकूट का विकास होगा

## मुख्यमंत्री डॉ. यादव

अयोध्या में 500 वर्ष के अंतराल के बाद रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई है। तब से पूरे देश में सनातन संस्कृति की धारा बह रही है। चित्रकूट के कण-कण में भगवान राम की महिमा व्याप्त है। अयोध्या की तरह तीर्थ स्थल चित्रकूट का विकास किया जायेगा। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की सरकार दोनों मिलकर चित्रकूट के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

भगवान श्रीराम के चरित्र प्रसंगों को समेटे चित्रकूट का यह क्षेत्र अलग-अलग स्वरूपों के साथ मनोरम है। चित्रकूट की धरती पर भगवान श्रीराम मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाये, जिन्होंने एक आज्ञाकारी पुत्र और भाई से भाई के प्रेम का प्रेरणास्पद उदाहरण प्रस्तुत किया।

श्रीराम के जीवन के हर चरित्र और प्रसंग हमें जीवन मूल्यों के शिक्षा और प्रेरणा देते हैं।

राम की लीला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मलेशिया, इंडोनेशिया, थाइलैंड, कम्बोडिया में भी प्रेरणा के रूप में पहुंचाने वाले हमारे कलाकार हैं। चित्रकूट में अंतर्राष्ट्रीय रामलीला में प्रस्तुतियां देने वाले सभी कलाकार महाकाल की नगर उज्जैन से आते हैं। मध्यप्रदेश में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है।

भगवान श्रीराम के तीर्थ चित्रकूट को सबसे अच्छा बनाना सरकार का संकल्प है। भौतिक संरचना के साथ समाज में बदलाव लाने की संकल्पना भी होनी चाहिए। राज्य सरकार ने सभी त्यौहारों को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया है। पुरूषार्थ और पराक्रम के प्रतीक दशहरा के दिन सभी स्थानों पर शस्त्र पूजन किया गया है। दीपावली के अवसर पर श्रीराम के प्रसंगों पर आधारित रामलीला महोत्सव में शामिल होने आनंद लेने वे स्वयं श्रीराम के धाम चित्रकूट आये हैं।

वर्तमान में देश की तुलना में मध्यप्रदेश की दुग्ध उत्पादन क्षमता 9 प्रतिशत है। इसे हम अगले 2 सालों में 20 प्रतिशत तक ले जायेंगे। पशुपालन को प्रोत्साहन देने किसानों की तरह पशुपालकों को दुग्ध उत्पादन पर बोनस दिया जायेगा। गौमाता पालने को प्रोत्साहन भी दिया जायेगा और घर-घर में गोवर्धन पूजा भी की जायेगी। बड़ी गौशालाओं को मध्यप्रदेश सरकार वित्तीय मदद करेगी। ▪

# मप्र में डेढ़ करोड़ सदस्यता का लक्ष्य पार - विष्णुदत्त शर्मा

पार्टी के कार्यकर्ताओं ने अपनी मेहनत, लगन और माइक्रोप्लानिंग के बल पर डेढ़ करोड़ का लक्ष्य पार करते हुए 1 करोड़ 50 लाख, 28 हजार 107 सदस्य बनाकर नया इतिहास रच दिया है।

- **कार्यकर्ताओं की मेहनत, लगन और प्लानिंग से रचा सदस्यता का नया इतिहास।**
- **दूसरे चरण में पार्टी कार्यकर्ताओं ने पार किया डेढ़ करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य।**
- **सक्रिय सदस्यता अभियान में भी रिकॉर्ड बनाएंगे मध्यप्रदेश भाजपा के कार्यकर्ता।**
- **सदस्यता में लक्ष्य प्राप्त करने वाला चौथा राज्य बना मध्यप्रदेश, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री ने दी बधाई।**
- **कांग्रेस को समझना होगा कि सिर्फ झूठ परोसना ही राजनीति नहीं होती।**
- **ऑफलाइन का डाटा आने पर और बढ़ेगा सदस्यता का आंकड़ा।**

सदस्यता अभियान की पहली कार्यशाला में कहा था कि मध्यप्रदेश में सभी कार्यकर्ता मिलकर इतिहास बनाएंगे। संगठन पर्व के पहले चरण में 1 करोड़ का आंकड़ा पार किया था और अब सदस्यता अभियान के दूसरे चरण के अंतिम दिन सदस्यता का लक्ष्य पार कर लिया है। पार्टी के कार्यकर्ताओं ने अपनी मेहनत, लगन और माइक्रोप्लानिंग के बल पर डेढ़ करोड़ का लक्ष्य पार करते हुए 1 करोड़ 50 लाख, 28 हजार 107 सदस्य बनाकर नया इतिहास रच दिया है। अब सक्रिय सदस्यता का अभियान शुरू हो गया है, मध्यप्रदेश भाजपा सक्रिय सदस्यता में भी रिकॉर्ड बनाएगी। झूठ, छल-कपट की राजनीति करने वाले कांग्रेस नेताओं को यह समझना होगा कि सिर्फ झूठ परोसना ही राजनीति नहीं होती। भाजपा कार्यकर्ताओं ने जमीनी स्तर पर कार्य करते हुए डेढ़ करोड़ से अधिक सदस्य बनाए हैं।

संगठन पर्व, सदस्यता अभियान के दूसरे चरण की समाप्ति तक प्रदेश के सभी 64871 बूथों पर जो 1 करोड़ 50 लाख, 28 हजार 107 सदस्य बनाए गए हैं, उनमें से 1 करोड़ 22 लाख, 74 हजार 300 सदस्य ऐसे हैं, जिन्होंने ऑनलाइन डिजिटल फार्म भरा है। डिजिटल फॉर्म भरने के मामले में मध्यप्रदेश देश के अन्य राज्यों में अग्रणी रहा है, लेकिन मध्यप्रदेश के कई अंचल ऐसे भी हैं, जहां सही तरीके से मोबाइल और इंटरनेट नेटवर्क नहीं मिल पाता। कई घरों में मोबाइल फोन ही नहीं है। कुछ घरों में एक मोबाइल है और सदस्यता ग्रहण करने वाले चार-पांच सदस्य हैं। ऐसे अंचलों व घरों में पार्टी कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर ऑफलाइन सदस्य बनाए हैं। अभी ऑफलाइन सदस्यता का आंकड़ा तैयार हो रहा है, इसका परीक्षण किया जा रहा है। जब यह आंकड़ा आएगा, तो एक और इतिहास रचा जाएगा। सदस्यता अभियान के पहले दिन देश भर में 40 हजार ऑफलाइन फॉर्म भरे गए थे और हमारे लिए गर्व का विषय है कि इनमें से 23 हजार फॉर्म मध्यप्रदेश के थे। अब सक्रिय सदस्यता का अभियान शुरू हो चुका है और सक्रिय सदस्य बनने के लिए 100 प्राथमिक सदस्य बनाना आवश्यक है। इसलिए सक्रिय सदस्यता के मामले में भी पार्टी कार्यकर्ता एक और इतिहास रचने में जुट गए हैं। भाजपा संविधान में सक्रिय सदस्यता के लिए 50 प्राथमिक सदस्य बनाना ही निर्धारित है, लेकिन मध्यप्रदेश में सक्रिय सदस्य बनने के लिए

100 प्राथमिक सदस्य बनाना निर्धारित किया गया है। लेकिन ऐसा नहीं है कि 50 प्राथमिक सदस्य बनाने वालों को सक्रिय सदस्य बनने का अधिकार नहीं है।

भाजपा के कार्यकर्ताओं ने जमीन पर उतरकर माइक्रोप्लानिंग करके सदस्यता अभियान में दिए गए लक्ष्य को प्राप्त करके दिखाया है। मध्यप्रदेश में वैसे तो 41 लाख कार्यकर्ता हैं, लेकिन इनमें से 3 लाख कार्यकर्ता पूरी तरह से सदस्यता अभियान में जुटे हुए हैं। इनमें बूथ के कार्यकर्ता से लेकर पन्ना समिति के लोग और पन्ना प्रमुख तक शामिल हैं। सदस्यता अभियान 2 सितंबर से शुरू हुआ था और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती 25 सितंबर को 12 लाख से ऊपर सदस्यता करके रिकॉर्ड बनाया था। अभियान का दूसरा चरण 1 अक्टूबर से शुरू हुआ था और इस चरण के अंतिम दिन यानी 15 अक्टूबर को भी 11 लाख से अधिक सदस्य बनाए हैं।

इस अभियान के दौरान केंद्रीय नेतृत्व से लेकर प्रदेश की टोली और जिलों से लेकर शक्ति केंद्र तथा बूथ स्तर तक के कार्यकर्ता लगातार जुटे रहे। हर दिन शाम 7.00 बजे से जिलों की बैठक होती थी और सदस्यता अभियान में जुटे कार्यकर्ता इस बैठक में रिपोर्ट देते थे। इसके बाद शाम 8.00 बजे से संभाग की बैठक होती थी संभाग प्रभारी के साथ सभी जिलाध्यक्ष तथा सदस्यता अभियान में लगे कार्यकर्ता इसमें शामिल होते थे। रात्रि 9.00 बजे से प्रदेश स्तर की बैठक होती थी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह, सह प्रभारी श्री सतीश उपाध्याय, संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी तथा सदस्यता अभियान की टोली के सभी सदस्य बैठक करते थे और यह चर्चा होती थी कि किस विधानसभा में सदस्यता की क्या स्थिति रही। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता परिश्रम और ईमानदारी से अपने संगठन तंत्र की मजबूती के लिए काम करते हैं और यही भाजपा की ताकत भी है।

संगठन पर्व के पहले चरण में एक करोड़ से अधिक सदस्य बनाए गए थे, जिसमें 60 प्रतिशत से अधिक युवाओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की थी। मध्यप्रदेश में युवाओं के साथ महिलाएं, उद्यमियों, प्रोफेशनल्स और हर समाज वर्ग के लागों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। प्रदेश में बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक समाज के लोगों ने भी भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। करीब 17 हजार से अधिक थर्ड जेंडर भी मध्यप्रदेश में भाजपा के सदस्य बने हैं।

सदस्यता में जो परिणाम सामने आए हैं, वह प्रदेश के कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम का परिणाम है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त को एक लाख ऐसे लोगों को राजनीति में आने का आह्वान किया था, जिनका परिवार राजनीति में न रहा हो। इंदौर में आईएम बीजेपी फ्यूचर फोर्स के तहत 1400 से अधिक लोगों को अलग-अलग फील्ड के एंटरप्रेन्योर, उद्यमियों व इंटेलेक्चुअल्स को पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई है।

सदस्यता का लक्ष्य लगातार बैठक, मानीटरिंग और कार्यकर्ताओं की मेहनत से प्राप्त किया है। जब मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्वयं बूथ, शक्ति केंद्र और मंडल की बैठकों में शामिल होकर संबोधित करते हैं तो समझा जा सकता है कि पार्टी कार्यकर्ता कितनी गंभीरता से अभियान को ले रहे थे। जिन विधानसभाओं में सदस्यता का आंकड़ा निर्धारित लक्ष्य से कम है, उन्हें प्राथमिक सदस्य बनाने के लिए और समय दिया गया है। वहां के कार्यकर्ताओं से लगातार बात की जा रही है।

सतत मानीटरिंग भी की जा रही है। जिन विधानसभाओं की स्थिति सदस्यता में कुछ कमजोर थी, वहां कार्यकर्ताओं को और सक्रिय किया गया है। इंदौर सहित कई जिलों और संभागों में बहुत अच्छा कार्य हुआ है। ओवरऑल पूरे मध्यप्रदेश में सदस्यता अच्छी हुई है।

मध्यप्रदेश में डेढ़ करोड़ के सदस्यता का लक्ष्य प्राप्त करने पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री बी.एल. संतोष जी ने मध्यप्रदेश भाजपा संगठन को एक्स पर ट्वीट कर बधाई दी है। राष्ट्रीय संगठन महामंत्री जी ने अपने ट्वीट में लिखा है कि मध्यप्रदेश देश का चौथा स्टेट है, जो सदस्यता के अपने लक्ष्य को समय पर प्राप्त कर लिया है। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश संगठन महामंत्री सहित मध्यप्रदेश संगठन की पूरी टीम को बधाई दी है। ▪

# भाजपा हर समाज, वर्ग के लिए कार्य कर रही है - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने हर गांव, हर घर और हर बूथ में भाजपा के सदस्य बने। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की जनता का भाजपा पर अटूट विश्वास है।

भाजपा की केंद्र और मध्यप्रदेश सरकार की योजनाओं ने लाखों लोगों को स्वरोजगार देने का कार्य किया है। देश के 25 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से ऊपर आए हैं। सदस्यता अभियान सत्ता प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि जिन क्षेत्रों में भाजपा कमजोर हैं, उनमें मजबूती प्रदान करने के लिए था।

यह अभियान सर्वसमावेशी, और सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र से हर वर्ग को भारतीय जनता पार्टी से जोड़ने का प्रयास करना था। लाखों लोगों को प्रधानमंत्री आवास, आयुष्मान भारत योजना और उज्जवला योजना जैसे अनेकों योजनाओं का लाभ मिल रहा है। यह सभी लाभार्थी भाजपा के साथ जुड़े। यही युवा सदस्य, आने वाले 2047 में भारत का नेतृत्व करेंगे। ▪

# मजबूत आर्थिक बुनियाद से तेज विकास की राह पर भारत

- **भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है।**
- **सरकार सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन के मंत्र पर चल रही है।**
- **सरकार भारत को विकसित बनाने के लिए संरचनात्मक सुधार करने के लिए प्रतिबद्ध है।**
- **भारत में विकास के साथ-साथ समावेशन भी हो रहा है।**
- **भारत ने 'प्रक्रियात्मक सुधारों' को सरकार की निरंतर गतिविधियों का हिस्सा बनाया है।**
- **भारत का ध्यान एआई और सेमीकंडक्टर जैसी महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों पर है।**
- **युवाओं को कुशल बनाने और उनके इंटर्नशिप के लिए विशेष पैकेज।**

**रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर चलते हुए, हम लगातार निर्णय ले रहे हैं, देश को तेज गति से आगे बढ़ा रहे हैं। यही वो इंपेक्ट है, जिसके कारण भारत के लोगों ने 60 साल बाद, लगातार तीसरी बार किसी सरकार को चुना है।**

जब लोगों का जीवन बदलता है, तब लोगों में ये भरोसा आता है कि देश सही रास्ते पर चल रहा है। यही भावना, भारत की जनता के मैंडेट में दिखती है।

दुनिया के दो बड़े रीजन में युद्ध की स्थिति है। ये दोनों रीजन ग्लोबल इकॉनॉमी के लिए, खासतौर पर एनर्जी सिक्योरिटी के लिहाज से बहुत अहम हैं। इतनी बड़ी global uncertainty के बीच हम सभी यहां - The Indian Era यानि भारत के युग की चर्चा कर रहे हैं। ये दिखाता है कि आज भारत पर विश्वास कुछ अलग ही है...ये दिखाता है कि आज भारत का आत्मविश्वास कुछ विशेष है।

- आज भारत, दुनिया की fastest growing major economy है।
- आज भारत, GDP के हिसाब से fifth largest economy है।
- हम ग्लोबल फिनटेक एडॉप्शन रेट के मामले में नंबर-वन हैं।
- आज हम, smartphone data consumption के मामले में नंबर-वन हैं।
- हम इंटरनेट यूजर्स के मामले में दुनिया में नंबर- दो हैं।
- दुनिया की करीब-करीब आधी रियल टाइम डिजिटल ट्रांजेक्शन आज भारत में हो रही है।
- आज भारत में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट अप इकोसिस्टम है।
- रीन्युएबल एनर्जी कैपेसिटी के मामले में भारत, नंबर- चार पर है।
- अगर मैन्युफेक्चरिंग की बात करें, तो भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा mobile manufacturer है।
- भारत two-wheelers और tractors

**भारत की ग्रोथ को लेकर जो भी predictions हो रही हैं, उनका कॉन्फिडेंस भी बताता है कि भारत किस दिशा में है। ये पिछले कुछ हफ्तों और महीनों के आंकड़ों में भी देख सकते हैं। पिछले साल हमारी इकॉनॉमी ने हर prediction से बाहर कहीं बेहतर किया है। वर्ल्ड बैंक हो, IMF हो, मूडीज हो, सभी ने भारत से जुड़े फोरकास्ट को upgrade किया है।**

का सबसे बड़ा manufacturer है।

- और इतना ही नहीं, भारत दुनिया का सबसे युवा देश है।
- दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा scientists और technicians का पूल भारत में है।

यानि साइंस हो, टेक्नॉलॉजी हो, इनोवेशन हो, भारत clearly एक स्वीट स्पॉट पर उपस्थित है।

रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर चलते हुए, हम लगातार निर्णय ले रहे हैं, देश को तेज गति से आगे बढ़ा रहे हैं। यही वो इंपेक्ट है, जिसके कारण भारत के लोगों ने 60 साल बाद, लगातार तीसरी बार किसी सरकार को चुना है। जब लोगों का जीवन बदलता है, तब लोगों में ये भरोसा आता है कि देश सही रास्ते पर चल रहा है। यही भावना, भारत की जनता के मैंडेट में दिखती है। 140 करोड़ देशवासियों का ये विश्वास इस सरकार की सबसे बड़ी पूंजी है। हमारा कमिटमेंट है कि भारत को विकसित बनाने के लिए लगातार structural reforms करते रहेंगे। हमारा ये कमिटमेंट हमारे थर्ड टर्म के पहले तीन महीनों के काम में भी देख सकते हैं। Bold policy changes...Jobs और स्किल्स को लेकर मजबूत कमिटमेंट, sustainable growth और innovation पर फोकस, आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, क्वालिटी ऑफ लाइफ, और तेज ग्रोथ की कंटीन्यूटी, ये हमारे पहले तीन महीनों की पॉलिसीज का रिफ्लेक्शन है। इस दौरान 15 ट्रिलियन रुपीज यानि 15 लाख करोड़ रुपए से अधिक के डिसीजन्स लिए गए हैं। इन्हीं तीन महीनों में भारत में अनेक mega infrastructure projects पर काम शुरू हुआ है। हमने देश में 12 industrial nodes बनाने का भी निर्णय लिया है। हमने देश में 3 करोड़ नए घर बनाने को भी मंजूरी दी है।

भारत की ग्रोथ स्टोरी का एक और notable फैक्टर है और वो है इसकी inclusive spirit, पहले ये सोचा जाता था कि ग्रोथ होती है तो inequality, असमानता भी साथ ही बढ़ती है। लेकिन भारत में इसके विपरीत हो रहा है। भारत में ग्रोथ के साथ inclusion भी हो रहा है। इसी का परिणाम है पिछले 10 साल में Two Fifty million... यानि 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। भारत की तेज प्रगति के साथ हम ये भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि inequality कम हो विकास का लाभ सभी तक पहुंचे।

भारत की ग्रोथ को लेकर जो भी predictions हो रही हैं, उनका कॉन्फिडेंस भी बताता है कि भारत किस दिशा में है। ये पिछले कुछ हफ्तों और महीनों के आंकड़ों में भी देख सकते हैं। पिछले साल हमारी इकॉनॉमी ने हर prediction से बाहर कहीं बेहतर किया है। वर्ल्ड बैंक हो, IMF हो, मूडीज हो, सभी ने भारत से जुड़े फोरकास्ट को upgrade किया है। ये सारे संस्थान कह रहे हैं कि global uncertainty के बावजूद भारत सेवन प्लस रेट के साथ ग्रो करता है। हम भारतीयों को पूरा कॉन्फिडेंस है कि हम इससे भी कहीं better perform करेंगे।

भारत के इस कॉन्फिडेंस के पीछे कुछ ठोस कारण हैं। मैन्युफेक्चरिंग हो या फिर सर्विस सेक्टर आज दुनिया भारत को इन्वेस्टमेंट के लिए पसंदीदा जगह मान रही है। ये कोई co-incidence नहीं है, बल्कि ये बीते 10 साल में हुए बड़े रिफॉर्मस का ही नतीजा है। इन रिफॉर्मस ने भारत के macroeconomic fundamentals को ट्रांसफॉर्म कर दिया है। एक उदाहरण भारत के बैंकिंग रिफॉर्मस का है। हमारे बैंकिंग रिफॉर्मस ने बैंकों की financial conditions को तो मजबूत किया ही है, उनकी lending capacity को भी बढ़ाया है। इसी तरह, GST ने अलग-अलग सेंट्रल और स्टेट Indirect taxes को integrate किया है। इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड यानि IBC ने responsibility, recovery और resolution का नया क्रेडिट कल्चर डेवलप किया है। भारत ने माइनिंग, डिफेंस, स्पेस जैसे अनेक सेक्टर्स को प्राइवेट प्लेयर्स के लिए, हमारे young entrepreneurs के लिए खोला है। हमने FDI policy को liberalise किया, ताकि दुनियाभर के इन्वेस्टर्स के लिए यहां ज्यादा से ज्यादा अवसर बन सकें । हम अपनी logistics cost और time को कम करने के लिए आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर पर फोकस कर रहे हैं। हमने बीते दशक में Infrastructure पर investments को अभूतपूर्व स्केल पर बढ़ाया है।

भारत ने Process Reforms को सरकार की Continuous Activities का हिस्सा बनाया है। हमने 40 हजार से ज्यादा Compliances को खत्म किया, Companies Act को Decriminalize किया। ऐसे दर्जनों provisions थे, जिनके कारण पहले बिजनेस मुश्किल था, हमने उनमें बदलाव किया। कंपनी स्टार्ट करने, बंद करने, क्लियरेंस को आसान बनाने के लिए नेशनल सिंगल विंडो सिस्टम शुरू किया गया। अब हम राज्य स्तर पर प्रोसेस रिफॉर्म को गति देने के लिए राज्य सरकारों को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

भारत में मैन्युफेक्चरिंग को गति देने के लिए हम Production linked Incentives लेकर आए हैं। इसका इंपेक्ट आज बहुत सारे सेक्टर्स में दिख रहा है। अगर मैं बीते 3 साल में ही PLI के impact की बात करुं , तो करीब 1.25 ट्रिलियन यानि सवा लाख करोड़ रुपए का इन्वेस्टमेंट आया है। इससे करीब Eleven Trillion यानि 11 लाख करोड़ रुपए का प्रोडक्शन और सेल्स हुई है। स्पेस और डिफेंस सेक्टर में भी भारत की ग्रोथ शानदार है। इन दोनों सेक्टर्स को open किए अभी ज्यादा टाइम नहीं हुआ है। स्पेस सेक्टर में 200 से ज्यादा स्टार्ट अप्स आ चुके हैं। आज हमारी टोटल डिफेंस मैन्युफेक्चरिंग का 20 परसेंट कंट्रीब्यूशन हमारी प्राइवेट डिफेंस कंपनियों का है। इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर की ग्रोथ स्टोरी तो और भी अद्भुत है। 10 साल पहले तक भारत ज्यादातर मोबाइल फोन का बड़ा इंपोर्टर था। आज Three Hundred thirty million यानि 33 करोड़ से ज्यादा मोबाइल फोन भारत में बन रहे हैं। यानि आप कोई भी सेक्टर देख लें, भारत में Investors के लिए investments और investment पर ज्यादा रिटर्न के बेहतरीन मौके हैं।

भारत का फोकस AI और सेमीकंडक्टर जैसी critical technologies पर भी है। इनमें हम काफी ज्यादा इन्वेस्टमेंट कर रहे हैं। हमारे AI mission से AI के क्षेत्र में research और skills, दोनों में वृद्धि होगी। semiconductor mission के कारण 1.5 ट्रिलियन रुपए यानि डेढ़ लाख करोड़ रुपए का इन्वेस्टमेंट हो रहा है। बहुत जल्द ही भारत के 5 सेमीकंडक्टर प्लांटस, दुनिया के कोने-कोने में मेड इन इंडिया चिप्स पहुंचाने लगेंगे।

भारत affordable intellectual

power का सबसे बड़ा सोर्स है। इसकी गवाही, दुनियाभर की कंपनियों के 1700 से अधिक global capability centres हैं, जो भारत में काम कर रहे हैं। इनमें 2 मिलियन यानि 20 लाख से ज्यादा भारतीय नौजवान दुनिया को highly skilled services दे रहे हैं। भारत अपने इस demographic dividend पर अभूतपूर्व रूप से फोकस कर रहा है। और इसके लिए Education, Innovation, Skills और Research पर खास ध्यान दिया जा रहा है। हमने न्यू नेशनल एजुकेशन पॉलिसी बनाकर इस क्षेत्र में बहुत बड़ा रिफॉर्म किया है। बीते 10 साल में हर हफ्ते एक नई यूनिवर्सिटी और हर दिन दो नए कॉलेज खोले गए हैं। इन 10 सालों में हमारे यहां मेडिकल कॉलेजों की संख्या दो गुनी हो गई है।

Quantity ही नहीं बल्कि हम, quality education पर भी उतना ही बल दे रहे हैं। बीते 10 साल में QS World University Rankings में भारतीय इंस्टीट्यूशन्स की संख्या तीन गुना से ज्यादा हो चुकी है। इस साल के बजट में हमने करोड़ों युवाओं की स्किलिंग और इंटर्नशिप के लिए स्पेशल पैकेज अनाउंस किया है। पीएम इंटर्नशिप स्कीम के तहत पहले दिन ही 111 कंपनियों ने पोर्टल पर रजिस्टर किया है। इस स्कीम के तहत हम एक करोड़ युवाओं को बड़ी कंपनियों में इंटर्नशिप में मदद कर रहे हैं। बीते 10 सालों में भारत का रिसर्च आउटपुट और पेटेंट्स भी तेजी से बढ़े हैं। 10 साल से भी कम समय में, भारत ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स की रैंकिंग में Eighty First (81) से Thirty Ninth (39) स्थान तक पहुंचा है। यहां से हमें और आगे जाना है। अपने रिसर्च इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए भारत ने One Trillion रुपये का रिसर्च फंड भी बनाया है।

आज ग्रीन फ्यूचर, ग्रीन जॉब्स के मामले में भी भारत में और भारत से बहुत उम्मीदें हैं। और उतनी ही आपके लिए इस सेक्टर में opportunities भी हैं। आप सभी ने भारत की प्रेसीडेंसी में हुई G20 Summit को फॉलो किया है। इस समिट की अनेक success story में से एक, ग्रीन ट्रांजिशन को लेकर नया उत्साह भी रहा। G-20 समिट के दौरान ही भारत की पहल पर ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस लॉन्च किया गया। G-20 के सदस्य देशों ने भारत के green hydrogen energy development को मजबूती से समर्थन दिया। भारत में हमने इस दशक के अंत तक 5 Million टन Green Hydrogen के production का टारगेट रखा है। भारत में हम सोलर पावर प्रोडक्शन को भी माइक्रो लेवल पर ले जा रहे हैं।

भारत सरकार ने PM सूर्य घर मुफ्त बिजली स्कीम शुरु की है। ये एक Rooftop Solar स्कीम है, लेकिन इसका स्केल बहुत बड़ा है। रूफटॉप सोलर सेटअप के लिए हम हर फैमिली को फंड कर रहे हैं, सोलर इंफ्रा install करने में भी सपोर्ट कर रहे हैं। अब तक 13 मिलियन यानि 1 करोड़ 30 लाख से ज्यादा Families इसमें रजिस्टर हो चुकी हैं। यानि इतने लोग सोलर पावर प्रोड्यूसर बन चुके हैं। इससे हर फैमिली को on an average, twenty five thousand रुपए की बचत होने वाली है। हर तीन किलोवॉट सोलर बिजली पैदा करने पर, 50-60 टन कार्बन डाई-ऑक्साइड का एमिशन भी रुकेगा। इस स्कीम से करीब 17 लाख Jobs पैदा होंगी, स्किल्ड युवाओं की भी एक बड़ी फौज तैयार होगी। यानि आपके लिए इस सेक्टर में भी इंवेस्टमेंट करने के लिए नए मौके बन रहे हैं।

आज Indian economy एक बहुत बड़े transformational change से गुजर रही है। मजबूत economic fundamentals यहां के आधार पर Indian economy, sustained high growth के रास्ते पर है। भारत आज सिर्फ टॉप पर पहुंचने के लिए ही तैयारी नहीं कर रहा है, बल्कि टॉप पर बने रहने के लिए मेहनत कर रहा है। हर सेक्टर में आज दुनिया की अपार opportunities हैं। ▪

# सरदार पटेल के प्रयासों से ही भारत का वर्तमान नक्शा कायम है - मुख्यमंत्री डॉ.यादव

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से ही भारत का वर्तमान नक्शा कायम है। सरदार पटेल ने 500 से अधिक रियासतों के विलय का महत्वपूर्ण कार्य किया। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर गुजरात में हो रहे विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी हिस्सा ले रहे हैं। सरदार पटेल को देश की एकता और अखंडता के लिए किए गए कार्यों के लिए सदैव स्मरण किया जाएगा। सरदार पटेल ने जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों के साथ आजादी के आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ कदम से कदम मिलाकर कार्य किया।

सरदार पटेल ने सहकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। मध्यप्रदेश सरकार सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे महापुरुषों के आदर्शों को अपनाकर निरन्तर आगे बढ़ रही है। ▪

# संगठन के साथ मिलकर भाजपा सरकार जनहितैषी कार्य कर रही - डॉ. मोहन यादव

मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार पार्टी के प्रदेश संगठन के साथ तालमेल कर लगातार कार्य कर रही है। संगठन पर्व की तरह सक्रिय सदस्यता में भी मध्यप्रदेश भाजपा इतिहास बनाएगी।

मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार पार्टी संगठन से तालमेल कर लगातार विकास कार्यों को आगे बढ़ा रही है। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार पार्टी के प्रदेश संगठन के साथ तालमेल कर लगातार कार्य कर रही है। संगठन पर्व की तरह सक्रिय सदस्यता में भी मध्यप्रदेश भाजपा इतिहास बनाएगी। पार्टी कार्यकर्ता संगठन पर्व के साथ सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचाऐं। संगठन पर्व में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में मध्यप्रदेश संगठन ने ऐतिहासिक कार्य किया है। कांग्रेस मध्यप्रदेश के साथ देशभर में तेजी से घट रही है, वह भी अपने लीडरशिप के कारण। मध्यप्रदेश के संगठन ने सदस्यता अभियान में चमत्कार कर दिया है। जैसे मध्यप्रदेश संगठन ने तय किया है कि 100 प्राथमिक सदस्य बनाने वाले कार्यकर्ता को ही सक्रिय सदस्यता दी जाएगी।

भाजपा में स्वर्गीय सुंदरलाल पटवा जी और स्वर्गीय कैलाश जोशी के बाद कई पीढ़ी आ गई, लेकिन कांग्रेस में उसी जमाने के दिग्विजय सिंह और कमलनाथ चल रहे हैं, इसीलिए कांग्रेस समाप्त हो रही है। भाजपा ने नए खून को आगे बढ़ाने का कार्य किया, इसी का परिणाम है कि आज पंच-सरपंच से लेकर जिला, राज्य और केंद्र तक में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। कांग्रेस ने देश और समाज को जाति के आधार पर बांटने व जहर घोलने का कार्य किया है। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार संस्कृति व समाज को जोड़कर कार्य कर रही है। कार्यकर्ताओं की ताकत से ही मध्यप्रदेश में लगातार भाजपा की सरकार बन रही है। दशहरा पर शस्त्र पूजन का कार्य समाज के साथ मिलकर किया गया है। सरकार ने समाज के साथ मिलकर गोवर्धन पूजा करने का निर्णय लिया है। ▪

## कार्यकर्ताओं की तपस्या से भाजपा फिर एक बार दुनिया का सबसे बड़ा राजनैतिक दल बना- विष्णुदत्त शर्मा

बूथ कार्यकर्ताओं से लेकर पार्टी के शीर्ष नेतृत्व और सदस्यता टोली ने जिस तरह से योजना बनाकर काम किया, उसकी बदौलत प्रदेश भाजपा अब तक 1.60 लाख से अधिक सदस्य बना चुकी है। हमने प्रत्येक बूथ पर 200 सदस्यों का लक्ष्य रखा था। उस लक्ष्य को तो हमने पार कर ही लिया है, बचे हुए दिनों में हम केंद्र से मिले लोकसभा चुनाव में मिले 2.24 करोड़ मतों के 70 प्रतिशत यानी लगभग 1.68 करोड़ सदस्यता का लक्ष्य भी हासिल कर लेंगे। अभी जो 1.60 करोड़ सदस्यता हुई है, उसमें से 1.30 करोड़ लोगों ने विधिवत फॉर्म भरकर भाजपा की सदस्यता ली है, जो एक इतिहास है।

देश में अब तक 10 करोड़ से अधिक सदस्य बन चुके हैं और राष्ट्रीय संगठन महामंत्री जी ने यह कहते हुए पार्टी कार्यकर्ताओं को बधाई दी है कि हम एक बार फिर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को पीछे छोड़कर दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल बन गए हैं। संगठन पर्व में पार्टी के उत्साही कार्यकर्ताओं ने मीडिया द्वारा चुनौती बताए जा रहे जिलों और विधानसभाओं में भी अच्छा काम किया है और यही वजह है कि हम भोपाल मध्य, भोपाल उत्तर तथा छिंदवाड़ा जैसी विधानसभाओं में भी सदस्यता का इतिहास बनाने में सफल हुए। मध्यप्रदेश में सदस्यता अभियान की तरह सक्रिय सदस्यता में भी इतिहास बनाया जाएगा। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार धर्म व संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार गोवर्धन पूजा को प्रदेश भर में सरकार के स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया है। समाज को गौशाला से जोड़ने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यह निर्णय बहुत स्वागत योग्य है। ▪

# हम दुश्मन की बातों पर नहीं, हमारी सेनाओं के संकल्पों पर भरोसा करते हैं

- **दुर्गम स्थानों पर डटे रहकर हमारी रक्षा करने वाले हमारे सुरक्षाकर्मियों पर हमें गर्व है।**

देश के बॉर्डर पर सरक्रीक के पास, कच्छ की धरती पर, देश की सेनाओं के साथ, सीमा सुरक्षाबल के साथ आपके बीच, दीपावली... ये मेरा सौभाग्य है, आप सभी को दीपावली की बहुत-बहुत बधाई!

जब मैं दीपावली का पर्व देश की सेनाओं के साथ, सीमा सुरक्षाबल के साथ के बीच मनाता हूं तो मेरी दीपावली की मिठास कई गुना बढ़ जाती है और इस बार तो ये दीपावली भी बहुत खास है। हर दीपावली का अपना एक महत्व होता है, इस बार खास क्या है? खास है- अयोध्या में प्रभु श्री राम 500 साल बाद फिर से अपने भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं। मां भारती की सेवा में तैनात देश के हर जवान को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। इन शुभकामनाओं में 140 करोड़ देशवासियों का कृतज्ञ भाव भी शामिल है, उनका आभार भी शामिल है।

मातृभूमि की सेवा का ये अवसर बड़े सौभाग्य से मिलता है। ये सेवा आसान नहीं है। ये मातृभूमि को सर्वस्व मानने वाले मतवालों की साधना है। ये मां भारती के लाड़लों, लाड़लियों, उनका तप है, उनकी तपस्या है। कहीं हिमालय की बर्फ और ग्लेशियर का शून्य से नीचा तापमान, कहीं नसों को जमाने वाली ठंडी रातें, कहीं गर्मियों में तपता हुआ रण का रेगिस्तान, आग बरसता हुआ सूरज, कहीं धूल भरी रेतीली आंधियां, कहीं दल-दल की चुनौतियां और कहीं उफान लेता हुआ समंदर- ये साधना हमारे जवानों को उस हद तक तपाती है जहां हमारे देश का सैनिक फौलाद बनकर चमकता है। एक ऐसा फौलाद जिसे देखकर दुश्मन की रूह दहल उठती है। दुश्मन भी आपको देखकर सोचता है कि जो ऐसे क्रूरतम प्रहारों से विचलित नहीं हुआ, उसे भला कौन हरा पाएगा। आपकी ये अटल इच्छा शक्ति, आपका ये अथाह शौर्य, पराक्रम की पराकाष्ठा, देश जब आपको देखता है तो उसे सुरक्षा और शांति की गारंटी दिखाई देती है। दुनिया जब आपको देखती है तो उसे भारत की ताकत दिखाई देती है और दुश्मन जब आपको देखता है तो उसे बुरे मंसूबों का अंत दिखाई देता है। आप जब जोश में दहाड़ते हैं तो आतंक के आका कांप जाते हैं। ये है मेरी सेना का, मेरे सुरक्षाबलों का पराक्रम, मुझे गर्व है हमारे जवानों ने हर मुश्किल से मुश्किल मौके पर अपने सामर्थ्य को सिद्ध किया है।

**मातृभूमि की सेवा का ये अवसर बड़े सौभाग्य से मिलता है। ये सेवा आसान नहीं है। ये मातृभूमि को सर्वस्व मानने वाले मतवालों की साधना है। ये मां भारती के लाड़लों, लाड़लियों, उनका तप है, उनकी तपस्या है।**

कहीं हिमालय की बर्फ और ग्लेशियर का शून्य से नीचा तापमान, कहीं नसों को जमाने वाली ठंडी रातें, कहीं गर्मियों में तपता हुआ रण का रेगिस्तान, आग बरसता हुआ सूरज, कहीं धूल भरी रेतीली आंधियां, कहीं दल-दल की चुनौतियां और कहीं उफान लेता हुआ समंदर- ये साधना हमारे जवानों को उस हद तक तपाती है जहां हमारे देश का सैनिक फौलाद बनकर चमकता है। एक ऐसा फौलाद जिसे देखकर दुश्मन की रूह दहल उठती है।

गुजरात का समुद्री तट देश की बहुत बड़ी ताकत है। इसलिए यहां की समुद्री सीमा भारत विरोधी षड्यंत्रों का सबसे ज्यादा सामना करती हैं। कच्छ के इसी क्षेत्र में भारत की अखंडता का उद्घोष करती ये सरक्रीक भी है, अतीत में इस क्षेत्र को रणभूमि बनाने की कोशिशें भी हुईं। देश जानता है सर क्रीक पर दुश्मन की नापाक नजरें कब से टिकी हैं, लेकिन देश निश्चिंत भी है क्योंकि सुरक्षा में आप तैनात हैं। दुश्मन को भी पता है, 1971 के युद्ध में किस तरह आपने मुंहतोड़ जवाब दिया था। इसलिए हमारी नेवी की मौजूदगी में सर क्रीक और कच्छ की तरफ अब कोई आंख उठाने की भी हिम्मत नहीं करता है।

आज देश में एक ऐसी सरकार है जो देश की सीमा के एक इंच से भी समझौता नहीं कर सकती। एक समय था जब डिप्लोमेसी के नाम पर सर क्रीक को छल से हड़पने की पॉलिसी पर काम हो रहा था। मैंने तब गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में भी देश की आवाज को बुलंद किया था और इस क्षेत्र में आज मैं पहली बार नहीं आया। मैं इस क्षेत्र से परिचित रहा हूं। कई बार आया हूं, बहुत आगे तक जाकर के आया हूं। इसलिए आज जब हमें जिम्मेदारी मिली है तो हमारी नीतियां, हमारी सेनाओं के संकल्पों के हिसाब से बनती हैं। हम दुश्मन की बातों पर नहीं, हमारी सेनाओं के संकल्पों पर भरोसा करते हैं।

21वीं सदी की जरूरतों को देखते हुए, आज हम अपनी सेनाओं को, हमारे सुरक्षाबलों को आधुनिक संसाधनों से लैस कर रहे हैं। हम हमारी सेनाओं का विश्व की सबसे आधुनिक मिलिट्री फोर्सेस की कतार में खड़ा कर रहे हैं। हमारे इन प्रयासों का आधार है रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत... अभी कुछ दिन पहले, यहीं गुजरात के वडोदरा में सी295 फैक्ट्री का उद्घाटन हुआ है। आज विक्रांत जैसा मेड इन इंडिया एयरक्राफ्ट, एयरक्राफ्ट कैरियर देश के पास है। आज भारत में अपनी सबमरीन बनाई जा रही है। आज हमारा तेजस फाइटर प्लेन वायु सेना की ताकत बन रहा है। हमारा अपना 5th Generation Fighter, फाइटर एयरक्राफ्ट बनाने का काम भी शुरू हो चुका है। पहले भारत की पहचान हथियार मंगाने वाले देश की थी, आज भारत दुनिया के कितने ही देशों को डिफेंस उपकरण एक्सपोर्ट कर रहा है। पिछले 10 वर्षों में हमारा रक्षा निर्यात 30 गुना बढ़ गया है।

सरकार के इस vision को सफल बनाने में हमारी सेनाओं और सैन्य बलों के सहयोग की भी बड़ी भूमिका है। हमारे सुरक्षाबलों की बहुत बड़ी भूमिका है। मैं देश की सेनाओं को, मैं देश के सुरक्षाबलों को बधाई दूंगा कि उन्होंने 5 हजार से अधिक सैन्य उपकरणों की लिस्ट बनाई है, जो वो अब विदेश से नहीं खरीदेंगे। इससे सैन्य क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत अभियान को नई गति भी मिली है।

आज जब new age warfare की बात होती है, तो ड्रोन टेक्नोलॉजी उसका एक अहम टूल बन गई है। हम देख रहे हैं, युद्ध में शामिल देश आज ड्रोन टेक्नोलॉजी का जमकर इस्तेमाल कर रहे हैं। ड्रोन से निगरानी हो रही है, ड्रोन से खुफिया जानकारी जुटाई जा रही है। किसी व्यक्ति या जगह की पहचान करने में ड्रोन का उपयोग हो रहा है। ड्रोन सामान पहुंचाने में मदद कर रहे हैं। ड्रोन का इस्तेमाल हथियार के रूप में भी हो रहा है।

इतना ही नहीं, ड्रोन पारंपरिक एयर डिफेंस के लिए भी चुनौती बनकर के उभर रहा है। ऐसे में भारत भी ड्रोन टेक्नोलॉजी की मदद से अपनी सेनाओं को, अपने सुरक्षाबलों को सशक्त कर रहा है। सरकार आज तीन सेनाओं के उपयोग में आने वाले प्रिडेटर ड्रोन खरीद रही हैं। ड्रोन के इस्तेमाल से जुड़ी स्ट्रेटजी बनाई जा रही है और मुझे खुशी है कि कई भारतीय कंपनियां पूरी तरह से स्वदेशी ड्रोन में भी लगी हैं। ढेर सारे स्टार्टअप्स मैदान में आए हैं।

आज युद्ध की प्रकृति बदल रही है। आज सुरक्षा के विषय भी नए-नए पनपते जा रहे हैं। भविष्य की चुनौतियां और जटिल होंगी। इसलिए बहुत जरूरी है कि तीनों सेनाओं की क्षमताओं को, हमारे सुरक्षाबलों की क्षमताओं को एक-दूसरे से जोड़ दिया जाए और खासकर कि हमारी तीनों सेनाओं के लिए, उनका प्रदर्शन इस जोड़ने के प्रयास के कारण, उनका सामर्थ्य कई गुना बेहतर हो जाएगा। और मैं कभी-कभी कहता हूं कि एक आर्मी, एक एयरफोर्स और एक नेवी, हमें एक-एक-एक नजर आते हैं। लेकिन उनका जब संयुक्त अभ्यास होता है, तो एक-एक-एक नहीं, एक सौ ग्यारह नजर आते हैं। सेनाओं के आधुनिकीकरण की इसी सोच के साथ, Chief of Defence Staff, CDS की नियुक्ति की गई। इसने देश की सेनाओं को मजबूत करने में बड़ी भूमिका निभाई। अब हम Integrated Theatre Command की दिशा में बढ़ रहे हैं। Integrated Theatre Command के लिए एक ऐसा मेकेनिज्म तैयार कर लिया गया है जिससे सेना के तीनों अंगों के बीच और बेहतर तालमेल होगा।

हमारा संकल्प है Nation First, राष्ट्र प्रथम... राष्ट्र की शुरुआत उसकी सीमाओं से होती है। इसलिए बॉर्डर इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास देश की सबसे प्राथमिकताओं में है। बीआरओ ने 80 हजार किलोमीटर से ज्यादा सड़क का निर्माण किया है। लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश

में भी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण सड़कें बनाई गई हैं। पिछले 10 वर्षों में बीआरओ ने 400 के आस-पास बड़े पुल बनाए हैं। आप जानते हैं, देश के सबसे दूरदराज के इलाकों में All Weather Connectivity के लिए, हमारी सेनाओं के लिए टनल कितनी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए पिछले 10 वर्षों में अटल और सेला जैसी सामरिक महत्व की अनेकों बड़ी सुरंगों का निर्माण पूरा किया है। बीआरओ देश के अलग-अलग हिस्सों में टनल बनाने के काम को तेज गति से पूरा कर रहा है।

हमने सीमावर्ती गांवों को, आखिरी गांव मानने की सोच भी बदली है। आज हम उन्हें देश का प्रथम गांव कहते हैं, आखिरी गांव नहीं वो प्रथम गांव है। Vibrant Village योजना के तहत देश के प्रथम गांवों का विकास किया जा रहा है। Vibrant Village यानी सीमा पर बसे ऐसे Vibrant गांव, जहां Vibrant भारत के प्रथम दर्शन हों। हमारा देश का तो ये विशेष सौभाग्य है कि हमारे ज्यादातर सीमावर्ती इलाकों को प्रकृति ने विशेष अविष्कार दिया है। वहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। हमें उसे तराशना है, निखारना है। इसके जरिए इन गांवों में बसे नागरिकों का जीवन बेहतर होगा। उन्हें नए अवसर मिलेंगे। Vibrant Village अभियान के जरिए हम ये होता देख रहे हैं। आप ही के यहां आसपास के जो दूरदराज के आखिरी गांव कहे जाते थे, जो आज पहले गांव हैं वहां seaweed का काम आपकी नजरों के आगे तेजी से बढ़ रहा है। बहुत बड़ा आर्थिक नया एक क्षेत्र खुल रहा है। यहां mangroves के पीछे एक बड़ी ताकत हम लगा रहे हैं। वो देश के पर्यावरण के लिए तो एक बहुत सुनहरा अवसर है लेकिन ये mangroves के जो जंगल तैयार होंगे, वो यहां के टूरिस्टों के लिए और जैसे धोरडो में रणोत्सव ने पूरे देश और दुनिया को आकर्षित किया है, देखते ही देखते ये इलाका टूरिस्टों का स्वर्ग बनने वाला है। आपकी आंखों के सामने बनने वाला है।

इस vision को बढ़ाने के लिए हमारी सरकार के मंत्री भी सीमावर्ती Vibrant Village में जा रहे हैं। आज वो Vibrant Village में रूकते हैं जहां ज्यादा से ज्यादा समय बिताते हैं। ऐसे में देश के लोगों में भी इन गांवों के लेकर के आकर्षण बढ़ रहा है, उत्सुकता बढ़ रही है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ एक और पहलू भी जुड़ा हुआ है जिसकी उतनी चर्चा नहीं होती है। ये है बॉर्डर टूरिज्म और इसमें हमारे कच्छ के पास अपार संभावनाएं हैं। इतनी समृद्ध विरासत, आकर्षण और आस्था के इतने अद्भुत केंद्र और प्रकृति की अद्भुत देन। गुजरात में कच्छ और खम्भात की खाड़ी के mangrove forest बहुत महत्वपूर्ण हैं। गुजरात के समुद्री तटों पर समुद्री जीवों और वनस्पतियों का पूरा इकोसिस्टम है। सरकार ने भी mangrove के जंगलों के विस्तार के लिए कई कदम उठाए हैं। पिछले वर्ष लॉन्च की गई मिष्टी योजना पर सरकार तेजी से काम कर रही है।

UNESCO World Heritage Sites में हमारा धोलावीरा ये भी शामिल है और वो तो हमारे देश के हजारों साल के सामर्थ्य की पहचान है। धोलावीरा में सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष बताते हैं कि हजारों वर्ष पूर्व वो शहर कितने व्यवस्थित तरीके से बसा हुआ था। यहीं गुजरात के समुद्र से थोड़ी दूरी पर लोथल जैसे व्यापारिक केंद्रों ने भी एक समय में भारत की समृद्धि के अध्याय लिखे। लखपत में गुरु नानक देवजी की चरण रज है। कच्छ का कोटेश्वर महादेव मंदिर हो। माता आशापुरा का मंदिर हो। काला डूंगर पहाड़ी पर भगवान दत्तात्रेय का साक्षात दर्शन होता हो या फिर कच्छ का रण उत्सव या सरक्रीक को देखने का उत्साह, कच्छ के एक जिले में ही पर्यटन का इतना potential है कि टूरिस्ट को पूरा हफ्ता भी कम पड़ जाए। उत्तर गुजरात की सीमा पर नाडाबेट में हमने देखा है कि कैसे बॉर्डर टूरिज्म लोगों में छाया हुआ है। हमें ऐसी ही हर संभावना को साकार करना है। जब ऐसे स्थानों पर देश के अलग-अलग हिस्सों पर पर्यटक आते हैं, वो भारत के वो दो हिस्से आपस में कनेक्ट हो जाते हैं। वो पर्यटक अपने साथ राष्ट्रीय एकता का प्रवाह लेकर आता है और राष्ट्रीय एकता की ऊर्जा लेकर जाता है और यहां एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को जीवंत कर देता है। अपने क्षेत्र में जाकर के भी कर देता है। यही भावना हमारी राष्ट्र सुरक्षा का मजबूत आधार तैयार करती है। इसलिए कच्छ और दूसरे सीमावर्ती इलाकों को हमें विकास के नए मुकाम तक लेकर के जाना है। जब हमारे सीमावर्ती क्षेत्र विकसित होंगे, वहां सुविधाएं होंगी तो इससे यहां तैनात हमारे जवानों का Life Experience भी बेहतर होगा।

हमारा राष्ट्र जीवंत चेतना है जिसे हम मां भारती के रूप में पूजते हैं। हमारे जवानों के तप और त्याग के कारण ही आज देश सुरक्षित है। देशवासी सुरक्षित हैं, सुरक्षित राष्ट्र ही प्रगति कर सकते हैं। इसलिए आज जब हम विकसित भारत के लक्ष्य की ओर इतनी तेजी से बढ़ रहे हैं तो इसमें आप सब इस स्वप्न के रक्षक हैं। आज हर देशवासी अपना शत-प्रतिशत देकर राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे रहा है क्योंकि उसे आप पर भरोसा है। मुझे विश्वास आपका ये शौर्य इसी तरह भारत के विकास को बल देता रहेगा। ▪

# प्रधानमंत्री जी सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए कार्य कर रहे- विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में तेजी से काम किया।

**यही कारण है कि आज महिलाएं मान-सम्मान के साथ फाइटर जेट प्लेन उड़ाने में भी सक्षम नजर आती हैं और आत्मनिर्भरता के लिए आगे बढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ती।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी गरीब कल्याण के कार्यों से सामाजिक परिवर्तन लाने का कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी गरीब के बेटे हैं और जब वे प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने हर गरीब मां की आंखों से आंसू पोछने के लिए उज्ज्वला योजना में गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए। आयुष्मान योजना में हर गरीब को पांच लाख रूपए के निःशुल्क इलाज की गारंटी उपलब्ध कराई। प्रधानमंत्री आवास योजना में हर गरीब को पक्के आवास उपलब्ध करा रहे हैं। तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद तीन करोड़ नए प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति प्रदान की है। हर गरीबों के आंखों में खुशी लाने का कार्य कर रहे हैं, यही सामाजिक परिवर्तन लाने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा लाड़ली बहना योजना में 1 करोड़ 29 लाख बहनों को 1250 रूपए प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। लाड़ली लक्ष्मी योजना में 46 लाख बेटियों को पैदा होते ही लखपति बनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में तेजी से काम किया। यही कारण है कि आज महिलाएं मान-सम्मान के साथ फाइटर जेट प्लेन उड़ाने में भी सक्षम नजर आती हैं और आत्मनिर्भरता के लिए आगे बढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ती। जी-20 सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने दुनिया को संदेश दिया कि आने वाले समय में विकास महिलाओं पर आधारित होगा। यही कारण है कि अब दुनिया उसे आत्मसात कर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री जी ने देश में महिलाओं की 50 प्रतिशत भागीदारी को देखते हुए संसद-विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की। प्रदेश में 2028 में विधानसभा और 2029 में लोकसभा का चुनाव होगा तो महिलाओं की संख्या 33 प्रतिशत होगी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज महिलाएं लखपति और ड्रोन दीदी बनकर मिसाल पेश कर रही हैं।

कांग्रेस ने हमेशा झूठ और छल की राजनीति की है, लेकिन बेटियों को बचाने और पढ़ाने का काम अगर किसी ने किया है तो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और प्रदेश की भाजपा सरकारों ने किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना को एक मिशन के तौर पर लिया है। प्रदेश में 2003 से पहले कांग्रेस की सरकार में बेटियों की स्थिति दयनीय थी।

प्रदेश में शिशु लिंगानुपात ठीक नहीं था, पहले 1 हजार बेटों पर केवल 912 बेटियां होती थी, लेकिन अब 1 हजार बेटों पर 978 बेटियां होती हैं। प्रदेश की भाजपा सरकार ने लाड़ली लक्ष्मी योजना बनाई और बेटियां पैदा होती ही लखपति बनने लगी। अब देश-प्रदेश में बेटियों के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं के कारण उन्हें अभिशाप नहीं वरदान माना जाता है। देश में स्व-सहायता समूह सामान्य नहीं देश की बड़ी ताकत है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के देश की कमान संभालने के बाद महिलाओं को लेकर बड़ा सामाजिक बदलाव हुआ। तीन तलाक की समाप्ति हुई और महिलाओं को सम्मान के साथ-साथ आगे बढ़ने का अवसर मिला। ▪

# व्यवहार में यथार्थवादी और ध्येय में राष्ट्रवादी थे सरदार पटेल

**इस बार का राष्ट्रीय एकता दिवस अद्भुत संयोग लेकर आया है। एक तरफ हम एकता का उत्सव मना रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ दीपावली का भी पावन पर्व है।**

दीपावली, दीपों के माध्यम से, पूरे देश को जोड़ती है, पूरे देश को प्रकाशमय कर देती है। और अब तो दीपावली का पर्व भारत को दुनिया से भी जोड़ रहा है। अनेक देशों में इसे राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाया जा रहा है।

- **राष्ट्र को एकजुट करने में सरदार पटेल के अमूल्य योगदान का राष्ट्रीय एकता दिवस सम्मान करता है, यह दिन हमारे समाज में एकता के बंधन को मजबूत करे।**
- **भारत उनके दृष्टिकोण और राष्ट्र के प्रति अटूट प्रतिबद्धता से प्रेरित है, उनके प्रयास एक मजबूत राष्ट्र की दिशा में काम करने के लिए हमें प्रेरित करते रहते हैं।**
- **सरदार पटेल की 150वीं जयंती वर्ष को अगले 2 वर्षों तक पूरे देश में एक उत्सव के रूप में मनाया जाएगा, इससे 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का हमारा संकल्प और मजबूत होगा।**
- **महाराष्ट्र के ऐतिहासिक रायगढ़ किले की छवि केवड़िया के एकता नगर में भी दिखाई देती है, जो सामाजिक न्याय, देशभक्ति और राष्ट्र प्रथम के मूल्यों की पावन भूमि रही है।**
- **एक सच्चे भारतीय होने के नाते हम सभी देशवासियों का यह कर्तव्य है कि हम जोश और उत्साह के साथ देश की एकता के लिए हर संभव प्रयास करें।**
- **पिछले 10 वर्षों में देश में सुशासन के नए मॉडल ने भेदभाव की हर गुंजाइश को खत्म कर दिया है।**
- **पिछले कुछ वर्षों में भारत ने 'विविधता में एकता' के साथ जीने के हर प्रयास में सफलता पाई है।**
- **देश का हर नागरिक खुश है कि आजादी के सात दशक बाद एक देश, एक संविधान का संकल्प पूरा हुआ है।**
- **पिछले 10 वर्षों में हमने कई ऐसे मुद्दों का समाधान किया है जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा थे।**
- **हमारे अथक प्रयासों से हमारे आदिवासी भाई-बहनों को विकास के साथ-साथ बेहतर भविष्य का विश्वास भी मिला है।**
- **हमारे सामने एक ऐसा भारत है जिसके पास दृष्टि, दिशा और दृढ़ संकल्प है।**
- **हमें कुछ लोगों से सावधान रहना होगा जो भारत की बढ़ती ताकत और एकता की भावना से परेशान हैं, जो देश को तोड़ना चाहते हैं और समाज को बांटना चाहते हैं।**

कितना अद्भुत है, कितना प्रेरक है। 15 अगस्त और 26 जनवरी की तरह ही...31 अक्टूबर को होने वाला राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन... पूरे देश को नई ऊर्जा से भर देता है।

इस बार का राष्ट्रीय एकता दिवस अद्भुत संयोग लेकर आया है। एक तरफ हम एकता का उत्सव मना रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ दीपावली का भी पावन पर्व है। दीपावली, दीपों के माध्यम

**इस बार का एकता दिवस एक और वजह से भी विशेष है। सरदार पटेल का डेढ़ सौ वां जन्मजयंती वर्ष शुरु हो रहा है।**

आने वाले 2 वर्षों तक देश, सरदार पटेल की डेढ़ सौ वीं जन्म जयंती का उत्सव मनाएगा। ये भारत के प्रति, उनके असाधारण योगदान के प्रति देशवासियों की कार्यांजलि है।

से, पूरे देश को जोड़ती है, पूरे देश को प्रकाशमय कर देती है। और अब तो दीपावली का पर्व भारत को दुनिया से भी जोड़ रहा है। अनेक देशों में इसे राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाया जा रहा है।

इस बार का एकता दिवस एक और वजह से भी विशेष है। सरदार पटेल का डेढ़ सौ वां जन्मजयंती वर्ष शुरु हो रहा है। आने वाले 2 वर्षों तक देश, सरदार पटेल की डेढ़ सौ वीं जन्म जयंती का उत्सव मनाएगा। ये भारत के प्रति, उनके असाधारण योगदान के प्रति देशवासियों की कार्यांजलि है। दो वर्ष का ये उत्सव... एक भारत, श्रेष्ठ भारत के हमारे संकल्प को मजबूत करेगा। ये अवसर हमें सीख देगा कि असंभव से दिखने वाले काम को भी संभव बनाया जा सकता है। जब भारत को आजादी मिली थी, तो दुनिया में कुछ लोग थे, जो भारत के बिखरने का आकलन कर रहे थे, और अभी हमने सरदार साहब की वाणी में उसका विस्तार से बयान सुना। उन लोगों को जरा भी उम्मीद नहीं थी कि सैकड़ों रियासतों को एकजुट करके, फिर से एक भारत का निर्माण हो पाएगा। लेकिन सरदार साहब ने ये करके दिखाया। ये इसलिए संभव हुआ क्योंकि सरदार साहब... व्यवहार में यथार्थवादी... संकल्प में सत्यवादी... कार्य में मानवतावादी... और ध्येय में राष्ट्रवादी थे।

आज हमारे पास छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रेरणा भी है। उन्होंने अक्रांताओं को खदेड़ने के लिए, सबको एक किया। ये महाराष्ट्र का रायगढ़ किला, आज भी साक्षात वो गाथा कहता है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने रायगढ़ के किले से राष्ट्र के अलग-अलग विचारों को एक उद्देश्य के लिए एकजुट किया था। एकता नगर में हम, रायगढ़ के उस ऐतिहासिक किले के, उसकी छवि हमारे सामने प्रेरणा का प्रतीक बनके खड़ी है। रायगढ़ किला, सामाजिक न्याय, देशभक्ति और राष्ट्र प्रथम के संस्कारों की पवित्र भूमि रहा है। आज इसी पृष्ठभूमि में हम विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि के लिए यहां एकजुट हुए हैं।

बीते 10 वर्ष तक, भारत की एकता और अखंडता के लिए ये कालखंड अभूतपूर्व उपलब्धियों से भरा रहा है। आज सरकार के हर काम, हर मिशन में, राष्ट्रीय एकता की प्रतिबद्धता दिखती है। इसका एक बड़ा उदाहरण है- हमारा ये एकता नगर... यहां स्टैच्यू ऑफ यूनिटी है... और इसके सिर्फ नाम में यूनिटी है ऐसा नहीं है, इसके निर्माण में भी यूनिटी है। इसको बनाने के लिए पूरे देश के कोने-कोने से, देश के किसानों के पास से, खेत में उपयोग किए हुए औजार का लोहा पूरे देश से यहां लाया गया, क्योंकि सरदार साहब लोहपुरूष थे, किसान पुत्र थे। इसलिए लोहा और वो भी खेत में उपयोग किए औजार वाला लोहा यहां लाया गया। यहां देश के हर कोने से वहां की मिट्टी लाई गई है। इसका निर्माण स्वयं में एकता की अनुभूति कराता है। यहां पर एकता नर्सरी बनी है। यहां विश्व वन है... जहां दुनिया के हर महाद्वीप के पेड़-पौधे हैं। यहां चिल्ड्रन न्यूट्रिशन पार्क है, जहां पूरे देश की हेल्दी फूड हैबिट्स के दर्शन एक ही जगह पर होते हैं। यहां आरोग्य वन है, जहां देश की अलग हिस्सों की आयुर्वेद परंपरा का, पौधों का समावेश है। इतना ही नहीं, यात्रियों के लिए यहां एकता मॉल भी है, जहां देशभर के हैंडिक्राफ्ट्स एक ही छत के नीचे मिलते हैं।

ये एकता मॉल सिर्फ यहीं पर है ऐसा नहीं, देश के हर राज्य की राजधानी में एकता मॉल के निर्माण को प्रोत्साहन दे रहे हैं। एकता का यही संदेश हर वर्ष होने वाली एकता दौड़ से भी मजबूत होता है।

एक सच्चे भारतीय होने के नाते, हम सभी का कर्तव्य है कि हम देश की एकता के हर प्रयास को सेलीब्रेट करें, उत्सव, उमंग से भर दें। ऊर्जा, आत्मविश्वास, हर पल नए संकल्प, नई उम्मीद, नई उमंग यही तो सेलिब्रेशन है। जब हम भारत की भाषाओं पर बल देते हैं, उससे भी एकता की एक मजबूत कड़ी हमें जोड़ती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हमने भारतीय भाषाओं में पढ़ाई पर विशेष बल दिया है, और आप सबको पता है और देश ने गौरव भी अनुभव किया, दुनिया भर में उसे उत्सव के रूप में मनाया गया, वो कौन सा निर्णय था। हाल में ही, सरकार ने मराठी भाषा, बांग्ला भाषा, असमिया भाषा, पाली भाषा और प्राकृत भाषा, इन भाषाओं को शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा दिया है। सरकार के इस फैसले का सभी ने दिल से स्वागत किया है। और हम हमारी भाषा को मातृ-भाषा कहते हैं और जब मातृ भाषा का सम्मान होता है ना... तो हमारी अपनी माता का भी सम्मान होता है, हमारी धरती माता का सम्मान होता है, और भारत माता का सम्मान होता है। भाषा की तरह ही... आज देश भर में चल रहे कनेक्टिविटी के काम, जोड़ने के काम भी देश की एकता

को मजबूत कर रहे हैं। रेल हो, रोड हो, हाईवे हो और इंटरनेट जैसे आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर ने, गांव को शहरों से जोड़ा है। जब कश्मीर और नॉर्थ ईस्ट की राजधानियां रेल से जुड़ती हैं... जब लक्षद्वीप और अंडमान-निकोबार द्वीप अंडर-सी केबल से तेज इंटरनेट से जुड़ते हैं... जब पहाड़ों पर लोग मोबाइल नेटवर्क से जुड़ते हैं... तब विकास की दौड़ में पीछे छूट जाने का भाव समाप्त हो जाता है, आगे बढ़ने की नई ऊर्जा अपने आप जन्म लेती है। देश की एकता का भाव सशक्त होता है।

पहले की सरकारों की नीतियों में और नीयत में भेदभाव का भाव भी देश की एकता को कमजोर करता रहा है। बीते 10 वर्षों में देश में सुशासन के नए मॉडल ने भेदभाव की हर गुंजाइश समाप्त की है... हमने सबका साथ, सबके विकास का रास्ता चुना है। आज हर घर जल इस योजना से बिना भेदभाव जल पहुंचाने का प्रयास हो रहा है। आज पीएम किसान सम्मान निधि सबको मिलती है, तो सबको बिना भेदभाव मिलती है। आज पीएम आवास के घर मिलते हैं... तो सबको बिना भेदभाव मिलते हैं। आज आयुष्मान योजना का लाभ मिलता है... तो बिना भेदभाव हर पात्र व्यक्ति को इसका फायदा होता है... सरकार की इस अप्रोच ने समाज में, लोगों में दशकों से व्याप्त असंतोष को समाप्त किया है। इस वजह से लोगों का सरकार पर भरोसा बढ़ा है, देश की व्यवस्थाओं पर भरोसा बढ़ा है। विकास और विश्वास की यही एकता, एक भारत श्रेष्ठ भारत के निर्माण को गति देती है। और मुझे पूरा विश्वास है, हमारी हर योजना में, हमारी हर नीति में और हमारी नीयत में एकता हमारी प्राणशक्ति है... इसे देखकर के, सुनकर के सरदार साहब की आत्मा जहां भी होगी हमें अवश्य आशीर्वाद देती होगी।

पूज्य बापू महात्मा गांधी कहा करते थे... ''विविधता में एकता को जीने के हमारे सामर्थ्य की निरंतर परीक्षा होगी... गांधी जी ने कहा था और आगे कहा था... इस परीक्षा को हमें हर हाल में पास करते रहना है''। बीते 10 साल में भारत ने विविधता में एकता को जीने के हर प्रयास में सफलता पाई है। सरकार ने अपनी नीतियों और निर्णयों में एक भारत की भावना को लगातार मजबूत किया है। आज One Nation, One Identity... यानि आधार की सफलता हम सब देख रहे हैं और दुनिया इसकी चर्चा भी करती है। पहले भारत में अलग-अलग टैक्स सिस्टम थे। हमने One Nation, One Tax सिस्टम... GST बनाया। हमने One Nation, One Power Grid से देश के पावर सेक्टर को मजबूत किया, वरना एक वक्त था कहीं बिजली तो होती थी, कहीं अंधेरा होता था, लेकिन बिजली पहुंचाने के लिए grid टुकड़ों में बटी पड़ी थी, हमने One Nation, One Grid इस संकल्प को पूरा किया। हमने One Nation, One Ration Card से गरीबों को मिलने वाली सुविधाओं को एक साथ जोड़ दिया, एकीकृत किया। हमने आयुष्मान भारत के रूप में, One Nation, One Health Insurance की सुविधा देश के जन-जन को दी है।

एकता के हमारे इन प्रयासों के तहत ही, अब हम One Nation, One Election पर काम कर रहे हैं, जो भारत के लोकतंत्र को मजबूती देगा, जो भारत के संसाधनों का optimum outcome देगा, और देश विकसित भारत के सपने को पार करने में और नई गति प्राप्त करेगा, समृद्धि प्राप्त करेगा। भारत आज वन नेशन, वन सिविल कोड... यानि सेकुलर सिविल कोड की तरफ भी बढ़ रहा है। और मैंने लाल किले से इस बात का जिक्र किया था। इसके भी मूल में सामाजिक एकता सरदार साहब की बात ही हमारी प्रेरणा है। इससे अलग-अलग सामाजिक वर्गों में भेदभाव की जो शिकायत रहती है, उसे दूर करने में मदद मिलेगी, देश की एकता और मजबूत होगी, देश और आगे बढ़ेगा, देश एकता से संकल्पों का सिद्ध करेगा।

पूरे देश को खुशी है कि आजादी के 7 दशक बाद, देश में एक देश, एक संविधान का संकल्प भी पूरा हुआ है, सरदार साहब की आत्मा को मेरी ये सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। देशवासियों को पता नहीं है 70 साल तक बाबा साहब अंबेडकर का संविधान पूरे देश में लागू नहीं हुआ था। संविधान का माला जपने वालों ने संविधान का ऐसा घोर अपमान किया... कारण क्या था... जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल 370 की दीवार, आर्टिकल 370 जो देश में दीवार बनके खड़ी थी, संविधान को यहां रोक देती थी, वहां के लोगों के अधिकारों से उनको वंचित रखती थी, वो धारा 370 को हमेशा-हमेशा के लिए जमीन में गाड़ दिया गया है। पहली बार वहां इस विधानसभा चुनाव में बिना भेदभाव के वोट डाले गए। पहली बार जम्मू कश्मीर में मुख्यमंत्री ने आजादी के 75 साल के बाद पहली बार भारत के संविधान की शपथ ली है। ये दृश्य अपने आप में भारत के संविधान निर्माताओं को अत्यंत संतोष देता होगा, उनकी आत्मा को शांति मिलती होगी और ये भी संविधान निर्माताओं के प्रति हमारी नम्र श्रद्धांजलि हैं। मैं इसे भारत की एकता के लिए एक बहुत बड़ा और बहुत ही मजबूत पड़ाव मानता हूं। जम्मू

कश्मीर की देशभक्त जनता ने, अलगाव और आतंक के बरसों पुराने एजेंडे को खारिज कर दिया है। उन्होंने भारत के संविधान को, भारत के लोकतंत्र को विजयी बनाया है। अपने-अपने वोट से 70 साल से चल रहे अपप्रचार को ध्वस्त कर दिया है। मैं राष्ट्रीय एकता दिवस पर... जम्मू-कश्मीर के देशभक्त लोगों को, भारत के संविधान पर सम्मान करने वाले लोगों को बहुत ही आदरपूर्वक सैल्यूट करता हूं।

बीते 10 साल में भारत ने ऐसे अनेक मुद्दों का समाधान किया है, जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा थे। आज आतंकियों के आकाओं को पता है कि भारत को नुकसान पहुंचाया... तो भारत उन्हें छोड़ेगा नहीं। आप नॉर्थ ईस्ट में देखिए, कितने बड़े संकट थे। हमने संवाद से... विकास और विश्वास से, अलगाव की आग को शांत किया। बोडो समझौते ने असम में 50 सालों का विवाद खत्म किया है... ब्रू-रियांग एग्रीमेंट इसके कारण हजारों विस्थापित लोग अनेक दशकों के बाद अपने घर लौटे हैं। National Liberation Front of Tripura से हुए समझौते ने, लंबे समय से चल रही अशांति खत्म की है। असम और मेघालय के बीच के सीमा विवाद को काफी हद तक हम सुलझा चुके हैं।

जब 21वीं सदी का इतिहास लिखा जाएगा... तो उसमें एक स्वर्णिम अध्याय होगा कि कैसे भारत ने दूसरे और तीसरे दशक में नक्सलवाद जैसी भयानक बीमारी को जड़ से उखाड़कर दिखाया, उखाड़कर के फेंका। आप याद करिए वो समय जब नेपाल के पशुपति से भारत के तिरुपति तक, रेड कॉरिडोर बन चुका था। जिस जनजातीय समाज ने भगवान बिरसा मुंडा जैसे देशभक्त दिए... जिन्होंने हमारे सीमित संसाधनों के बावजूद भी देश के हर कोने में मेरे आदिवासी भाई-बहनों ने आजादी के लिए अंग्रेजों का मुकाबला किया... ऐसे जनजातीय समाज में सोची-समझी साजिश के तहत नक्सलवाद के बीज बोये गए, नक्सलवाद की आग भड़काई गई। ये नक्सलवाद, भारत की एकता और अखंडता के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गया था। बीते 10 साल के अथक प्रयासों से आज नक्सलवाद भी भारत में अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है। आदिवासी समाज उसे भी दशकों से जो प्रतीक्षा थी, वो विकास उसके घर तक पहुंच रहा है, और बेहतर भविष्य का विश्वास भी पैदा हुआ है।

हमारे सामने एक ऐसा भारत है... जिसके पास दृष्टि भी है, दिशा भी है, इतना ही नहीं इसके साथ जो जरूरी है... दृष्टि हो, दिशा हो लेकिन उसे जरूरत होती है दृढ़ता की... आज देश के पास दृष्टि है, दिशा है और दृढ़ता भी है। ऐसा भारत... जो सशक्त भी है, ऐसा भारत जो समावेशी भी है, ऐसा भारत जो संवेदनशील भी है, ऐसा भारत जो सतर्क भी है, जो विनम्र भी है और विकसित होने की राह पर भी है, ऐसा भारत जो शक्ति और शांति दोनों का महत्व जानता है। दुनिया भर में मची भारी उथल-पुथल के बीच... सबसे तेज गति से विकास करना, ये सामान्य बात नहीं है। जब अलग-अलग हिस्सों में युद्ध हो रहे हों... तब युद्ध के बीच बुद्ध के संदेशों का संचार करना सामान्य नहीं है। जब दुनिया के अलग-अलग देशों में रिश्तों का संकट है... तब भारत का विश्वबंधु बनकर उभरना, सामान्य नहीं है। जब दुनिया में एक देश की दूसरे देश से दूरी बढ़ रही है... तब दुनिया के देश... भारत से निकटता बढ़ा रहे हैं। ये सामान्य नहीं है... ये नया इतिहास रचा जा रहा है। आखिर भारत ने ऐसा क्या किया है?

आज दुनिया देख रही है कि भारत कैसे अपने संकटों का दृढ़ता के साथ समाधान कर रहा है। आज दुनिया देख रही है कि भारत कैसे एकजुट होकर, दशकों पुरानी चुनौतियों को समाप्त कर रहा है... और इसलिए... हमें इस महत्वपूर्ण समय पर अपनी एकता को सहेजना है, उसे संभालना है... हमने एकता की जो शपथ ली है... उसे बार-बार याद करना है, उस शपथ को जीना है, जरूरत पड़े तो उस शपथ के लिए जूझना है। हर पल इस शपथ के भाव को अपने से भरते रहना है।

भारत के बढ़ते सामर्थ्य से... भारत में बढ़ते एकता के भाव से कुछ ताकतें, कुछ विकृत विचार, कुछ विकृत मानसिकताएं, कुछ ऐसी ताकतें बहुत परेशान है। भारत के भीतर और भारत के बाहर भी ऐसे लोग भारत में अस्थिरता, भारत में अराजकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। वो भारत के आर्थिक हितों को चोट पहुंचाने में जुटी है।

वो ताकतें चाहती हैं कि दुनिया भर के निवेशकों में गलत संदेश जाए, भारत की नेगेटिव छवि उभरे... ये लोग भारत की सेनाओं तक को टारगेट करने में लगे हैं, मिस इनफॉरमेशन कैंपेन चलाए जा रहे हैं। सेनाओं में अलगाव पैदा करना चाहते हैं... ये लोग भारत में जात-पात के नाम पर विभाजन करने में जुटे हैं। इनके हर प्रयास का एक ही मकसद है- भारत का समाज कमजोर हो... भारत की एकता कमजोर हो। ये लोग कभी नहीं चाहते की भारत विकसित हो... क्योंकि कमजोर भारत की राजनीति... गरीब भारत की राजनीति ऐसे लोगों को सूट करती है। 5-5 दशक तक इसी गंदी, घिनौनी राजनीति, देश को दुर्बल करते हुए चलाई गई। इसलिए... ये लोग संविधान और लोकतंत्र का नाम लेते हुए भारत के जन-जन के बीच में भारत को तोड़ने का काम कर रहे हैं। अर्बन नक्सलियों के इस गठजोड़ को, इनके गठजोड़ को हमें पहचानना ही होगा, और जंगलों में पनपा नक्सलवाद, बम-बंदूक से आदिवासी नौजवानों को गुमराह करने वाला नक्सलवाद जैसे-जैसे समाप्त होता गया... अर्बन नक्सल का नया मॉडल उभरता गया। हमें देश को तोड़ने के सपने देखने वाले, देश को बर्बाद करने के विचार को लेकर के चलने वाले, मुंह पर झूठे नकाब पहने हुए लोगों को पहचानना होगा, उनसे मुकाबला करना ही होगा।

हालत ये हो गई है कि एकता की बात करना तक गुनाह बना दिया गया है। एक समय था, जब हम बड़े गर्व के साथ स्कूल, कॉलेज में, घर में, बाहर सहज रूप से एकता के गीत गाते थे। जो पुराने लोग हैं उनको पता हैं, हम क्या गीत गाते थे...हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं। रंग-रूप वेश-भाषा चाहे अनेक हैं। ये गीत गाए जाते थे। आज की तारीख में कोई ये गीत गाएगा, तो उसको अर्बन नक्सलों की जमात गालियां देने का मौका पकड़ेगी। और आज कोई अगर कह दे कि एक हैं तो सेफ हैं... तो ये लोग एक हैं तो सेफ हैं उसको भी गलत तरीके से परिभाषित करने लगेंगे... जो लोग देश को तोड़ना चाहते हैं, जो लोग समाज को बांटना चाहते हैं, उन्हें देश की एकता अखर रही है। और इसलिए हमें ऐसे लोगों से, ऐसे विचारों से, ऐसी प्रवृत्ति से, ऐसी वृत्ति से पहले से भी ज्यादा सावधान होने की जरूरत है, हमें सावधान रहना है।

हम सब सरदार साहब को... उनके विचारों को जीने वाले लोग हैं। सरदार साहब कहते थे- भारत का सबसे बड़ा लक्ष्य, एकजुट और मजबूती से जुड़ी शक्ति बनने का होना चाहिए। हमें याद रखना है, हिंदुस्तान विविधता वाला देश है। हम विविधता को सेलिब्रेट करेंगें, तभी एकता मजबूत होगी। आने वाले 25 साल एकता के लिहाज से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, एकता के इस मंत्र को हमें कभी भी कमजोर नहीं पड़ने देना है, हर झूठ का मुकाबला करना है, एकता के मंत्र को जीना है... और ये मंत्र, ये एकता ये तेज आर्थिक विकास के लिए भी, विकसित भारत बनाने के लिए, समृद्ध भारत बनाने के लिए बहुत जरूरी है। ये एकता सामाजिक सद्भाव की जड़ी-बूटी है, सामाजिक सद्भाव के लिए ये बहुत जरूरी है। अगर हम सच्चे सामाजिक न्याय को समर्पित है, सामाजिक न्याय हमारी प्राथमिकता है तो एकता सबसे पहली पूर्व शर्त है... एकता बनाए रखना है। ये बेहतर सुविधाओं के निर्माण के लिए बिना एकता के गाड़ी चल नहीं सकती। ये नौकरी के लिए... निवेश के लिए एकता जरूरी है। आइए, हम एक होकर...एक साथ आगे बढ़ें। ▪

# विकसित भारत के निर्माण में उद्यमी, प्रोफेशनल्स बने पार्टी सदस्य

- **जातिवाद और परिवारवाद की राजनीति को समाप्त करने उद्यमी व प्रोफेशनल्स राजनीति में आएं।**
- **2047 के विकसित भारत के निर्माण में उद्यमी, इंटेलेक्चुअल्स और प्रोफेशनल्स सहयोगी बनें।**
- **प्रधानमंत्री जी ने नई कार्य संस्कृति विकसित करने का कार्य किया है।**

उद्यमियों, प्रोफेशनल्स के संकल्प और कार्य का ही परिणाम है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बना। वर्ष 1700 के समय दुनिया की अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान 25 प्रतिशत के करीब था, इसके बाद देश के गुलाम होने के बाद हमारी कार्य संस्कृति को बदल दिया गया। 1947 में भारत जब आजाद हुआ तब हमारे देश की दुनिया के अर्थव्यवस्था में सिर्फ 2.5 से 3 प्रतिशत योगदान रह गया था। इसके बाद भारत की अर्थव्यवस्था में कुछ सुधार हुआ और भारत का योगदान दुनिया की अर्थव्यस्था में 7 से 8 प्रतिशत हो गई।

2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के देश की बागडोर संभालने के बाद भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य शुरू किया और वर्ष 2023-24 में दुनिया की अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान 16 प्रतिशत हो गया है। प्रधानमंत्री जी भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बनाने का कार्य कर रहे हैं, इसके लिए उद्यमियों व प्रोफेशनल्स की अहम भूमिका है। भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बनाने के लिए उद्यमी, प्रोफेशनल्स, इंटेलेक्चुअल्स, युवा, बुद्धिजीवी और अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने वाली विभूतियां भाजपा से जुड़ें। प्रधानमंत्री जी ने नई शिक्षा नीति लागू की। देश के आजाद होने के बाद 70 सालों तक मैकाले की शिक्षा पद्धति चलती रही, प्रधानमंत्री जी ने नई शिक्षा पद्धति को भारत आधारित शिक्षा पद्धति बनाई है।

स्वामी विवेकानंद जी ने भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए देश के युवाओं को अग्रदूत बनने का आव्हान किया था। उन्होंने कहा था कि 'देश के 100 युवा मुझे मेरे जैसी सोच वाले मिल जाएं, तो मैं भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ देश बना दूंगा'। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम से जब यह पूछा जाता था कि आप ज्यादातर समय बच्चों के बीच क्यों बिताते हैं, तो उनका कहना था कि आने वाले समय में भारत और दुनिया का नेतृत्व इन्हीं बच्चों में से कुछ लोग कर रहे होंगे। इसलिए इनके विजन का विकास होना जरूरी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी स्वामी विवेकानंद जी की तरह 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र और विश्व गुरू बनाने के लिए देश के उद्यमियों, प्रोफेशनल्स, इंटेलेक्चुअल्स, युवाओं और बुद्धिजीवियों को राजनीति में आने का आव्हान किया है। प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि मुझे हर क्षेत्र के समर्पित और संकल्पित तथा देश के विकास का विजन रखने वाले युवा चाहिए, जो अलग-अलग क्षेत्रों में देश को नेतृत्व प्रदान कर सकें ।

2014 के पहले का भारत देखिए और श्री नरेन्द्र मोदी जी के 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद का भारत देखिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राजनीति में कार्य करने का तरीका बदला है, राजनीति को एक नई कार्य संस्कृति दी है। भारतीय जनता पार्टी एक विचार पर चलने वाली पार्टी है, सिर्फ सत्ता के लिए राजनीति नहीं करती। जो दल सिर्फ सत्ता के लिए राजनीति करते हैं, वो देश को संकट में डाल देते हैं। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री श्री मोदी जी रचनात्मक सोच के साथ भारत को विकसित देश बनाने के विजन को लेकर काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी चाहते है कि गैर राजनैतिक युवा अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले प्रोफेशनल्स एवं उद्यमी जब राजनीति में आयेंगे तो उनके अनुभव का लाभ देश को मिलेगा।

देश को चलाने के लिए पॉलिसी बनाने का कार्य राज्य की विधानसभाओं, संसद व अन्य इकाईयों में होता है। उद्यमी, प्रोफेशनल्स जब राजनीति में आयेंगे और पॉलिसी मेकिंग में अपने अनुभव और विजन को साझा कर पॉलिसी बनायेंगे तो देश में विकसित भारत की संकल्पना साकार होगी। ▪

## श्री विजयादशमी युगाब्द 5126 का पुण्यपर्व

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अपने कार्य के 100वें वर्ष में प्रवेश

**॥ॐ॥**
**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**
**प. पू. सरसंघचालक डॉ. श्री मोहन जी भागवत द्वारा विजयादशमी उत्सव के अवसर पर दिये उद्बोधन का सारांश**

**आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती का भी यही वर्ष है। पराधीनता से मुक्त होकर काल के प्रवाह में आचार धर्म व सामाजिक रीति-रिवाजों में आयी विकृतियों को दूर कर, समाज को अपने मूल के शाश्वत मूल्यों पर खड़ा करने का प्रचंड उद्यम उन्होंने किया। भारत वर्ष के नवोत्थान की प्रेरक शक्तियों में उनका नाम प्रमुख है।**

## पुण्य स्मरण

पिछले वर्ष इसी पर्व पर हमने महारानी दुर्गावती के तेजस्वी जीवन यज्ञ का उनकी जन्म जयंती के 500वें वर्ष के निमित्त स्मरण किया था। इस वर्ष पुण्य श्लोक अहिल्यादेवी होलकर जी की 300वीं जन्मशती का वर्ष मनाया जा रहा है। देवी अहिल्याबाई एक कुशल राज्य प्रशासक, प्रजा हित दक्ष कर्तव्य परायण शासक, धर्म संस्कृति व देश की अभिमानी, शील संपन्नता का उत्तम आदर्श तथा रण-नीति की उत्कृष्ट समझ रखने वाली राज्यकर्ता थी। अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में भी अद्भुत क्षमता का परिचय देते हुए घर को, राज्य को, स्वयं की अखिल भारतीय दृष्टि के कारण अपनी राज्य सीमा के बाहर भी, तीर्थ क्षेत्रों के जीर्णोद्धार व देव स्थानों के निर्माण द्वारा समाज के सामरस्य को तथा समाज में संस्कृति को उन्होंने जिस तरह सम्भाला वह आज के समय में भी मातृ शक्ति सहित हम सब के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। साथ ही यह भारत की मातृ शक्ति के कर्तृत्व व नेतृत्व की दैदीप्यमान परंपरा का उज्ज्वल प्रतीक भी है।आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती का भी यही वर्ष है। पराधीनता से मुक्त होकर काल के प्रवाह में आचार धर्म व सामाजिक रीति-रिवाजों में आयी विकृतियों को दूर कर, समाज को अपने मूल के शाश्वत मूल्यों पर खड़ा करने का प्रचंड उद्यम उन्होंने किया। भारत वर्ष के नवोत्थान की प्रेरक शक्तियों में उनका नाम प्रमुख है।

रामराज्य सदृश ऐसा वातावरण निर्माण होने के लिए प्रजा की गुणवत्ता व चारित्र्य तथा स्वधर्म पर दृढ़ता जैसी होना अनिवार्य है, वैसा संस्कार व दायित्व बोध सब में उत्पन्न करने वाला ''सत्संग'' अभियान परम पूज्य श्री श्री अनुकूल चन्द्र ठाकुर के द्वारा प्रवर्तित किया गया था। आज के बांग्लादेश तथा उस समय के उत्तर बंगाल के पाबना में जन्मे श्री श्री अनुकूल चन्द्र ठाकुर जी होमियोपैथी चिकित्सक थे तथा स्वयं की माता जी के द्वारा ही अध्यात्म साधना में दीक्षित थे। व्यक्तिगत समस्याओं को लेकर उनके सम्पर्क में आने वाले लोगों में सहज रूप से चरित्र विकास तथा सेवा भावना के विकास की प्रक्रिया ही ''सत्संग'' बनी, जिसे ईस्वी सन् 1925 में धर्मार्थ संस्था के रूप में पंजीकृत किया गया।

2024 से 2025 'सत्संग' के मुख्यालय देवघर (झारखंड) में उस कर्मधारा की भी शताब्दी मनने वाली है। सेवा, संस्कार तथा विकास के अनेक उपक्रमों को लेकर यह अभियान आगे बढ़ रहा है।

आगामी 15 नवम्बर से भगवान बिरसा मुंडा की जन्मजयंती का 150वां वर्ष प्रारंभ होगा। यह सार्धशती हमें, जनजातीय बंधुओं की गुलामी तथा शोषण से, स्वदेश पर विदेशी वर्चस्व से मुक्ति, अस्तित्व व अस्मिता की रक्षा एवं स्वधर्म रक्षा के लिए भगवान बिरसा मुंडा के द्वारा प्रवर्तित उलगुलान की प्रेरणा का स्मरण करा देगी। भगवान बिरसा मुंडा के तेजस्वी जीवन यज्ञ के कारण ही अपने जनजातीय बंधुओं के स्वाभिमान, विकास तथा राष्ट्रीय जीवन में योगदान के लिए एक सुदृढ़ आधार मिल गया है।

## व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य

प्रामाणिकता से, निःस्वार्थ भावना से देश, धर्म, संस्कृति व समाज के हित में जीवन लगा देने वाले ऐसी विभूतियों को हम इसलिए स्मरण करते हैं कि उन्होंने हम सब के हित में कार्य तो किया

है ही, अपितु अपने स्वयं के जीवन से हमारे लिए अनुकरणीय जीवन व्यवहार का उत्तम उदाहरण उपस्थित किया है। अलग-अलग कालखंडों में, अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में कार्य करने वाले इन सबके जीवन व्यवहार की कुछ समान बातें थीं।

निस्पृहता, निर्वैरता व निर्भयता उनका स्वभाव था। संघर्ष का कर्तव्य जब-जब उपस्थित हुआ, तब-तब पूर्ण शक्ति के साथ, आवश्यक कठोरता बरतते हुए उन्होंने उसे निभाया। परंतु वे कभी भी द्वेष या शत्रुता पालने वाले नहीं बने। उज्ज्वल शील संपन्नता उनके जीवन की पहचान थी। इस लिए उनकी उपस्थिति दुर्जनों के लिए धाक व सज्जनों को आश्वस्त करने वाली थी। हम सभी से आज इसी प्रकार के जीवन व्यवहार की अपेक्षा परिस्थिति कर रही है। परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय चारित्र्य की ऐसी दृढ़ता ही मांगल्य व सज्जनता की विजय के लिए शक्ति का आधार बनती है।

## देश की आगे कूच (देश के बढ़ते कदम)

आज का युग मानव जाति की द्रुतगति से भौतिक प्रगति का युग है। विज्ञान व तकनीकी के सहारे जीवन को हमने सुविधाओं से परिपूर्ण बनाया है। परन्तु दूसरी ओर हमारे अपने स्वार्थों के कलह हमें विनाश की ओर धकेल रहे हैं। मध्य पूर्व में इजरायल के साथ हमास का छिड़ा हुआ संघर्ष अब कहां तक फैलेगा यह चिंता सबके सामने उपस्थित है। अपने देश में भी परिस्थितियों में आशा आकांक्षाओं के साथ चुनौतियां व समस्याएं भी विद्यमान हैं। परम्परा से संघ के इस विजयादशमी भाषण में इन दोनों की यथा संभव विस्तृत चर्चा की जाती है। परन्तु आज मैं केवल कुछ चुनौतियों की चर्चा करुंगा। क्योंकि आशा आकांक्षाओं की पूर्ति की ओर जो गति देश ने पकड़ी है, वह जारी रहेगी। यह सभी अनुभव करते हैं कि गत वर्षों में भारत एक राष्ट्र के तौर पर विश्व में सशक्त और प्रतिष्ठित हुआ है। विश्व में उसकी साख बढ़ी है। स्वाभाविक ही कई क्षेत्रों में हमारी परम्परा तथा भावना में अन्तर्निहित विचारों का सम्मान बढ़ा है। हमारी विश्व बंधुत्व की भावना पर्यावरण के प्रति हमारी दृष्टि की स्वीकृति, योग इत्यादि को विश्व निःसंकोच स्वीकार कर रहा है। समाज में विशेषकर युवा पीढ़ी में स्व का गौरव बोध बढ़ते जा रहा है। कई क्षेत्रों में हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते जा रहे हैं। जम्मू कश्मीर सहित सब चुनाव भी शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गए हैं। देश की युवा शक्ति, मातृ शक्ति, उद्यमी, किसान, श्रमिक, जवान, प्रशासन, शासन सभी, प्रतिबद्धता पूर्वक अपने अपने कार्य में डटे रहेंगे, यह विश्वास है। गत वर्षों में देश हित की प्रेरणा से इन सबके द्वारा किए गए पुरुषार्थ से ही विश्व-पटल पर भारत की छवि, शक्ति, कीर्ति व स्थान निरन्तर उन्नत हो रहा है। परन्तु हम सबके इस कृतनिश्चय की मानो परीक्षा लेने कुछ मायावी षड्यंत्र हमारे सामने उपस्थित हुए हैं, जिन्हें ठीक से समझना आवश्यक है। अपने देश के वर्तमान परिदृश्य पर एक नजर डालते हैं तो ऐसी चुनौतियां स्पष्ट रूप से हमारे सामने दिखाई देती हैं। देश के चारों तरफ के क्षेत्रों को अशांत व अस्थिर करने के प्रयास गति पकड़ते हुए दिखाई देते हैं।

## देश विरोधी कुप्रयास

विश्व में भारत के प्रमुखत्व पाने से, जिनके निहित स्वार्थ मार खाते हैं, ऐसी शक्तियां भारत को एक मर्यादा के अंदर ही बढ़ने देना चाहेंगी, यह अपेक्षाकृत ही हो रहा है। अपने आप को उदार, जनतांत्रिक स्वभाव के तथा विश्व शांति के लिए कटिबद्ध बताने वाले देशों की यह कटिबद्धता उनकी सुरक्षा व स्वार्थों का प्रश्न आते ही अंतर्धान हो जाती है। तब दूसरे देशों पर आक्रमण करने में अथवा जनतांत्रिक पद्धति से चुनी गई वहां की सरकारों को अवैध अथवा हिंसक तरीकों से उलट देने से वे चूकते नहीं हैं। भारत के अंदर व बाहर विश्व में जो घटनाक्रम चलता है, उस पर गौर करने से यह बातें सभी समझ सकते हैं। भारत की छवि को मलिन करने का हेतु पुरस्सर प्रयास, असत्य अथवा अर्धसत्य के आधार पर चलता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है।

अभी-अभी बांग्लादेश में जो हिंसक तख्ता पलट हुआ, उसके तात्कालिक व स्थानीय कारण उस घटनाक्रम का एक पहलू है। परन्तु तद्देशीय हिन्दू समाज पर अकारण नृशंस अत्याचारों की परंपरा को फिर से दोहराया गया। उन अत्याचारों के विरोध में वहां का हिन्दू समाज इस बार संगठित होकर स्वयं के बचाव में घर के बाहर आया, इसलिए थोड़ा बचाव हुआ। परन्तु यह अत्याचारी कट्टरपंथी स्वभाव जब तक वहां विद्यमान है, तब तक वहां के हिन्दुओं सहित सभी अल्पसंख्यक समुदायों के सिर पर खतरे की तलवार लटकी रहेगी। इसीलिए उस देश से भारत में होने वाली अवैध घुसपैठ व उसके कारण उत्पन्न जनसंख्या असंतुलन देश में सामान्य जनों में भी गंभीर चिंता का विषय बना है। देश में आपसी सद्भाव व देश की सुरक्षा पर भी इस अवैध घुसपैठ के कारण प्रश्न चिन्ह लगते हैं। उदारता, मानवता, तथा सद्भावना के पक्षधर सभी के, विशेष कर भारत सरकार तथा विश्व भर के हिन्दुओं की सहायता की बांग्लादेश में अल्पसंख्यक बने हिन्दू समाज को आवश्यकता रहेगी।

असंगठित रहना व दुर्बल रहना यह दुष्टों के द्वारा अत्याचारों को निमंत्रण देना है, यह पाठ भी विश्व भर के हिन्दू समाज को ग्रहण करना चाहिए। परन्तु बात यहां रुकती नहीं। अब वहां भारत से बचने के लिए पाकिस्तान से मिलने की बात हो रही है। ऐसे विमर्श खड़े कर व स्थापित कर कौन से देश भारत पर दबाव बनाना चाहते हैं, इसको बताने की आवश्यकता नहीं है। इसके उपाय यह शासन का विषय है। परंतु समाज के लिए सर्वाधिक चिन्ता की बात यह है कि समाज में विद्यमान भद्रता व संस्कार को नष्ट-भ्रष्ट करने के, विविधता को अलगाव में बदलने के, समस्याओं से पीड़ित समूहों में व्यवस्था के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न करने के तथा असन्तोष को अराजकता में रूपांतरित करने के प्रयास बढ़े हैं।

''डीप स्टेट'', ''वोकिजम'', ''कल्चरल मार्क्सिस्ट'', ऐसे शब्द आजकल चर्चा में हैं। वास्तव में ये सभी सांस्कृतिक परम्पराओं के घोषित शत्रु हैं। सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं तथा जहां जहां जो भी भद्र, मंगल माना जाता है, उसका समूल उच्छेद इस समूह की कार्यप्रणाली का ही अंग है। समाज मन बनाने वाले तंत्र व संस्थानों को - उदा. शिक्षा तंत्र व शिक्षा संस्थान, संवाद माध्यम, बौद्धिक संवाद आदि - अपने प्रभाव में लाना, उनके द्वारा समाज का विचार, संस्कार, तथा आस्था को नष्ट करना, यह इस कार्य प्रणाली का प्रथम चरण होता है। एक-साथ रहने वाले समाज में किसी घटक को उसकी कोई वास्तविक या कृत्रिम रीति से उत्पन्न की गई विशिष्टता, मांग, आवश्यकता अथवा समस्या के आधार पर अलगाव के लिए प्रेरित किया जाता है। उनमें अन्याय ग्रस्तता की भावना उत्पन्न की जाती है। असंतोष को हवा देकर उस घटक को शेष समाज से अलग, व्यवस्था के विरुद्ध, उग्र बनाया जाता है। समाज में टकराव की सम्भावनाओं को (fault lines) ढूंढ कर प्रत्यक्ष टकराव खड़े किए जाते हैं। व्यवस्था, कानून, शासन, प्रशासन आदि के प्रति अश्रद्धा व द्वेष को उग्र बना कर अराजकता व भय का वातावरण खड़ा किया जाता है। इससे उस देश पर अपना वर्चस्व स्थापित करना सरल हो जाता है।

बहुदलीय प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में सत्ता प्राप्त करने हेतु दलों की स्पर्धा चलती है। अगर समाज में विद्यमान छोटे स्वार्थ, परस्पर सद्भावना अथवा राष्ट्र की एकता व अखंडता से अधिक महत्वपूर्ण हो गए, अथवा दलों की स्पर्धा में समाज की सद्भावना व राष्ट्र का गौरव व एकात्मता गौण माने गए, तो ऐसी दलीय राजनीति में एक पक्ष की सहायता में खड़े होकर पर्यायी राजनीति के नाम पर अपनी उच्छेदक कार्यसूची को आगे बढ़ाना इनकी कार्यपद्धति है।

यह कपोल-कल्पित कहानी नहीं, बल्कि दुनिया के अनेक देशों पर बीती हुई वास्तविकता है। पाश्चात्य जगत के प्रगत देशों में इस मंत्र विप्लव के परिणाम स्वरूप जीवन की स्थिरता, शांति व मांगल्य संकट में पड़ा हुआ प्रत्यक्ष दिखाई देता है। तथाकथित ''अरब स्प्रिंग'' से लेकर अभी-अभी पड़ोस के बांग्लादेश में जो घटित हुआ, वहां

तक इस पद्धति को काम करते हुए हमने देखा है। भारत के चारों ओर के - विशेषतः सीमावर्ती तथा जनजातीय जनसंख्या वाले प्रदेशों में इसी प्रकार के कुप्रयासों को हम देख रहे हैं। सांस्कृतिक एकात्मता एवं श्रेष्ठ सभ्यता की सुदृढ़ आधारशिला पर अपना राष्ट्र जीवन खड़ा है। अपना सामाजिक जीवन उदात्त जीवन मूल्यों से प्रेरित एवं पोषित है। अपने ऐसे राष्ट्र जीवन को क्षति पहुँचाने के अथवा नष्ट करने के उपरोक्त कुप्रयासों को समय पूर्व ही रोकना आवश्यक है। इस हेतु जागरूक समाज को ही प्रयत्न करना पड़ेगा। इसके लिए अपने संस्कृतिजन्य जीवन दर्शन तथा संविधान प्रदत्त मार्ग से लोकतंत्रीय योजना बनानी चाहिए। एक सशक्त विमर्श खड़ा करते हुए, वैचारिक एवं सांस्कृतिक प्रदूषण फैलाने वाले इन षड्यंत्रों से समाज को सुरक्षित रखना समय की आवश्यकता है।

## संस्कार क्षरण के दुष्परिणाम

विभिन्न तंत्रों तथा संस्थानों के द्वारा कराए गए विकृत प्रचार व कुसंस्कार भारत में, विशेषतः नयी पीढ़ी के मन- वचन-कर्मों को बहुत बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। बड़ों के साथ बच्चों के हाथों में भी चल दूरभाष पहुंच गया है, वहां क्या दिखा रहे हैं और बच्चे क्या देख रहे हैं, इस पर नियंत्रण नहीं के बराबर है। उस सामग्री का उल्लेख करना भी भद्रता का उल्लंघन होगा, इतनी वह वीभत्स है। अपने-अपने घर - परिवारों में हमारे तथा समाज में विज्ञापनों तथा विकृत दृश्य-श्राव्य सामग्री पर कानून के नियंत्रण की त्वरित आवश्यकता प्रतीत होती है। युवा पीढ़ी में जंगल में आग की तरह फैलने वाली नशीले पदार्थों की आदत भी समाज को अंदर से खोखला कर रही है। अच्छाई की ओर ले जाने वाले संस्कार पुनर्जीवित करने होंगे।

संस्कार क्षय का ही यह परिणाम है कि ''मातृवत् परदारेषु'' के आचरण की मान्यता वाले हमारे देश में बलात्कार जैसी घटनाओं का मातृ शक्ति को कई जगह सामना करना पड़ रहा है। कोलकाता के आर.जी. कर अस्पताल में घटी घटना सारे समाज को कलंकित करने वाली लज्जाजनक घटनाओं में एक है। उसके निषेध तथा त्वरित व संवेदनशील कार्यवाही की मांग को लेकर चिकित्सक बंधुओं के साथ सारा समाज तो खड़ा हुआ। परन्तु ऐसा जघन्य पाप घटने पर भी, कुछ लोगों के द्वारा जिस प्रकार अपराधियों को संरक्षण देने के घृणास्पद प्रयास हुए, यह सब अपराध, राजनीति तथा अपसंस्कृति का गठबंधन हमें किस तरह बिगाड़ रहा है, यह दिखाता है।

## महिलाओं की ओर देखने की हमारी दृष्टि

''मातृवत् परदारेषु'' - हमारी सांस्कृतिक देन है जो हमें हमारी संस्कार परम्परा से प्राप्त होती है। परिवारों में, तथा समाज जिन से मनोरंजन के साथ ही जाने-अनजाने प्रबोधन भी प्राप्त कर रहा है, उन माध्यमों में इस का भान न रहना, इन मूल्यों की उपेक्षा या तिरस्कार होना बहुत महंगा पड़ रहा है। हमें परिवार, समाज तथा संवाद माध्यमों के द्वारा इन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रबोधन की व्यवस्था को फिर से जागृत करना होगा।

## शक्ति का महत्व

आज भारत में सर्वत्र संस्कारों के क्षरण व विभेदकारी तत्वों के समाज को तोड़ने के खेलों की परिस्थिति दिखाई देती है। सामान्य समाज को जाति, भाषा, प्रान्त आदि छोटी विशेषताओं के आधार पर अलग कर टकराव उत्पन्न करने का प्रयास चला है। छोटे स्वार्थ व छोटी पहचानों में उलझकर सर पर मंडराते सबको खाने वाले संकट को बहुत देर होते तक समाज समझ न सके, यह व्यवस्था की जा रही है। इसके चलते आज देश की वायव्य सीमा से लगे पंजाब, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, समुद्री सीमा पर स्थित केरल, तमिलनाडु, तथा बिहार से मणिपुर तक का सम्पूर्ण पूर्वांचल अस्वस्थ है। इस भाषण में पूर्व में उल्लेखित सारी परिस्थिति इन सब प्रदेशों में भी उपस्थित है।

देश में बिना कारण कट्टरपन को उकसाने वाली घटनाओं में भी अचानक वृद्धि हुई दिख रही है। परिस्थिति या नीतियों को लेकर मन में असंतुष्टि हो सकती है, परन्तु उसको व्यक्त करने के और उनका विरोध करने के प्रजातांत्रिक मार्ग होते हैं। उनका अवलंबन न करते हुए हिंसा पर उतर आना, समाज के एकाध विशिष्ट वर्ग पर आक्रमण करना, बिना कारण हिंसा पर उतारू होना, भय पैदा करने का प्रयास करना, यह तो गुंडागर्दी है। इसको उकसाने के प्रयास होते हैं अथवा योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है, ऐसे आचरण को पूज्य डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर जी ने अराजकता का व्याकरण (Grammar of Anarchy) कहा है।

अभी बीत गए गणेशोत्सवों के समय श्री गणपति विसर्जन की शोभा यात्राओं पर अकारण पथराव की तथा तदोपरान्त बनी तनावपूर्ण परिस्थिति की घटनाएं उसी व्याकरण का उदाहरण हैं। ऐसी घटनाओं को होने नहीं देना, वो होती हैं तो तुरंत नियंत्रित करना, उपद्रवियों को त्वरित दण्डित करना, यह प्रशासन का काम है। परन्तु उनके पहुँचने तक तो समाज को ही अपने तथा अपनों के प्राणों की व सम्पत्ति की रक्षा करनी पड़ती है। इसलिए समाज में भी सदैव पूर्ण सतर्क व सन्नद्ध रहने की तथा इन कुप्रवृत्तियों को, उन्हें प्रश्रय देने वालों को पहचानने की आवश्यकता उत्पन्न हो गयी है। परिस्थिति का उपरोक्त वर्णन यह डरने, डराने या लड़ाने के लिए नहीं है। ऐसी परिस्थिति विद्यमान है, यह हम सब अनुभव कर रहे हैं। साथ में इस देश को एकात्म, सुख शान्ति मय, समृद्ध व बल संपन्न बनाना यह सबकी इच्छा है, सबका कर्तव्य भी है। इसमें हिन्दू समाज की जिम्मेवारी अधिक है। इसलिए समाज की एक विशिष्ट प्रकार की स्थिति, सजगता तथा एक विशिष्ट दिशा में मिलकर प्रयासों की आवश्यकता है। समाज स्वयं जगता है, अपने भाग्य को अपने पुरुषार्थ से लिखता है तब महापुरुष, संगठन, संस्थाएं, प्रशासन, शासन आदि सब सहायक होते हैं। शरीर की स्वस्थ अवस्था में क्षरण पहले आता है, बाद में रोग उसको घेरते हैं। दुर्बलों की परवाह देव भी नहीं करते, ऐसा एक सुभाषित प्रसिद्ध है।

**अश्वं नैव गजं नैव, व्याघ्रं नैव च नैव च।**
**अजापुत्रं बलिं दद्यात्, देवो दुर्बल घातकः।।**

इसीलिए शताब्दी वर्ष के पूरे होने के पश्चात समाज में कुछ विषय लेकर सभी सज्जनों को सक्रिय करने का विचार संघ के स्वयंसेवक कर रहे हैं।

## समरसता व सद्भावना

समाज की स्वस्थ व सबल स्थिति की पहली शर्त है सामाजिक समरसता तथा समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर सद्भाव। कुछ संकेतात्मक कार्यक्रम मात्र करने से यह कार्य संपन्न नहीं होता है। समाज के सभी वर्गों व स्तरों में व्यक्ति की व कुटुम्बों की मित्रता होनी चाहिए। यह पहल हम सभी को व्यक्तिगत तथा पारिवारिक स्तर से करनी होगी। परस्परों के पर्व प्रसंगों में सभी की सहभागिता होकर वे पूरे समाज के पर्व प्रसंग बनने चाहिए। सार्वजनिक उपयोग व श्रद्धा के स्थल यथा मंदिर, पानी, श्मशान आदि में समाज के सभी वर्गों को सहभागी होने का वातावरण चाहिए। परिस्थिति के कारण समाज के विभिन्न वर्गों की आवश्यकताएं सभी वर्गों को समझ में आनी चाहिए। जैसे कुटुंब में समर्थ घटक दुर्बल घटकों के लिए अधिक प्रावधान, कभी कभी अपना नुकसान सहन करके भी करते हैं, वैसे अपनेपन की दृष्टि रखकर ऐसी आवश्यकताओं का विचार होना चाहिए।

समाज में अनेक जाति वर्गों का संचालन करने वाली उनकी अपनी-अपनी रचनाएँ, संस्थाएं भी हैं। अपने अपने जाति वर्ग की उन्नति का, सुधार का तथा उनके हित प्रबोधन का विचार इन रचनाओं के नेतृत्व के द्वारा किया जाता है। जाति बिरादरी के नेतृत्व करने वाले लोग मिल बैठ कर और दो विषयों का विचार नित्य करेंगे तो समाज में सर्वत्र सद्भावना पूर्ण व्यवहार का वातावरण बनेगा। समाज को बांटने का कोई कुचक्र सफल हो नहीं सकेगा। पहला विषय है कि हम सब अलग अलग जाति वर्ग मिलकर देश हित की, अपने कार्यक्षेत्र के सम्पूर्ण समाज के हित की कौन-कौन सी बातें करा सकते हैं, योजना बनाकर उनको परिणाम तक ले जा सकते हैं। ऐसे ही दूसरा विषय

है कि हम सब मिलकर, हममें जो दुर्बल जाति अथवा वर्ग है, उनके हित साधन के लिए क्या कर सकते हैं? नियमित क्रम से ऐसा विचार एवं कृति होती रही तो समाज स्वस्थ भी बनेगा व सद्भाव का वातावरण भी बनेगा।

## पर्यावरण

चारों ओर के वातावरण में एक विश्व व्यापी समस्या, जिसका अनुभव हाल के वर्षों में अपने देश में भी हो रहा है, वह है पर्यावरण की दुःस्थिति। ऋतुचक्र अनियमित व उग्र बन गया है। उपभोगवादी तथा जड़वादी अधूरे वैचारिक आधार पर चली मानव की तथाकथित विकास यात्रा मानवों सहित सम्पूर्ण सृष्टि की विनाश यात्रा लगभग बन गयी है। अपने भारतवर्ष की परम्परा से प्राप्त सम्पूर्ण, समग्र व एकात्म दृष्टि के आधार पर हमने अपने विकास पथ को बनाना चाहिए था, परन्तु हमने ऐसा नहीं किया। अभी इस प्रकार का विचार थोड़ा थोड़ा सुनाई दे रहा है, परन्तु ऊपरी तौर पर कुछ बातें स्वीकार हुई हैं, कुछ बातों का परिवर्तन हुआ है। इससे अधिक काम नहीं हुआ है। विकास के बहाने विनाश की ओर ले जाने वाले अधूरे विकास पथ के अन्धानुसरण के परिणाम हम भी भुगत रहे हैं। गर्मी की ऋतु झुलसा देती है, वर्षा बहा कर ले जाती है और शीत ऋतु जीवन को जड़वत् जमा देती है।

ऋतुओं की यह विक्षिप्त तीव्रता हम अनुभव कर रहे हैं। जंगल काटने से हरियाली नष्ट हो गयी, नदियाँ सूख गयीं, रसायनों ने हमारे अन्न, जल, वायु व धरती तक को विषाक्त कर दिया, पर्वत ढहने लगे, भूमि फटने लगी, यह सारे अनुभव पिछले कुछ वर्षों में देश भर में हम अनुभव कर रहे हैं। अपने वैचारिक आधार पर, इस सारे नुकसान को पूरा कर हमको धारणाक्षम, समग्र व एकात्म विकास देने वाला हमारा पथ हम निर्माण करें, इसका कोई पर्याय नहीं है। सम्पूर्ण देश में इसकी समान वैचारिक भूमिका बने व देश की विविधता को ध्यान में रखते हुए क्रियान्वयन का विकेन्द्रित विचार हो, तब यह संभव है। परन्तु हम सामान्य लोग अपने घर से तीन छोटी छोटी सरल बातों का आचरण करते हुए प्रारम्भ कर सकते हैं।

**पहली बात है** – जल का न्यूनतम आवश्यक उपयोग तथा वर्षा जल का संधारण।

**दूसरी बात है** – प्लास्टिक वस्तुओं का उपयोग नहीं करना। जिसको अंग्रेजी में single use plastic कहते हैं, उसका उपयोग पूर्णतः वर्जित करना।

**तीसरी बात**– अपने घर से लेकर बाहर भी हरियाली बढ़े, वृक्ष लगें, अपने जंगलों के और परम्परा से लगाए जाने वाले वृक्ष सर्वत्र खड़े हों, इसकी चिंता करना। पर्यावरण के सम्बन्ध में नीतिगत प्रश्नों का समाधान होने के लिए समय लगेगा, परन्तु यह सहज कृति अपने घर से हम त्वरित प्रारम्भ कर सकते हैं।

## संस्कार जागरण

जहां तक संस्कारों के क्षरण का प्रश्न है, तीन स्थानों पर - जहां से संस्कार मिलते हैं, - संस्कार प्रदान की व्यवस्था को पुर्नस्थापित समर्थ, सक्षम करना पड़ेगा। शिक्षा पद्धति पेट भरने की शिक्षा देने के साथ साथ छात्रों के व्यक्तित्व विकास का भी काम करती है। अपने देश के सांस्कृतिक मूल्य सारांश में बताने वाला एक सुभाषित है -

**मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।**
**आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पंडितः।।**

महिलाओं को माता समान देखने की दृष्टि, पराया धन मिट्टी समान मानते हुए स्वयं के परिश्रम से व सन्मार्ग से ही धनार्जन करना और दूसरों को दुःख कष्ट हो ऐसे आचरण, कार्य नहीं करना, यह जिसका व्यवहार है उसको अपने यहाँ शिक्षित मानते हैं। नई शिक्षा नीति में इस प्रकार के मूल्य शिक्षा की व्यवस्था व तदनुरूप पाठ्यक्रम का प्रयास चला है। परन्तु प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षकों के उदाहरण छात्रों के सामने उपस्थित हुए बिना यह शिक्षा प्रभावी नहीं होगी। इसलिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की नई व्यवस्था निर्माण करनी पड़ेगी। दूसरा स्थान है - समाज का वातावरण। समाज के जो प्रमुख लोग हैं, जिनकी लोकप्रियता के कारण अनेक लोग उनका अनुकरण करते हैं, उनके आचरण में ये सारी बातें दिखनी चाहिए। इन बातों का मंडन भी उन प्रमुख लोगों को करना चाहिए और उनके प्रभाव से समाज में चलने वाले विभिन्न प्रबोधन कार्यों से यह मूल्य प्रबोधन किया जाना चाहिए। समाज संवाद माध्यमों का (social media) उपयोग करने वाले सभी सज्जनों को माध्यमों का उपयोग समाज को जोड़ने के लिए है, तोड़ने के लिए न हो, सुसंस्कृत करने के लिए है, अपसंस्कृति फैलाने के लिए नहीं, इस बात की सावधानी बरतनी होगी। परन्तु शिक्षा का मूलारम्भ व उसके कारण बनने वाली स्वभाव प्रवृत्ति, 3 से 12 साल तक की आयु में घर में ही बनती है। घर के बड़ों का व्यवहार, घर का वातावरण और घर में होने वाला आत्मीयता-युक्त संवाद इनसे यह शिक्षा संपन्न होती है। हममें से प्रत्येक को अपने घर की चिंता करते हुए, अगर सहज यह संवाद नहीं है तो साप्ताहिक आयोजन से, इस संवाद का प्रारम्भ करना पड़ेगा। स्व गौरव, देश प्रेम, नीतिमत्ता, श्रेयबोध, कर्तव्यबोध आदि कई गुणों का निर्माण इसी कालावधि में होता है। यह समझ कर हमको इस कार्य को स्वयं के घर से प्रारम्भ करना पड़ेगा।

## नागरिक अनुशासन

संस्कारों की अभिव्यक्ति का दूसरा पहलू है, हमारा सामाजिक व्यवहार। समाज में हम एक साथ रहते हैं। साथ में सुखपूर्वक रह सकें इसलिए कुछ नियम बने होते हैं। देश काल परिस्थितिनुसार उनमें परिवर्तन भी होते रहता है। परन्तु हम सुखपूर्वक एकत्र रह सकें इसलिए उन नियमों के श्रद्धा पूर्वक पालन की अनिवार्यता रहती है। एकत्र रहते हैं तो हमारे परस्परों के प्रति व्यवहार के भी कुछ कर्तव्य और उनके अनुशासन बन जाते हैं। कानून व संविधान भी ऐसा ही, एक सामाजिक अनुशासन है। समाज में सब लोग सुख पूर्वक, एकत्र रहें, उन्नति करते रहें, बिखरें नहीं, इसलिए बना हुआ अधिष्ठान व नियम है।

हम भारत के लोगों ने अपने आप को यह संविधान से प्रतिबद्धता दी है। संविधान की प्रस्तावना के इस वाक्य के इस भाव को ध्यान में रखकर संविधान प्रदत्त कर्तव्यों का और कानून का योग्य निर्वहन सभी को करना होता है। छोटी बड़ी सभी बातों में इस नियम व्यवस्था का पालन हमें करना चाहिए। रहदारी के नियम होते हैं, विभिन्न प्रकार के कर समय पर भरने पड़ते हैं, स्वयं के व्यक्तिगत तथा सामाजिक अर्थायाम की शुद्धता व पारदर्शिता का अनुशासन भी होता है। ऐसे अनेक प्रकार के नियमों का कर्तव्य बुद्धि से पूर्ण निर्वहन होना चाहिए। नियम व व्यवस्था का पालन शब्दशः व भाव ध्यान में रखते हुए, (in letter and spirit) दोनों प्रकार से करना चाहिए। यह ठीक प्रकार से हो सके इसलिए विशेषकर अपने संविधान के चार प्रकरणों की जानकारी, यथा - संविधान की प्रस्तावना, मार्गदर्शक तत्व, नागरिक कर्तव्य व नागरिक अधिकार - का प्रबोधन सर्वत्र होते रहना चाहिए। परिवार से प्राप्त पारस्परिक व्यवहार का अनुशासन, परस्पर व्यवहार में मांगल्य, सद्भावना और भद्रता तथा सामाजिक व्यवहार में देश-भक्ति व समाज के प्रति आत्मीयता के साथ कानून संविधान का निर्दोष पालन इन सबको मिलाकर व्यक्ति का व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य बनता है। देश की सुरक्षा, एकात्मता, अखण्डता व विकास साधने के लिए चारित्र्य के इन दो पहलुओं का त्रुटिविहीन व सम्पूर्ण होना अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। हम सभी को व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय चारित्र्य की इस साधना में सजगता व सातत्य के साथ लगे रहना पड़ेगा।

## स्व गौरव

इन सारी बातों का आचरण सतत् होता रहे इसलिए जो प्रेरणा आवश्यक है, वह 'स्व गौरव' की प्रेरणा है। हम कौन हैं? हमारी परम्परा और हमारा गंतव्य क्या है? भारतवासियों के नाते हमारी सब विविधताओं के बावजूद हमें जो एक बड़ी, सर्व समावेशक, प्राचीन काल से चलती आयी हुई मानवीय पहचान मिली है, उसका स्पष्ट स्वरूप क्या है? इन सब बातों का ज्ञान होना, सबके लिए आवश्यक है। उस पहचान के उज्ज्वल गुणों को

धारण करके, उसका गौरव मन और बुद्धि में स्थापित होता है, तो उसके आधार पर स्वाभिमान प्राप्त होता है। स्व-गौरव की प्रेरणा का बल ही जगत में हमारी उन्नति व स्वावलंबन का कारण बनने वाला व्यवहार उत्पन्न करता है। उसी को हम स्वदेशी का आचरण कहते हैं।

राष्ट्रीय नीति में उसकी अभिव्यक्ति बहुत बड़ी मात्रा में, समाज में दैनंदिन जीवन में व्यक्तियों द्वारा होने वाले स्वदेशी व्यवहार पर निर्भर करती है। इसी को स्वदेशी का आचरण कहते हैं। जो घर में बनता है वो बाहर से नहीं लाना, देश का रोजगार चले, बढ़े इतना अपने देश में घर के बाहर से लाना। जो देश में बनता है वो बाहर से नहीं लाना। जो देश में बनता नहीं, उसके बिना काम चलाना। कोई जीवनावश्यक वस्तु है, जिसके बिना काम चलता नहीं वही केवल विदेश से लेना। घर के अन्दर भाषा, भूषा, भजन, भवन, भ्रमण और भोजन ये अपना हो, अपनी परम्परा का हो यह ध्यान रखना, यह सारांश में स्वदेशी व्यवहार है। सब क्षेत्रों में देश के स्वावलंबी बनने से स्वदेशी व्यवहार करना सरल होता है। इसलिए स्वतन्त्र देश की नीति में देश के स्वावलंबी बनने का परिणाम साध सकने वाली नीति जुड़नी चाहिए, साथ ही समाज ने प्रयत्न पूर्वक स्वदेशी व्यवहार को जीवन तथा स्वभाव का अंग बनाना चाहिए।

## मन-वचन-कर्म का विवेक

राष्ट्रीय चारित्र्य के व्यवहार का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, किसी भी प्रकार की अतिवादिता तथा अवैध पद्धति से अपने आप को दूर रखना। अपना देश विविधताओं से भरा हुआ देश है। उनको हम भेद नहीं मानते, न ही मानना चाहिए। हमारी विविधताएं सृष्टि की स्वाभाविक विशिष्टताएं है। इतने प्राचीन इतिहास वाले, विस्तीर्ण क्षेत्रफल वाले तथा विशाल जनसंख्या वाले देश में यह सभी विशिष्टताएं स्वाभाविक हैं। अपनी-अपनी विशिष्टता का गौरव तथा उनके प्रति अपनी-अपनी संवेदनशीलता भी स्वाभाविक है। इस विविधता के चलते समाज जीवन में व देश के संचालन में होने वाली सब बातें सदा सर्वदा सबके अनुकूल अथवा सबको प्रसन्न करने वाली होंगी ही, ऐसा नहीं होता। ये सारी बातें किसी एक समाज के द्वारा होती हैं, ऐसा नहीं है। इनकी प्रतिक्रिया में कानून और व्यवस्था को धत्ता बता कर अवैध या हिंसात्मक मार्ग से उपद्रव खड़े करना, समाज के किसी एक सम्पूर्ण वर्ग को उनका जिम्मेवार मानना, मन-वचन और कर्म से मर्यादा का उल्लंघन करते हुए चलना, यह देश के लिए - देश में किसी के लिए - न विहित है, न हितकारी। सहिष्णुता व सद्भावना भारत की परंपरा है।

असहिष्णुता व दुर्भावना भारत विरोधी व मानव विरोधी दुर्गुण है। इसलिए क्षोभ कितना भी हो, ऐसे

असंयम से बचना चाहिए तथा अपने लोगों को बचाना चाहिए। अपने मन, वाणी अथवा कृति से किसी की श्रद्धा का, श्रद्धास्पद स्थान, महापुरुष, ग्रंथ, अवतार, संत आदि का अपमान न हो, इस का ध्यान स्वयं के व्यवहार में रखना चाहिए। दुर्भाग्यवश अन्य किसी से ऐसा कुछ होने पर भी स्वयं पर नियंत्रण रखकर ही चलना चाहिए। सब बातों के परे, सब बातों के ऊपर महत्व समाज की एकात्मता, सद्भाव व सद्व्यवहार का है। यह किसी भी काल में, किसी भी राष्ट्र के लिए परम सत्य है, तथा मनुष्यों के सुखी अस्तित्व तथा सहजीवन का एकमात्र उपाय है।

## संहत शक्ति तथा शुद्ध शील ही शान्ति व उन्नति का आधार

परन्तु, जैसे आधुनिक जगत की रीति है, सत्य को सत्य के अपने मूल्य पर जगत स्वीकार नहीं करता। जगत शक्ति को स्वीकार करता है। भारत वर्ष बड़ा होने से दुनिया में अंतरराष्ट्रीय व्यवहार में सद्भावना व संतुलन उत्पन्न होकर शान्ति और बंधुता की ओर विश्व बढ़ेगा, यह विश्व में सब राष्ट्र जानते हैं। फिर भी अपने संकुचित स्वार्थ और अहंकार या द्वेष को लेकर भारत वर्ष को एक मर्यादा में बांधकर रखने की शक्तिशाली देशों की चेष्टा को हम सब अनुभव करते हैं। भारत वर्ष की शक्ति जितनी बढ़ेगी उतनी ही भारत वर्ष की स्वीकार्यता रहेगी।

## बलहीनों को नहीं पूछता, बलवानों को विश्व पूजता

यह आज के जगत की रीति है। इसलिए उपरोक्त सद्भाव व संयम पूर्ण वातावरण की स्थापना के लिए सज्जनों को शक्ति संपन्न होना ही पड़ेगा। शक्ति जब शील संपन्न होकर आती है, तब वह शान्ति का आधार बनाती है। दुर्जन स्वार्थ के लिए एकत्र रहते हैं और सजग रहते हैं। उनका नियंत्रण सशक्त ही कर सकते हैं। सज्जन सबके प्रति सद्भाव रखते हैं, परन्तु एकत्र होना नहीं जानते। इसीलिए दुर्बल दिखाई देते हैं। उनको यह संगठित सामर्थ्य के निर्माण की कला सीखनी पड़ेगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिन्दू समाज की इसी शील संपन्न शक्ति साधना का नाम है। इस भाषण में इसके पूर्व वर्णित सद्व्यवहार के पांच बिंदु लेकर समाज में सज्जनों को जोड़ने का विचार संघ के स्वयंसेवक कर रहे हैं। भारत को बढ़ने देना न चाहने वाले, अपने स्वार्थ के लिए ऐसे भारत विरोधियों के साथ आने वाले तथा स्वभाव से जो बैर और द्वेष में ही आनंद मानते हैं, ऐसी शक्तियों से सुरक्षित रहकर देश को आगे बढ़ना है। इसलिए शील संपन्न व्यवहार के साथ शक्ति साधना भी महत्वपूर्ण है। इसलिए संघ की प्रार्थना में, कोई परास्त न कर सके ऐसी शक्ति और विश्व विनम्र हो ऐसा शील भगवान से मांगा गया है। विश्व के, मानवता के कल्याण का कोई काम अनुकूल परिस्थिति में भी इन दो गुणों के बिना संपन्न नहीं होता। नौ अहोरात्रि जागरण करते हुए सभी देवताओं ने अपनी- अपनी शक्तियों को एक में संगठित किया, तब उस शील संपन्न संहत शक्ति से चिन्मयी जगदम्बा जागी, दुष्टों का निर्दलन हुआ, सज्जनों का परित्राण हुआ, विश्व का कल्याण हुआ। इसी विश्व मंगल साधना में मौन पुजारी के नाते संघ लगा है। हम सबको यही साधना अपनी पवित्र मातृभूमि को परम वैभव संपन्न बनाने की शक्ति व सफलता प्रदान करेगी। इसी साधना से विश्व के सभी राष्ट्र अपना- अपना उत्कर्ष साधकर नए, सुख- शान्ति व सद्भावना युक्त विश्व को बनाने में अपना योगदान प्रदान करेंगे। उस साधना में आप सभी सादर निमंत्रित है।

**हिन्दू भूमि का कण कण हो अब, शक्ति का अवतार उठे,**
**जल थल से अम्बर से फिर, हिन्दू की जय जय कार उठे**
**जग जननी का जयकार उठे**
**''भारत माता की जय''** ▪

# विकसित मध्यप्रदेश और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संकल्प की ओर बढ़ते कदम

डॉ. मोहन यादव

मध्यप्रदेश के नये स्वरूप की यात्रा को 68 वर्ष बीत चुके हैं। इस यात्रा में लगभग दो दशक पूर्व तक प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी में था। विकास के निरंतर प्रयास से प्रदेश प्रगति पथ पर आगे बढ़ा। विगत दस वर्षों से यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में प्रदेश ने विकास की करवट ली और प्रदेश विकसित राज्य की ओर अग्रसर है। अब हमने जनसेवा, सुशासन और प्रदेश के चहुंमुखी विकास की नयी यात्रा आरंभ की है। प्रदेशवासियों के साथ मिलकर प्रदेश को देश में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में कार्य किये जा रहे हैं।

भारत का हृदय, अपना मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। पुण्य सलिला माँ नर्मदा का सान्निध्य और भगवान महाकालेश्वर का आशीर्वाद हमें प्राप्त है। यह असंख्य वीरों, बलिदानियों और राष्ट्र संस्कृति के प्रति समर्पित महान विभूतियों की धरती है। यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य की तपोस्थली है। यहां गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती ने स्वत्व के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया था। राष्ट्र में अपने सांस्कृतिक गौरव को पुर्नस्थापित करने वाली पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की कर्मस्थली है। उनके त्रिशताब्दी समारोह के आयोजन वर्ष में कई कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि मध्यप्रदेश को प्राकृतिक संपदा के आधार के साथ इतिहास का गौरव प्राप्त है। अब हम विकास के साथ विरासत को लेकर आगे बढ़ेंगे।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए विकसित भारत निर्माण का संकल्प दिया है। इस संकल्प की सिद्धि के लिये उन्होंने ज्ञान (GYAN), गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान का नया सूत्र (वाक्य) दिया। ये चार वर्ग विकास के आधार स्तम्भ हैं। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में प्रदेश विकास और कल्याण के लिये युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन के तहत कार्य करने जा रहे हैं।

**भारत का हृदय, अपना मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। पुण्य सलिला माँ नर्मदा का सान्निध्य और भगवान महाकालेश्वर का आशीर्वाद हमें प्राप्त है। यह असंख्य वीरों, बलिदानियों और राष्ट्र संस्कृति के प्रति समर्पित महान विभूतियों की धरती है।**

यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य की तपोस्थली है।

युवा शक्ति मिशन शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार, उद्यमिता, नेतृत्व विकास, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्य की योजना बनाकर मिशन मोड में कार्य करेगा। युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के साथ हमने शासकीय नौकरियों में एक लाख से अधिक युवाओं के भर्ती का अभियान शुरू कर दिया है। मध्यप्रदेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने वाला देश का पहला राज्य है। प्रदेश के 55 जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का शुभारंभ, कुलपतियों को कुलगुरु का मान, शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण और योग ध्यान पाठ्यक्रम का समावेश किया गया है। युवा शक्ति मिशन में युवाओं के विकास और निर्माण के सभी कार्य संभव होंगे।

गरीब कल्याण मिशन स्वरोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधा आदि की दिशा में कार्य करेगा। नारी शक्ति मिशन के तहत बालिका शिक्षा, लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना, लखपति दीदी योजना, महिला स्व-सहायता समूहों के सशक्तिकरण आदि कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ किये जायेंगे।

# रोते-रोते रात सो गई

अटल बिहारी वाजपेयी

झुकी न अलकें
झपी न पलकें
सुधियों की बारात खो गई।

दर्द पुराना,
मीत न जाना,
बातों में ही प्रात हो गई।
घुमड़ी बदली,
बूँद न निकली,
बिछुड़न ऐसी व्यथा बो गई।

किसान कल्याण मिशन में कृषि और उद्यानिकी को लाभ का व्यवसाय बनाने की दिशा में कार्य होंगे। किसानों को राहत प्रदान करने के साथ कृषि की उपज बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास किये जायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प को पूरा करने में इन चारों मिशन की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

हमारा प्रयास है कि मध्यप्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र के विशिष्ट उत्पादों के अनुरूप उद्योग स्थापित हों। इसके लिए हमने रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, सागर और रीवा में आयोजन किया।

हैदराबाद, कोयंबटूर तथा मुंबई में रोड शो और उद्योगपतियों को निवेश के लिये प्रदेश में आमंत्रित करना उद्योग विस्तार का उपक्रम है। इससे विपुल क्षेत्रीय स्थानीय उत्पाद के अनुसार उद्योग स्थापना का क्रम आरंभ होगा और औद्योगिक विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन आयेगा।

मेरा संकल्प है कि प्रदेश की धरती पर कभी जल का संकट न आए इसका एक-एक कोना जल से सिंचित हो। इसके लिए हमने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में केन-बेतवा और पार्वती-काली-सिंध चंबल नदी लिंक परियोजनाओं पर तेजी से कार्य आरंभ कर दिया है। इस अभियान में सदानीरा नदियों के जल को मौसमी नदियों के साथ जोड़ने से हमारे अन्नदाता किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मिलेगा,पेयजल की समस्या समाप्त होगी और धरती का जल स्तर बढ़ेगा।

कृषि के साथ गौ-पालन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक गांव में गौ-शाला खोली जायेगी। गाय हमारी संस्कृति और कृषि का आधार है। प्रदेश में हम गौ-संरक्षण एवं संवर्धन वर्ष मना रहे हैं।

प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में सुशासन के लिए होने वाले प्रयास में साइबर तहसील परियोजना को सभी 55 जिलों में लागू किया गया है। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है।

थानों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण, राजस्व महाअभियान के 2 चरणों में नामांतरण, बंटवारा, अभिलेख दुरुस्ती, नक्शा सुधार और सीमांकन के 80 लाख से अधिक लंबित प्रकरणों का निराकरण, आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन व्यवस्था लागू की है। गरीब कल्याण हमारी प्राथमिकता है। कार्य के आरंभ में ही हमने इंदौर की हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 मजदूरों को उनका अधिकार दिलाया और गंभीर बीमारी के गरीब मरीजों के लिये पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा शुरू की। बेटियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिये सेनिटेशन एवं हाइजीन योजना में 19 लाख किशोरियों के खातों में 57 करोड़ रूपये से अधिक राशि प्रदान की गई। इस कार्य को यूनिसेफ इंडिया द्वारा भी सराहना मिली है।

मध्यप्रदेश गौरवशाली विरासत और संस्कृति से समृद्ध है। इसे सहेजने तथा आध्यात्मिक अभ्युदय की दिशा में श्रीराम वन गमन पथ, श्रीकृष्ण पाथेय का निर्माण, पीएमश्री पर्यटन वायुसेवा, वीर भारत न्यास का शिलान्यास, विक्रमोत्सव के आयोजन में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का शुभारंभ, शासकीय कैलेंडर में विक्रम संवत अंकित करना। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के क्रम में रक्षाबंधन, श्रावण उत्सव तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया गया।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में विकास की जो गंगा प्रवाहित हो रही है, उससे प्रदेश तीव्र गति से विकास की ओर अग्रसर है। केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं, पीएम स्व-निधि योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पीएम आवास योजना, कृषि अवसंरचना निधि, प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना, पीएम स्वामित्व योजना, नशामुक्त भारत अभियान, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन, स्वच्छ भारत मिशन आदि के क्रियान्वयन और पात्र हितग्राहियों को उनका लाभ दिलाने में मध्यप्रदेश, देश में अग्रणी है।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि यह आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक अभ्युदय का समय है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में, नीतियों और निर्णयों को अमल में लाने के लिए मुझे प्रदेशवासियों की संकल्प शक्ति चाहिए।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप स्थानीय उत्पादों का उपयोग करें, स्थानीय विशेषताओं के अनुरूप विकास यात्रा में सहभागी बनें और वोकल फॉर लोकल को अपनाएं। प्रदेश के युवा, महिलाएं, अन्नदाता और गरीब वर्ग समान रूप से प्रगति करें, सबका जीवन खुशहाल हो, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी अधोसंरचना के क्षेत्र में प्रदेश विकसित और मजबूत बने, इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए हम पूर्ण समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मध्यप्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता के साथ, सहयोग और संकल्प से हम आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश बनाएंगे और विकसित भारत के निर्माण में सहभागी होंगे।

**प्रदेशवासियों को मध्यप्रदेश के 69वें स्थापना दिवस की मंगलकामनाएं... ▪**

**(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)**

# आजादी के अमृतकाल में रानी दुर्गावती के विचारों की प्रासंगिकता

हितानंद शर्मा

**रानी दुर्गावती मात्र अधिकारियों के द्वारा प्रदत्त जानकारी पर आश्रित होकर प्रजा को शासित नहीं करती थीं, अपितु वे अपना वेश बदलकर जनता की नब्ज टटोलती थीं।**

मध्य भारत की सुनहरी भूमि पर स्थित कालिंजर के किले में चन्देल वंश में उत्पन्न महारानी दुर्गावती की शौर्य गाथा से पूरा भारत परिचित है। रानी दुर्गावती के शासनकाल में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक चारों पुरुषार्थ विद्यमान थे और आकाश-वायु-अग्नि आदि पंचमहाभूत सन्तुलित होकर माता वसुन्धरा के संरक्षण व संवर्धन करने को लालायित थे। प्रजा खुशहाल थी और अर्थव्यवस्था समृद्धि की हिलोरें मार रही थी। चन्दन से महात्माओं का अभिनन्दन और मन्दिरों में पुष्पों से प्रभु का वन्दन होता था। उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण आज आजादी के अमृतकाल में रानी दुर्गावती के 500वें जन्म दिवस के समय गोंडवाना क्षेत्र में रानी दुर्गावती का जीवनवृत्त बच्चे-बच्चे की मुंहबोली शौर्यगाथा बन चुका है।

नवरात्र में जन्मी (तिथि- 05 अक्टूबर, 1524, स्थान- कालिंजर दुर्ग) रानी को माता भगवती की विशेष अनुकम्पा जानकर ही महाराजा कीरत सिंह ने अपने ज्योतिषाचार्यों से विचार-विमर्श करने के पश्चात उस कन्या का नाम दुर्गावती रखा था, जो खेलने-कूदने की अल्पायु में ही शस्त्रास्त्रों में अपनी रुचि देखने लगी थी। इस सन्दर्भ में प्रो. चित्रभूषण श्रीवास्तव जी की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करने योग्य हैं -''पन्द्रह सौ चौबीस में जन्मी वो चन्देलों की शान थीं। कालिंजर राजा की बेटी वो इकलौती सन्तान थीं। दुर्गाष्टमी अवतरण दिवस दुर्गा का ही अवतार थीं, थर्राये मुगलों की सेना ऐसी भीषण ललकार थी।''

गोंडवाना रानी के राज्य की विदेश नीति तथा उनके निर्णयों में राज्य की सम्प्रभुता, स्वतन्त्रता तथा सामाजिक समरसता को सदैव ध्यान में रखा गया था। सम्प्रति, रानी दुर्गावती के 500वें जन्मवर्ष में उनके ये विचार आधुनिक भारतीय लोकतन्त्र के लिए अवश्य ही प्रेरक हैं, क्योंकि जब समूचा विश्व दो गुटों में बंटा हुआ है, तो प्रजा के कल्याण हेतु ऐसे कठिन निर्णय लेने होते हैं, जो राज्य की सम्प्रभुता, अक्षुण्णता और स्वतन्त्रता को ठेस न पहुंचावे। रानी दुर्गावती ने मुगल आक्रान्ता अकबर को उसी की भाषा में प्रत्युत्तर दिया, जबकि वे मुगल सैन्य शक्ति से भली-भाँति परिचित थी। वे अपने राज्य की विदेश नीति और आन्तरिक सुरक्षा हेतु अपनी गुप्तचर संस्था के साथ नियमित रूप से बैठती थीं, जैसा कि वर्तमान काल में किसी देश का प्रधानमन्त्री अपनी गुप्तचर संस्था के साथ बैठक करता है और अपनी विदेश नीति व कूटनीति को कार्यान्वित करता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि सम-सामयिक सन्दर्भ में महारानी दुर्गावती की विदेश नीति विषयक विचार अति प्रासंगिक हैं। विख्यात शासिका दुर्गावती ने गोंडवाना राज्य के रामनगर, नयनपुर, कंजरिया, कांजीवाडा, लांजी, धूमा, कतंक, बैहर, डिंगैरी, कोतमा, गाडरवारा, बनखेडी, सोहागपुर, मैहर, गैरतगंज, भेलसा, गंजबसौदा, रायसेन, सिरौंज, भोजपाल, सिहोरा, पनानगर आदि क्षेत्रों में सुव्यस्थित जलापूर्ति व जल निकास हेतु अनेक तालाब, नहर, बावली, कुओं आदि का निर्माण कराया था। तात्कालिक परिस्थिति में यह कार्य निःसन्देह प्रजा कल्याण हेतु सराहनीय प्रयास था, किन्तु सम्प्रति, जब महारानी दुर्गावती का 500वाँ जन्म दिवस वर्ष है, तो जलवायु परिवर्तन के इस काल में तत्सदृश जलापूर्ति व निकास व्यवस्था प्रासंगिक सी लगती है। वर्तमान जबलपुर के परिक्षेत्र में यह भी प्रसिद्ध है कि इस क्षेत्र में लोक कल्याणार्थ रानी ने 52 तालाबों का निर्माण कराया था। जिससे वर्षा के जल का संरक्षण और भू-जल की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। इस समय, सकल विश्व स्वच्छ जल की उपलब्धता हेतु संघर्षरत है, जल बचाने की बातें प्रतिदिन हम सोशल मीडिया के माध्यम से देखते हैं, ऐसे में महारानी दुर्गावती के जलापूर्ति सम्बन्धी विचार और भारत के विविध क्षेत्रों में नहर, तालाब, कुओं आदि का निर्माण समृद्ध भारत के पुनर्निर्माण (आजादी के अमृतकाल) में निश्चित ही प्रेरक सिद्ध होंगे।

महारानी दुर्गावती ने धार्मिक समन्वय स्थापित करने हेतु भी अनेक सफल प्रयास किये थे, जिसके कारण विविध मतावलम्बियों में परस्पर गतिरोध न होते हुए समन्वय स्थापित हुआ था। महारानी दुर्गावती अपने धर्म के प्रति भी पूर्णरूपेण समर्पित रहती थीं। उन्होंने हिन्दू देवी-देवताओं के विभिन्न मन्दिरों का निर्माण कराया था और अनेक मन्दिरों में प्रभु श्रीराम, भद्रकाली, विष्णु भगवान आदि देवताओं की प्रतिमा स्थापित कर धार्मिक सद्भावना का सन्देश दिया था। इस सम्बन्ध में प्रख्यात ''महारानी दुर्गावती'' नामक ग्रन्थ उल्लेखनीय है, जिसमें रानी दुर्गावती द्वारा निर्देशित बीरबल द्वारा शैक्षणिक कार्य, गोदान, अन्नदान, मन्दिरों व विद्यालयों के निमित्त भूदान आदि का वर्णन है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जब एक ओर कट्टरवादी ताकतें गिद्धमुख किये भारतीय संस्कृति को निहार रही हैं, तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र ''समन्वय और समरसता'' की भावना द्वारा इनको परास्त करना अत्यावश्यक है, जो कि महारानी की राजनीति में दृष्टिगोचर होता था। क्योंकि किसी देश की महानता और उसकी समृद्धि में समाज के प्रत्येक वर्ग का सहयोग अपेक्षित होता है और सभी के समन्वय व सहयोग से ही कोई राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होता है।

रानी दुर्गावती मात्र अधिकारियों के द्वारा प्रदत्त जानकारी पर आश्रित होकर प्रजा को शासित नहीं करती थीं, अपितु वे अपना वेश बदलकर जनता की नब्ज टटोलती थीं। वे सामान्य प्रजा के मध्य जाकर उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी में आने वाली चुनौतियों को प्रजा के द्वारा ही सुनती थी और उन चुनौतियों का तत्काल अथवा राजदरबार के माध्यम से निवारण किया करती थीं। जैसा कि एक शासक को अपने गुप्तचरों के माध्यम से ऐसा करना चाहिए, या स्वयं ही औचक निरीक्षण के माध्यम से सत्य का ज्ञान करना चाहिए। ▪

**(लेखक-भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं)**

# भारत के बारे में और अधिक जानने को उत्सुक हैं, दुनिया भर के लोग

- सरदार पटेल और बिरसा मुंडा ने राष्ट्रीय एकता का विजन साझा किया।
- भारत को ग्लोबल एनीमेशन पावर हाउस बनाने का संकल्प लें।
- आत्मनिर्भर भारत की ओर यात्रा एक जन-अभियान बन गई है।
- स्टॉप, थिंक एंड एक्ट।
- देश भर में कई असाधारण लोग हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद कर रहे हैं।
- दुनिया भर के लोग भारत के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं।
- इस बात की खुशी है कि भारत में लोग फिटनेस के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं।

**पिछले साल 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती पर उनकी जन्मस्थली झारखंड के उलिहातू गाँव गया था। इस यात्रा का मुझ पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा।**

मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूँ, जिसे इस पवित्र भूमि की मिट्टी को अपने मस्तक से लगाने का सौभाग्य मिला। उस क्षण, मुझे न सिर्फ स्वतंत्रता संग्राम की शक्ति महसूस हुई, बल्कि, इस धरती की शक्ति से जुड़ने का भी अवसर मिला।

मुझसे पूछें कि मेरे जीवन के सबसे यादगार पल क्या रहे, तो कितने ही वाकये याद आते हैं, लेकिन, इसमें भी एक पल ऐसा है जो बहुत खास है, वो पल था, जब पिछले साल 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती पर उनकी जन्मस्थली झारखंड के उलिहातू गाँव गया था। इस यात्रा का मुझ पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूँ, जिसे इस पवित्र भूमि की मिट्टी को अपने मस्तक से लगाने का सौभाग्य मिला। उस क्षण, मुझे न सिर्फ स्वतंत्रता संग्राम की शक्ति महसूस हुई, बल्कि, इस धरती की शक्ति से जुड़ने का भी अवसर मिला। मुझे ये एहसास हुआ कि कैसे एक संकल्प को पूरा करने का साहस देश के करोड़ों लोगों का भाग्य बदल सकता है।

भारत में हर युग में कुछ चुनौतियाँ आई और हर युग में ऐसे असाधारण भारतवासी जन्मे, जिन्होंने इन चुनौतियों का सामना किया। 'मन की बात' में, मैं, साहस और दूरदृष्टि रखने वाले ऐसे ही दो महानायकों की चर्चा करूंगा। इनकी 150वीं जन्म जयंती को देश ने मनाने का निश्चय किया है। 31 अक्टूबर से सरदार पटेल का 150वीं जन्म जयंती का वर्ष शुरू होगा। इसके बाद 15 नवम्बर से भगवान बिरसा मुंडा का 150वाँ जन्म जयंती वर्ष शुरू होगा। इन दोनों महापुरुष ने अलग-अलग चुनौतियाँ देखी, लेकिन, दोनों का vision एक था 'देश की एकता'।

बीते वर्षों में देश ने ऐसे महान नायक-नायिकाओं की जन्म जयंतियों को नई ऊर्जा से मनाकर, नई पीढ़ी को, नई प्रेरणा दी है। जब हमने महात्मा गांधी जी की 150वीं जन्म जयंती मनाई थी तो कितना कुछ खास हुआ था। New York के Times Square से Africa के छोटे से गाँव तक, विश्व के लोगों ने भारत के सत्य और अहिंसा के संदेश को समझा, उसे फिर से जाना, उसे जिया। नौजवानों से बुजुर्गों तक, भारतीयों से विदेशियों तक, हर किसी ने गांधी जी के उपदेशों को नए संदर्भ में समझा, नई वैश्विक परिस्थितियों में उन्हें जाना। जब हमने स्वामी विवेकानंद जी की 150वीं जन्म जयंती मनाई तो देश के नौजवानों ने भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शक्ति को नई परिभाषाओं में समझा। इन योजनाओं ने हमें ये एहसास दिलाया कि हमारे महापुरुष अतीत में खो नहीं जाते, बल्कि, उनका जीवन हमारे वर्तमान को भविष्य का रास्ता दिखाता है।

सरकार ने भले ही इन महान विभूतियों की 150वीं जन्म जयंती को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया है, लेकिन आपकी सहभागिता ही इस अभियान में प्राण भरेगी, इसे जीवंत

बनाएगी। मैं सभी से आग्रह करूंगा कि इस अभियान का हिस्सा बनें। लौह पुरुष सरदार पटेल से जुड़े अपने विचार और कार्य #Sardar150 के साथ साझा करें और धरती-आबा बिरसा मुंडा की प्रेरणाओं को #BirsaMunda150 के साथ दुनिया के सामने लाएँ। आईये, एक साथ मिलकर इस उत्सव को भारत की अनेकता में एकता का उत्सव बनाएँ, इसे विरासत से विकास का उत्सव बनाएँ।

आपको वो दिन जरूर याद होंगे जब ''छोटा भीम'' टीवी पर आना शुरू हुआ था। बच्चे तो इसे कभी भूल नहीं सकते, कितना excitement था 'छोटा भीम' को लेकर। आपको हैरानी होगी कि आज 'ढोलकपुर का ढोल', सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देश के बच्चों को भी खूब attract करता है। इसी तरह, हमारे दूसरे animated serials, 'कृष्णा', 'हनुमान', 'मोटू-पतलू' के चाहने वाले भी दुनियाभर में हैं। भारत के animation characters यहाँ की animation movies, अपने content और creativity की वजह से दुनिया-भर में पसंद की जा रही हैं। आपने देखा होगा कि Smartphone से लेकर सिनेमा screen तक, gaming console से लेकर virtual reality तक, animation हर जगह मौजूद है। Animation की दुनिया में भारत नई क्रांति करने की राह पर है। भारत के Gaming Space का भी तेजी से विस्तार हो रहा है। Indian games भी इन दिनों दुनिया-भर में popular हो रहे हैं। कुछ महीने पहले मैंने भारत के leading gamers के साथ मुलाकात की थी, तब मुझे, Indian games की amazing creativity और quality को जानने-समझने का मौका मिला था। वाकई, देश में creative energy की एक लहर चल रही है। Animation की दुनिया में 'Made in India' और 'Made by Indians' छाया हुआ है। आपको ये जानकर खुशी होगी कि भारत के talent, विदेशी productions का भी अहम् हिस्सा बन रहे हैं। अभी वाली Spider-Man हो या Transformers, इन दोनों movies में हरिनारायण राजीव के contribution को लोगों ने खूब सराहा है। भारत के Animation studios, Disney और Warner Brothers जैसी, दुनिया के जाने-माने production companies के साथ काम कर रहे है।

हमारे युवा Original Indian Content, जिसमें हमारी संस्कृति की झलक होती है, वो, तैयार कर रहे हैं। इन्हें दुनिया-भर में देखा जा रहा है। Animation sector आज एक ऐसी industry का रूप ले चुका है कि जो दूसरी industries को ताकत दे रहा है, जैसे, इन दिनों VR Tourism बहुत famous हो रहा है। आप virtual tour के माध्यम से अजंता की गुफाओं को देख सकते हैं, कोणार्क मंदिर के corridor में टहल सकते हैं, या फिर, वाराणसी के घाटों का आनंद ले सकते है। ये सभी VR Animation भारत के creators ने तैयार किए है। VR के माध्यम से इन जगहों को देखने के बाद कई लोग वास्तविकता में इन पर्यटन स्थलों का दौरा करना चाहते हैं, यानि tourist destination का virtual tour, लोगों के मन में जिज्ञासा पैदा करने का माध्यम बन गया है। आज इस sector में animators के साथ ही story tellers, writers, voice-over experts, musicians, game developers, VR और AR experts उनकी भी मांग लगातार बढ़ती जा रही है। इसलिए, मैं भारत के युवाओं से कहूँगा - अपनी creativity को विस्तार दें। क्या पता दुनिया का अगला super hit animation आपके computer से निकले! अगला viral game आपका creation हो सकता है! Educational animations में आपका innovation बड़ी सफलता हासिल कर सकता है। 28 अक्टूबर को 'World Animation Day' भी मनाया जाएगा। आइए, हम भारत को global animation power house बनाने का संकल्प लें।

स्वामी विवेकानंद ने एक बार सफलता का मंत्र दिया था, उनका मंत्र था- 'कोई एक idea लीजिए, उस एक idea को अपनी जिंदगी बनाइए, उसे सोचिए, उसका सपना देखिए, उसे जीना शुरू करिए।' आज, आत्मनिर्भर भारत अभियान भी सफलता के इसी मंत्र पर चल रहा है। ये अभियान हमारी सामूहिक चेतना का हिस्सा बन गया है। लगातार, पग-पग पर हमारी प्रेरणा बन गया है। आत्मनिर्भरता हमारी policy ही नहीं, हमारा passion बन गया है। बहुत साल नहीं हुए, सिर्फ 10 साल पहले की बात है, तब अगर कोई कहता था कि किसी complex technology को भारत में विकसित करना है तो कई लोगों को विश्वास नहीं होता था, तो कई उपहास उड़ाते थे - लेकिन आज वही लोग, देश की सफलता को देखकर अचंभे में रहते हैं। आत्मनिर्भर हो रहा भारत, हर sector में कमाल कर रहा है। आप सोचिए, एक जमाने में mobile phone import करने वाला भारत, आज, दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा manufacturer बन गया है। कभी दुनिया में सबसे ज्यादा defence equipment खरीदने वाला भारत, आज, 85 देशों को export भी कर रहा है। Space technology में भारत, आज, चंद्रमा के South Pole पर पहुँचने वाला पहला देश बना है, और एक बात तो मुझे सबसे ज्यादा अच्छी लगती है, वो ये है कि, आत्मनिर्भरता का ये अभियान, अब सिर्फ सरकारी अभियान नहीं है, अब आत्मनिर्भर भारत अभियान, एक जन अभियान बन रहा है - हर क्षेत्र में उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं। जैसे इसी महीने लद्दाख के हानले में हमने एशिया की सबसे बड़ी 'Imaging Telescope MACE' का भी उद्घाटन किया है। ये 4300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। जानते हैं इसकी भी खास बात क्या है! ये 'Made in India' है। सोचिए, जिस स्थान पर minus 30 degree की ठंड पड़ती हो, जहाँ, Oxygen तक का अभाव हो, वहाँ हमारे वैज्ञानिकों और Local industry ने वो कर दिखाया है, जो एशिया के किसी देश ने नहीं किया। हानले का telescope भले ही दूर की दुनिया देख रहा हो, लेकिन ये हमें एक चीज और भी दिखा रहा है और ये चीज है - आत्मनिर्भर भारत का सामर्थ्य।

मैं चाहता हूँ आप भी एक काम जरूर करें। आत्मनिर्भर होते भारत के ज्यादा-से-ज्यादा उदाहरण, ऐसे प्रयासों को, share करिए। आपने, अपने पड़ोस में कौन सा नया Innovation देखा, किस Local start-up ने आपको सबसे ज्यादा Impress किया, #AatmanirbharInnovation के साथ social media पर ये जानकारियाँ लिखिए और आत्मनिर्भर भारत का उत्सव मनाइए। त्योहारों के इस मौसम में तो हम सब आत्मनिर्भर भारत के इस अभियान को और मजबूत करते हैं। हम Vocal for Local के मंत्र के साथ अपनी खरीदारी करते हैं। ये नया भारत है जहां Impossible सिर्फ एक Challenge है, जहां Make in India अब Make for the world बन गया है, जहां हर नागरिक Innovator है, जहां हर challenge एक opportunity है। हमें न सिर्फ भारत को आत्मनिर्भर बनाना है, बल्कि, अपने देश को Innovation के global powerhouse के रूप में मजबूत भी करना है।

मैं आपको एक audio सुनाता हूँ

Fraud Caller 1 : Hello

Victim: सर नमस्ते सर

Fraud Caller 1: नमस्ते

Victim : सर बोलिये सर

Fraud Caller 1: देखिये ये जो आपने FIR नंबर मुझे send किया है, इस नंबर के खिलाफ 17 complaints हैं हमारे पास, आप ये नंबर use कर रहे हैं?

Victim : मैं ये नहीं use करता हूँ सर

Fraud Caller 1: अभी कहाँ से बात कर रहे हो?

Victim : सर कर्नाटका सर, अभी घर में हूँ सर

Fraud Caller 1: Ok, चलिए आप अपने statement record करवाईये ताकि ये नंबर block कर लिया जाए। future में आपको कोई problem न हो, Ok

Victim : Yes Sir

Fraud Caller 1: अभी मैं आपको connect कर रहा हूँ, ये आपका Investigation Officer है। आप अपनी statement record करवाईये ताकि ये नंबर block कर दिया जाए, Ok

Victim : Yes Sir

Fraud Caller 1: हाँ जी बताइये, क्या मैं किसके साथ बात कर रहा हूँ? अपना आधार कार्ड मुझे show कीजिएगा, verify करने के लिए बताईये

Victim : सर मेरे पास अभी नहीं है सर आधार कार्ड सर, please sir

Fraud Caller 1: फोन, आपके फोन में है?

Victim : नहीं सर

Fraud Caller 1: फोन में आधार कार्ड की picture नहीं है आपके पास?

Victim : नहीं सर

Fraud Caller 1: नंबर याद है आपको?

Victim : सर नहीं है सर, नंबर भी याद नहीं है सर

Fraud Caller 1: हमने सिर्फ verify करना है, ok, verify करने के लिए

Victim : नहीं सर

Fraud Caller 1: आप डरिए न, डरिए न, अगर आपने कुछ नहीं किया है तो आप डरिए न

Victim : हाँ सर, हाँ सर

Fraud Caller 1: आपके पास आधार कार्ड है तो मुझे दिखा दीजिये verify करने के लिए

Victim : नहीं सर, नहीं सर, मैं गाँव पर आया था सर उधर घर में है सर

Fraud Caller 1: Ok

दूसरी आवाज May I come in sir

Fraud Caller 1: Come in

Fraud Caller 2: जय हिन्द

Fraud Caller 1: जय हिन्द

Fraud Caller 1: इस व्यक्ति की one sided video call record करो as per the protocol, ok.

ये audio सिर्फ जानकारी के लिए नहीं है, ये कोई मनोरंजन वाला audio नहीं है, एक गहरी चिंता को लेकर के audio आया है। आपने अभी जो बातचीत सुनी, वो digital arrest के फरेब की है। ये बातचीत एक पीड़ित और fraud करने वाले के बीच हुई है। Digital arrest के fraud में phone करने वाले, कभी पुलिस, कभी C.B.I., कभी Narcotics , कभी R.B.I., ऐसे भांति-भांति के label लगाकर बनावटी अधिकारी बनकर बात करते हैं और बड़े confidence के साथ करते हैं। मुझे 'मन की बात' के बहुत से श्रोताओं ने कहा कि इसकी चर्चा जरूर करनी चाहिए। आइए, मैं आपको बताता हूँ, ये fraud करने वाली गैंग काम कैसे करती है, ये खतरनाक खेल क्या है? आपको भी समझना बहुत जरूरी है औरों को भी समझना उतना ही आवश्यक है।

पहला दांव - आपकी व्यक्तिगत जानकारी, वो सब जुटा करके रखते हैं ''आप पिछले महीने गोवा गए थे, है ना? आपकी बेटी दिल्ली में पढ़ती है, है ना''? वे आपके बारे में इतनी जानकारी जुटाकर रखते हैं कि आप दंग रह जाएंग।

दूसरा दांव - भय का माहौल पैदा करो, वर्दी, सरकारी दफ्तर का set-up, कानूनी धाराएं, वो आपको इतना डरा देंगे phone पर बातों - बातों में आप सोच भी नहीं पाएंगे। और फिर उनका तीसरा दांव, शुरू होता है,

तीसरा दांव - समय का दबाव, 'अभी फैसला करना होगा वर्ना आपको गिरफ्तार करना पड़ेगा',

- ये लोग पीड़ित पर इतना मनोवैज्ञानिक दवाब बना देते हैं कि वो सहम जाता है। Digital arrest के शिकार होने वालों में हर वर्ग, हर उम्र के लोग हैं। लोगों ने डर की वजह से अपनी मेहनत से कमाए हुए लाखों रुपए गवां दिए हैं। कभी भी आपको इस तरह का कोई call आए तो आपको डरना नहीं है। आप को पता होना चाहिए कोई भी जांच agency, Phone call या Video Call पर इस तरह पूछताछ कभी भी नहीं करती। मैं आपको Digital सुरक्षा के तीन चरण बताता हूँ। ये तीन चरण हैं -

'रुको-सोचो- Action लो'। Call आते ही, 'रुको' - घबराएं नहीं, शांत रहें, जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएं, किसी को अपनी व्यक्तिगत जानकारी न दें, संभव हो तो screenshot लें और Recording जरूर करें। इसके बाद आता है, दूसरा चरण, पहला चरण था 'रुको', दूसरा चरण है 'सोचो'। कोई भी सरकारी Agency Phone पर ऐसे धमकी नहीं देती, न ही Video call पर पूछताछ करती है, न ही ऐसे पैसे की मांग करती है - अगर डर लगे तो समझिए कुछ गड़बड़ है। और पहला चरण, दूसरा चरण और अब मैं कहता हूँ तीसरा चरण। पहले चरण में मैंने कहा- 'रुको', दूसरे चरण में मैंने कहा- 'सोचो', और तीसरा चरण कहता हूँ - 'एक्शन लो'। राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 डायल करें, cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें, परिवार और पुलिस को सूचित करें, सबूत सुरक्षित रखें। 'रुको', बाद में 'सोचो', और फिर 'एक्शन; लो, ये तीन चरण आपकी डिजिटल सुरक्षा का रक्षक बनेंगे।

मैं फिर कहूँगा digital arrest जैसी कोई

व्यवस्था कानून में नहीं है, ये सिर्फ fraud है, फरेब है, झूठ है, बदमाशों का गिरोह है और जो लोग ऐसा कर रहे हैं, वो समाज के दुश्मन है। digital arrest के नाम पर जो फरेब चल रहा है, उससे निपटने के लिए तमाम जांच एजेंसियाँ, राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम कर रही हैं। इन एजेंसियों में तालमेल बनाने के लिए National Cyber Co-ordination Centre की स्थापना की गई है। एजेंसियों की तरफ से ऐसे fraud करने वाली हजारों video calling ID को block किया गया है। लाखों sim card, mobile phone और bank accounts को भी block किया गया है। एजेंसियाँ अपना काम कर रही हैं, लेकिन digital arrest के नाम पर हो रहे scam से बचने के लिए बहुत जरूरी है - हर किसी की जागरूकता, हर नागरिक की जागरूकता। जो लोग भी इस तरह के cyber fraud का शिकार होते हैं, उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को इसके बारे में बताना चाहिए। आप जागरूकता के लिए #SafeDigitalIndia का प्रयोग कर सकते हैं। मैं स्कूलों और कॉलेजों को भी कहूँगा कि cyber scam के खिलाफ मुहिम में छात्रों को भी जोड़ें। समाज में सबके प्रयासों से ही हम इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं।

हमारे बहुत सारे स्कूली बच्चे calligraphy यानि सुलेख में काफी दिलचस्पी रखते है। इसके जरिए हमारी लिखावट साफ, सुंदर और आकर्षक बनी रहती है। जम्मू-कश्मीर में इसका उपयोग local culture को लोकप्रिय बनाने के लिए किया जा रहा है। यहाँ के अनंतनाग की फिरदौसा बशीर जी उनको calligraphy में महारत हासिल है, इसके जरिए वे स्थानीय संस्कृति के कई पहलुओं को सामने ला रही हैं। फिरदौसा जी की calligraphy ने स्थानीय लोगों, विशेषकर युवाओं को, अपनी ओर आकर्षित किया है। ऐसा ही एक प्रयास उधमपुर के गोरीनाथ जी भी कर रहे हैं। एक सदी से भी अधिक पुरानी सारंगी के जरिए वे डोगरा संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों को सहेजने में जुटे हैं। सारंगी की धुनों के साथ वे अपनी संस्कृति से जुड़ी प्राचीन कहानियां और ऐतिहासिक घटनाओं को दिलचस्प तरीके से बताते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में भी आपको ऐसे कई असाधारण लोग मिल जाएंगे जो सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए आगे आए हैं। डी. वैयकुन्ठम करीब 50 साल से चेरियाल फोक आर्ट (Folk Art) को लोकप्रिय बनाने में जुटे हुए हैं। तेलंगाना से जुड़ी इस कला को आगे बढ़ाने का उनका यह प्रयास अद्भुत है। चेरियाल पेंटिंग्स (Paintings) को तैयार करने की प्रक्रिया बहुत ही unique है। ये एक scroll के स्वरूप में 'कहानियों' को सामने लाती है।

इसमें हमारी History और Mythology की पूरी झलक मिलती है। छत्तीसगढ़ में नारायणपुर के बुटलूराम माथरा जी अबूझमाड़िया जनजाति की लोक कला को संरक्षित करने में जुटे हुए हैं। पिछले चार दशकों से वे अपने इस mission में लगे हुए हैं। उनकी ये कला 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' और 'स्वच्छ भारत' जैसे अभियान से लोगों को जोड़ने में भी बहुत कारगर रही है।

अभी हम बात कर रहे थे कैसे कश्मीर की वादियों से लेकर छत्तीसगढ़ के जंगलों तक, हमारी कला और संस्कृति नए-नए रंग बिखेर रही है, लेकिन यह बात यहीं खत्म नहीं होती। हमारी इन कलाओं की खुशबू दूर-दूर तक फैल रही है। दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग भारतीय कला और संस्कृति से मंत्रमुग्ध हो रहे हैं। जब मैं आपको उधमपुर में गूँजती सारंगी की बात बता रहा था, तब मुझे याद आया कि कैसे हजारों मील दूर, रूस के शहर याकूत्स्क में भी भारतीय कला की मधुर धुन गूंज रही है। कल्पना कीजिए, सर्दी का एक-आध दिन, minus 65 डिग्री तापमान, चारों तरफ बर्फ की सफेद चादर और वहाँ एक theatre में दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देख रहे हैं - कालिदास की ''अभिज्ञान शाकुंतलम''। क्या आप सोच सकते हैं दुनिया के सबसे ठंडे शहर याकूत्स्क में, भारतीय साहित्य की गर्मजोशी! ये कल्पना नहीं सच है - हम सबको गर्व और आनंद से भर देने वाला सच।

कुछ हफ्ते पहले, मैं Laos भी गया था। वो नवरात्रि का समय था और वहाँ मैंने कुछ अद्भुत देखा। स्थानीय कलाकार ''फलक फलम'' प्रस्तुत कर रहे थे -'Laos की रामायण'। उनकी आँखों में वही भक्ति, उनके स्वर में वही समर्पण, जो रामायण के प्रति हमारे मन में है। इसी तरह, कुवैत में श्री अब्दुल्ला अल-बारुन ने रामायण और महाभारत का अरबी में अनुवाद किया है। यह कार्य मात्र अनुवाद नहीं, बल्कि दो महान संस्कृतियों के बीच एक सेतु है। उनका यह प्रयास अरब जगत में भारतीय साहित्य की नई समझ विकसित कर रहा है। पेरू से एक और प्रेरक उदाहरण है - एरलिंदा गार्सिआ (Erlinda Garcia) वहाँ के युवाओं को भरतनाट्यम सिखा रही हैं और मारिया वालदेस (Maria Valdez) ओडिसी नृत्य का प्रशिक्षण दे रही हैं। इन कलाओं से प्रभावित होकर, दक्षिण अमेरिका के कई देशों में 'भारतीय शास्त्रीय नृत्य' की धूम मची हुई है।

विदेशी धरती पर भारत के ये उदाहरण दर्शाते हैं कि भारतीय संस्कृति की शक्ति कितनी अद्भुत है। ये लगातार विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

''जहां-जहां कला है, वहां-वहां भारत है''

''जहां-जहां संस्कृति है, वहां-वहां भारत है''

आज दुनिया भर के लोग भारत को जानना चाहते हैं, भारत के लोगों को जानना चाहते हैं। इसलिए आप सभी से एक अनुरोध भी है, अपने आस-पास ऐसी सांस्कृतिक पहल को #CulturalBridges के साथ साझा कीजिए। 'मन की बात' में हम ऐसे उदाहरण पर आगे भी चर्चा करेंगे।

देश के बड़े हिस्से में ठंड का मौसम शुरू हो गया है, लेकिन Fitness का passion, Fit India की spirit - इसे किसी भी मौसम से फर्क नहीं पड़ता। जिसे Fit रहने की आदत होती है, वो सर्दी, गर्मी, बरसात कुछ भी नहीं देखता। मुझे खुशी है कि भारत में अब लोग Fitness को लेकर बहुत ज्यादा जागरूक हो रहे हैं। आप भी देख रहे होंगे कि आपके आसपास के पार्कों में लोगों की संख्या बढ़ रही है। पार्क में टहलते बुजुर्गों, नौजवानों, और योग करते परिवारों को देखकर, मुझे, अच्छा लगता है। मुझे याद है, जब मैं योग दिवस पर श्रीनगर में था, बारिश के बावजूद भी, कितने ही लोग 'योग' के लिए जुटे थे। अभी कुछ दिन पहले श्रीनगर में जो marathon हुई उसमें भी मुझे fit रहने का यही उत्साह दिखाई दिया। Fit India की ये भावना, अब एक mass movement बन रही है।

मुझे ये देखकर भी अच्छा लगता है कि हमारे schools, बच्चों की fitness पर अब और ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। Fit India School Hours भी एक अनोखी पहल है। Schools अपने first period का इस्तेमाल अलग-अलग fitness activities के लिए कर रहे हैं। कितने ही स्कूलों में, किसी दिन बच्चों को योग करवाया जाता है, कभी किसी दिन aerobics के session होते है, तो एक दिन sports skills पर काम किया जाता है, किसी दिन खो-खो और कबड्डी जैसे पारंपरिक खेल खिलाए जा रहे हैं, और इसका असर भी बहुत शानदार है। Attendance अच्छी हो रही है, बच्चों का concentration बढ़ रहा है और बच्चों को मजा भी आ रहा है।

मैं Wellness की ये ऊर्जा हर जगह देख रहा हूं। 'मन की बात' के भी बहुत से श्रोताओं ने मुझे अपने अनुभव भेजे हैं। कुछ लोग तो बहुत ही रोचक प्रयोग कर रहे हैं। जैसे एक उदाहरण है, Family Fitness Hour का, यानि एक परिवार, हर weekend एक घंटा Family Fitness Activity के लिए दे रहा है। एक और उदाहरण Indigenous Games Revival का है, यानि कुछ परिवार अपने बच्चों को traditional games सिखा रहे हैं, खिला रहें हैं। आप भी अपनी Fitness Routine के experience #fitIndia के नाम Social Media पर जरूर share कीजिए। मैं देश के लोगों को एक जरूरी जानकारी भी देना चाहता हूं। इस बार 31 अक्टूबर को सरदार पटेल जी की जयंती के दिन ही दीपावली का पर्व भी है। हम हर साल 31 अक्टूबर को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' पर 'Run for Unity' का आयोजन करते हैं। दीपावली की वजह से इस बार 29 अक्टूबर यानि मंगलवार को 'Run for Unity' का आयोजन किया जाएगा। मेरा आग्रह है, ज्यादा से ज्यादा संख्या में इसमें हिस्सा लीजिए - देश की एकता के मंत्र के साथ ही Fitness के मंत्र को भी हर तरफ फैलाईये।

'मन की बात' में इस बार इतना ही। आप अपने Feedback जरूर भेजते रहें। ये त्योहारों का समय है। 'मन की बात' के श्रोताओं को धनतेरस, दीवाली, छठ पूजा, गुरु नानक जयंती और सभी पर्वों की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आप सभी पूरे उत्साह के साथ त्योहार मनाएं - Vocal for Local का मंत्र याद रखें, कोशिश करें कि त्योहारों के दौरान आपके घर में स्थानीय दुकानदारों से खरीदा गया सामान जरूर आए। ▪

# प्रधानमंत्री जी की नीतियों पर जनता को भरोसा, हर समाज, वर्ग के लोग पार्टी से जुड़े - हितानंद जी

इस वर्ष हुए लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में भाजपा को जिन मतदाताओं ने वोट दिया है, उन्होंने भाजपा की सदस्यता ली। संगठन पर्व में हर समाज, वर्ग के लोग भाजपा से जुड़े। मध्यप्रदेश में युवा और महिला बड़ी संख्या में पार्टी का सदस्य बने।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' के मूल मंत्र पर सर्वसमावेशी और सर्वस्पर्शी कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम की है। भारत के युवाओं में नेतृत्व करने की क्षमता है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने युवा व महिलाएं भाजपा के सदस्य बनें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प के साथ कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी गरीब कल्याण की कई योजनाएं चला रहे हैं, जिससे सामाजिक परिवर्तन आ रहा है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को मजबूती प्रदान करने अधिक से अधिक संख्या में भाजपा के सदस्य बने। ▪

# बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। सालगा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया।

1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की। 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके में "धरती बाबा" के नाम से पुकारा और पूजा जाता था। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है। बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुई थी। उनके द्वारा चलाया जाने वाला सहस्रादवादी आंदोलन ने बिहार और झारखंड में खूब प्रभाव डाला था। केवल 25 वर्ष के जीवन में उन्होंने इतने मुकाम हासिल कर लिए थे कि आज भी भारत की जनता उन्हें याद करती है और भारतीय संसद में एकमात्र आदिवासी नेता बिरसा मुंडा का चित्र टंगा हुआ है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को रांची जिले के उलिहतु गाँव में हुआ था।

मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया। अब वो अपने विद्रोह में इतने उग्र हो गये थे कि आदिवासी जनता उनको भगवान मानने लगी थी और आज भी आदिवासी जनता बिरसा को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से पूजती है। उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगों को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो। उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जता है।

अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था। बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा ''हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमो का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।''

इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। अब बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये। ▪

# प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री
# रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। अत्यंत सुन्दर होने के कारण पेशवा बाजीराव द्वितीय ने उन्हें एक और नाम दे रखा था- "छबीली"। मनुबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपन्त ताम्बे तथा माता का नाम भागीरथी बाई था। चार वर्ष की आयु में ही मनु को माता के स्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। उनके पिता मोरोपन्त को पेशवा बाजीराव द्वितीय ने कानपुर के पास विठूर में बुलवा लिया। यहाँ मनुबाई का पेशवा के पुत्र श्री नानासाहब के साथ घुड़सवारी करना, तलवार तथा धनुष, तीर चलाना सीखने का अवसर मिला। मनुबाई प्रतिभाशाली तो थी ही शीघ्र ही उन्होंने धर्नुविद्या एवं अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी निपुणता प्राप्त कर ली। तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। तब से वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं। सोलह वर्ष की आयु में वे माता बनीं। किन्तु नवजात पुत्र शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। पुत्र शोक में व्याकुल राजा गंगाधर राव भी नवम्बर 1853 में स्वर्गवासी हो गए। तब उन्होंने दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया।

राजा गंगाधर राव की मृत्यु का लाभ लेने के लिए तथा रानी को निर्बल मानकर 16 मार्च 1854 को तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी ने अपनी हड़प-नीति के अर्न्तगत झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने की घोषणा कर दी। लार्ड डलहौजी की हड़प-नीति का रानी ने पुरजोर विरोध किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य को स्पष्ट चेतावनी देते हुए घोषणा की- मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। अंग्रेजों की इस कुटिल नीति का परिणाम झाँसी के अलावा सतारा, नागपुर, उदयपुर, जैतपुर, बामोर, संबलपुर, अवध आदि रियासतों को भी भोगना पड़ा। इस कुटिल नीति के अंर्तगत अंग्रेजों ने राजाओं, नवाबों तथा यहां तक की दिल्ली बादशाह की पेंशन भी, या तो कम कर दी या बन्द ही कर दी और धीरे-धीरे उन रियासतों को येन केन प्रकारेण ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करना प्रारम्भ कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्याटोपे आदि के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि निर्मित हुई। इसी योजना के तहत झाँसी में भी 16 मार्च 1857 से लेकर 5 जून 1857 तक क्रांति की तैयारियां प्रारंभ हुईं। उन्होंने पुरूष सैनिकों के साथ-साथ वीर नारियों की भी एक सेना तैयार की तथा उनको युद्ध करने का पूरा प्रशिक्षण दिया।

अंग्रेजों के साथ युद्ध सुनिश्चित था अतः रानी ने झाँसी के राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए दीवान रघुनाथ सिंह को सेनापति नियुक्त किया। गोस मुहम्मद तोपों के दस्ते के प्रधान बनाए गए। भाऊ बख्शी को उनका सहयोगी बनाया गया। बुरहानुद्दीन और मोती बाई को जासूसी विभाग सौंपा। बारूद बनाने के लिए कुशल व्यक्ति बुलवाए गए। कड़क बिजली, भवानी शंकर जैसी नालदार तोपों को चुस्त-दुरस्त किया गया पर अंग्रेजों के साथ युद्ध करने से पूर्व उन्हें दो युद्ध और लड़ने पड़े। इनमें पहला युद्ध महाराज गंगाधर राव के संबंधी सदाशिव राव से हुआ। उसने ग्वालियर की सहायता से झाँसी पर आक्रमण कर वहां के निकटवर्ती दुर्ग पर अधिकार कर लिया था और अपने को राजा घोषित कर लिया था। रानी ने उसका सामना किया और उसे बन्दी बनाकर झाँसी के किले में रख दिया। दूसरा युद्ध ओरछा राज्य के दीवान नत्थे खान के साथ हुआ। नत्थे खान ने बीस हजार की सेना लेकर झांसी के मऊरानीपुर और बरुआ सागर पर अधिकार कर लिया था। उसने झांसी के किले को चारों ओर से घेरकर तोपों से प्रहार किया। दोनों ओर से भीषण गोलाबारी हुई। अन्त में नत्थे खान प्राण लेकर भागा।

इसके बाद रानी का भीषणतम और अन्तिम युद्ध अंग्रेजों के साथ हुआ। अंग्रेजी सेना के ब्रिगेडियर स्टुमर्ट के सहयोग से, सर ह्यूरोज ने 21 मार्च 1858 को झाँसी को घेर लिया। यह युद्ध बारह दिन तक चला पर इल्हा जू बुन्देला तथा अली बहादुर जैसे देशद्रोहियों ने विश्वासघात किया और किले का ओरछा दरवाजा अंग्रेजों की सेना के लिए खोल दिया। इस युद्ध में बानपुर के राजा मर्दनसिंह तथा बाँदा के नवाब ने रानी की सहायता की। 1 अप्रैल 1858 को कालपी से राव साहब ने तोपखाने के साथ बीस हजार की सेना सहायतार्थ भेजी पर उसका लाभ झाँसी को नहीं मिल सका। अब पराजय निश्चित थी क्योंकि रानी के महल के चारों ओर अंग्रेजों ने भीषण नरसंहार और अग्निकांड शुरू कर दिया था। तब रानी ने अपने सब सहयोगियों को बुलाकर उनसे भविष्य की रणनीति तय करने के लिए परामर्श किया। सबने मिलकर यह तय किया कि वे सब केसरिया झंडा लेकर सूर्योदय के पूर्व ही किले से निकलकर, युद्ध करते हुए मृत्यु पर्यन्त शत्रुओं से जूझेंगे। जीवित रहते हुए अंग्रेजों के हाथ बन्दी नहीं होंगे। महारानी के लिए यह तय किया गया कि वह अपने दल के साथ रात्रि में ही कालपी के लिए प्रस्थान करेंगी।

रात के चौथे पहर में रानी अपने दल के साथ नगर की ओर के भांडेरी फाटक से मारकाट करती हुए निकली और कालपी के लिए प्रस्थान कर गई। झलकारी बाई ने रानी का पैचदार साफा बांधा और अंग्रेजों के सामने समर्पण कर दिया ताकि अंग्रेज युद्ध बन्द कर दें और रानी सुरक्षित रहें ह्यूरोज चालाक था। उसने रानी का पीछा किया। कालपी से रानी ग्वालियर पहुंची। उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया पर 16 जून 1858 को अंग्रेजों ने वहां भी आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध हुआ पर अन्ततः झांसी की सेना को परास्त होना पड़ा। रानी का घोड़ा उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए भागा पर एक बरसाती नाले के सामने आ जाने के कारण रानी को रूकना पड़ा। घोड़ा मारा गया। रानी की पसलियों में गोली लगी। एक गोरे की तलवार का भरपूर वार उनके माथे और कन्धे को चीर गया। रानी ने आदेश दिया कि उनकी मृत देह अंग्रेजों के हाथ न पड़ने पाए और साधु गंगादास के हाथ से गंगाजल पीकर देह का त्याग किया। उनकी मृत देह को घास की चिता पर रखकर अग्नि संस्कार किया गया। उनके इस बलिदान पर ह्यूरोज ने कहा- 'समस्त विश्व में झाँसी की रानी सर्वाधिक वीर तथा कुशल योद्धा थीं। मखमली दस्तानों के भीतर उनकी उँगलियां फौलादी थीं। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री ने देश के लिए बलिदान दिया। ▪

# लाला लाजपत राय, जिनका बलिदान, ब्रिटिश शासक के ताबूत की कील बना

लुधियाना जिले में जागरांव एक कस्बा है। लाला लाजपतराय के दादा वहां एक दुकानदार थे। पिता जी श्री राधाकृष्ण जी एक विद्यालय में अध्यापक थे। वह उर्दू के लेखक और स्वामी दयानंद जी के भक्त थे। लाला लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 को अपने ननिहाल पंजाब में दुड्डिके गांव में हुआ था। लाला जी के पिता अध्यापक थे, आर्य समाज से जुड़े थे, अत्यन्त समाज सेवी थे। उन्होंने अपने बालक की शिक्षा एवं संस्कार की योजना भी इस प्रकार की जिससे बड़ा होकर वह भी समाज सेवा में लगे। पढ़ाई पूरी करने के पश्चात लाला लाजपतराय जी ने हिसार में वकालत प्रारंभ की। वह बुद्धि के तेज एवं बेधड़क वक्ता थे। शीघ्र ही वह एक सफल वकील के रूप में स्थापित हो गये। अच्छा धन कमाने लगे। परन्तु अपनी कमाई में से अच्छी राशि वह समाज सेवा में ही खर्च करते थे। हिसार में आर्य समाज की शाखा स्थापित की। हिसार में एक संस्कृत विद्यालय एवं भिवानी में एक अनाथालय की स्थापना की। वह म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य चुने गये तथा तीन वर्ष तक बिना वेतन के मंत्री रहे। लाला जी ने कांगड़ा (आजकल हिमाचल प्रदेश) में अछूतोद्धार का बहुत काम किया। पाठशालाएं खोलीं, आर्यसमाज एवं गुरूकुलों की स्थापना की जहां बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती थी। लाला जी चाहते थे कि हमारे बच्चे अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करें ताकि उनमें देश भक्ति का संस्कार बहुत दृढ़ हो सके। फलस्वरूप उन्होंने लाला हंसराज के सहयोग से लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की। बाद में जालन्धर, होशियारपुर में भी ऐसे कालेजों की स्थापना की। इन कालेजों ने अपने देश की स्वतंत्रता के आन्दोलन में अच्छी भूमिका निभाई।

## धर्मान्तरण के विरूद्ध लाला जी का सिंहनाद-

बंगाल, मध्यप्रदेश तथा राजपूताने में भयंकर अकाल पड़ा। लाला जी ने इन क्षेत्रों के अकाल पीड़ितों की सहायता का कार्य अपने जिम्मे लिया। तथा इन इलाकों में बहुत अधिक अन्न एवं दूसरी सहायता की व्यवस्था की। इन क्षेत्रों में ईसाई पादरी भी सेवा के काम में लगे हुए थे परन्तु वे वहां पर सैकड़ों अनाथ बच्चों को ईसाई बना

**लाला जी ने कांगड़ा (आजकल हिमाचल प्रदेश) में अछूतोद्धार का बहुत काम किया। पाठशालाएं खोलीं, आर्यसमाज एवं गुरूकुलों की स्थापना की जहां बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती थी।**

लाला जी चाहते थे कि हमारे बच्चे अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करें ताकि उनमें देश भक्ति का संस्कार बहुत दृढ़ हो सके।

रहे थे। लाला जी ने इसका खूब डटकर विरोध किया। लाला लाजपत राय बहुत ही निर्भीक एवं क्रान्तिकारी विचारों के थे। उन्होंने उर्दू दैनिक वन्देमातरम में लिखा- ''मेरा मजहब हक परस्ती, मेरी मिल्लत कौमपरस्ती और मेरी इबादत खल्क परस्ती है, मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है मेरी सम्पत्ति मेरी कलम है, मेरा मन्दिर मेरा दिल है तथा मेरी उमंगें सदा जवान हैं'' वह बहुत ही निडर, साहसिक एवं सच्चे थे।

लाला जी की देश भक्ति पूर्ण गतिविधियों के कारण वे अंग्रेज सरकार की आंख की किरकिरी बन गये। हिसार के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें धोखे से गिरफ्तार करके माण्डले जेल भेज दिया। वहां उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी। जिनमें से प्रमुख हैं- महान अशोक, श्री कृष्ण और उनकी शिक्षा, छत्रपति शिवाजी, इटली के देशभक्त मेजिनी एवं गैरीबाल्डी की जीवनियां। वह अंग्रेजी के अच्छे विद्वान थे परन्तु उन्होंने सभी पुस्तकें उर्दू में ही लिखीं। माण्डले जेल से छूटने के बाद उन्होंने वकालत छोड़ दी तथा पूरा समय देश सेवा के काम में लगाने लगे। 1914 में जब महायुद्ध शुरू हुआ उस समय लालाजी जापान गये हुए थे। भारत सरकार ने उन्हें भारत आने की आज्ञा नहीं दी। वे वहां से अमेरिका चले गये तथा वहां उन्होंने अमेरिका के अखबारों में लेख लिखे। देश की आजादी के लिए प्रचार किया। वहां उनकी पुस्तक "यंग इण्डिया" बहुत प्रसिद्ध हुई।

कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। थोड़े दिन बाद ही उन्हें गिरफ्तार कर पुनः जेल भेज दिया गया। जेल में उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। बाहर आकर वे पुनः स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गये। उन्होंने लाहौर में नेशनल कालेज और तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स की स्थापना की।

1928 में साइमन कमीशन का कांग्रेस ने बायकॉट किया। देशभर में इसके विरूद्ध प्रदर्शन हुए। जब यह कमीशन लाहौर पहुँचा तो लाला जी के नेतृत्व में इसका बहुत जबरदस्त विरोध हुआ। जब भीड़ बेकाबू हो गयी तो अंग्रेजों की पुलिस ने लाठियां चलानी शुरू कर दी। लाला जी सबसे आगे थे उन पर कई लाठियां पड़ी। उस समय उन्होंने गर्जना की- "मेरी छाती पर पड़ने वाली एक-एक लाठी भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत की एक-एक कील बनेगी"।

लाठियों की मार से उनकी छाती में ऐसी चोटें आई कि उसके फलस्वरूप 17 नवम्बर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई। भारत के इस वीर पुरूष की वीरगति पर सारे देश में शोक की लहर दौड़ गई परन्तु इसने क्रांतिकारियों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में और तीव्रता ला दी। धन्य हैं ऐसे महापुरूष जिन्होंने इस माँ भारती की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन होम कर दिया। लाल-बाल-पाल की क्रान्तिकारी -त्रयी में इन्हें सदा स्मरण किया जाता रहेगा। लाला लाजपत राय पंजाब के थे। बालगंगाधर तिलक महाराष्ट्र से तथा विपिन चन्द्र पाल बंगाल से थे। ये तीनों ही कांग्रेस में गर्मदल के प्रमुख नेता थे। पंजाब केसरी अर्थात पंजाब के शेर के विशेषण से इन्हें सदा स्मरण किया जाता रहेगा। ▪

# सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

**महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया।**

सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरितियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानो के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवनयापन के लिए बागबगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेदभाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीकाटिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जातिभेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथो पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताएँ जो संस्कार बच्चो पर डालती हैं, उसी में उन बच्चो के भविष्य के बीज होते है। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे। उस समय जातपात, ऊँच-नीच की दीवारे बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चो को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारम्भ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दवाब में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायें कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे है। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे है।

महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुम्हे क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुहारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए। महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनो से अपने सिद्धांतो व कार्यक्रमो के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआछूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नवम्बर सन 1890 को उनका देहावसान हो गया। ▪

# कांग्रेस बनाम जनसंघ

**आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।**

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गलगल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियों केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न वस्त्र अलय हो रहे हैं। अतः जनमन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्नभिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई मे कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन

की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलें की हैं। पहली, बिना किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थ सिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरण स्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंता युक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदलाबदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है।

हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निर्वासितों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा।

विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ▪

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने संगठन पर्व के तहत 'आई एम बीजेपी फ्यूचर फोर्स' अभियान को लांच किया।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने प्रोफेशनल्स एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पार्टी की सदस्यता दिलाई।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने हरियाणा में ऐतिहासिक विजय और जम्मू-कश्मीर में अच्छे प्रदर्शन पर जश्न मनाया।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव दशहरा उत्सव में शामिल हुए।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दशहरे पर शस्त्र-पूजन किया।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर माल्यार्पण किया।

- संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने आमजनों को पार्टी की सदस्यता दिलाई।

भारत जिन समस्याओं का सामना कर रहा है उसका मूल कारण इसकी 'राष्ट्रीय पहचान' की उपेक्षा है.

**दीनदयाल उपाध्याय**